

Not to be Issued
Bharatiya Vidya Bhavan's Granthagar

Bharatiya Vidya Bhavan's Granthagar

Call No Sa 6V/KES/JWA/20005

Title Vaidya Ratna

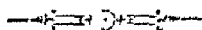
Author/Kesavananda Bhatta

[illegible]

॥ श्रीः ॥

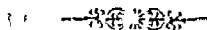
❀ वैद्यरत्न ❀

गोस्वामिश्रीनेशनन्दभट्टविरचित ।



विद्यावारेधि पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत—

भाषाटीकासमेत ।



जिसकी

११ १३ ११
लेमराज श्रीकृष्णदासने

बंवाई

मेतपारी • पी गडी गम्वाटा टेन,

निज “श्रीवेङ्कटेश्वर” स्टीम-मुद्रणपन्थालयमें

मुद्रितकर प्रकाशितकिया ।

भूमिका ।



इस संसारमें शरीरका आरोग्य रहना भी धर्मअर्थका साधन कहा है, यतः—“धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरं साधनं स्मृतम्” कारण कि, शरीरमें व्याधिके होनेसे मनुष्य किसी कार्यके करनेको समर्थ नहीं रहता है, इसीसे शरीरको आरोग्य रखना परम पुरुषार्थ है, लोकमें प्रसिद्ध है कि, ‘एक तन्दुरुस्ती हजार न्यामत’ इस शरीरको नीरोग रखनेकेही निमित्त भगवान् धन्वन्तरिने प्रगट होकर आयुर्वेदका प्रचार किया उनके ग्रंथको अवलम्बन कर ऋषिमुनियोंने अनेक ग्रंथ रचे जिनकी चिकित्सासे आरोग्य हो प्राणी सुखसे कालयापन करने लगे । आयुर्वेदके प्राचीन ग्रंथोंमें चरक, सुश्रुत और वाग्भट हैं । यह ग्रंथ परिश्रमसाध्य और दीर्घकालमें पाठमें आतेहैं इसकारण ऋषि मुनि और महात्माओंने सुखसे बोध होनेके निमित्त सबके संक्षेपसे सार लेकर छोटे छोटे ग्रंथ निर्माण किये जिनके पठन पाठन कर थोड़ेही कालमें मनुष्य सुबोध हो सक्ते हैं इसप्रकारके ग्रंथ संख्यामें थोड़े नहीं हैं परन्तु कालक्रमसे ऐसा समय आनकर प्राप्त हुआ कि जिसके पास जो पुस्तक थी उसने अपने जीते जी उस ग्रंथका प्रकाश न किया, बहुत क्या ? दूसरोंको दर्शनतक भी न कराया । उनके उपरान्त वह पुस्तक या तो पानीमें गल गई या कहीं पसारीकी दुकानकी पुडिया बाँधनेके काममें आई इस प्रकारसे अच्छी २ विद्याओंकी सहस्रों पुस्तकें नष्ट होगई हैं जिनका नाममात्र ग्रन्थान्तरोंमें पाया जाता है, और रहीसही और भी लोप होजातीं परन्तु जबसे यन्त्रालयका प्रचार हुआ तबसे जो पुस्तक जहां सुनी-गई यत्नपूर्वक व्ययद्वारा लाकर यन्त्राधीशोंने ग्रंथोंका छापना आरंभ किया और लोप होतेहुए ग्रंथोंको वचाया, अभी थोड़े दिनकी बात है कि, वैद्यकके तीनचाही ग्रन्थ लब्ध होतेये परन्तु यन्त्राधिप-

अथ वद्यरत्नविषयानुक्रमणिका



विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
प्रथम प्रकाश १.		द्वितीय प्रकाश २.	
नाडीपरीक्षा	१	अतिसार नि० चि०... ..	३८
जिह्वापरीक्षा	७	संग्रहणी नि० चि०... ..	४१
दृक्परीक्षा	८	अशनि० चि०	४३
असाध्यव्याधिनिर्णयण ...	१०	अजीर्ण नि० चि०	४६
ज्वराधिकार	११	विषूचिकानि० चि०... ..	५२
वातज्वरपित्तज्वरः	११	क्रिमिनि० चि०	५३
श्लेष्मज्वरचिकित्सा... ..	१२	पाण्डुरोगनि० चि०... ..	५४
वातपित्तज्वरचि०	११	रक्तपित्तानिदान चि० ...	५५
वातश्लेष्मज्वरचि०... ..	१३	कासनि० चि०	५७
पित्तश्लेष्मज्वरचि०	११	श्वसननि० चि०	५९
सन्निपातज्वरनिदान	११	द्विचकीनि० चि०	६१
ज्वरमंथनविधि	१५	क्षयनि० चि०	६२
श्वैथियातिजारिज्वरचि०... ..	२४	कुसुदेश्वररस... ..	६५
चूर्ण	२८	तृतीय प्रकाश ३.	
ज्वरमंथन	११	अरुचिनि० चि०	६७
वरमेरस	२९	दृष्णानि० चि०	११
सन्निपातचि०... ..	३०	छर्दिनि० चि०	६८
ज्वरमंथनवलेद... ..	३२	मुच्छानि० चि०	६९
माण्डिल	११	दाहनि० चि०... ..	७०
नस्य	३३	तन्मादनि० चि०	७१
सन्निपातरस	३४	भण्डमारनि० चि०	७२
ज्वरके दशदपद्रय	३५	मातृगणनि० चि०	७३

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
गुगल ७६		चिसर्पनि० चि० ११२	
तेल ७७		स्नायुनि० चि० ११३	
रस ८०		मसुरिकानि० चि० ११४	
आमवातरक्तनि० चि० "		अम्लपित्तनि० चि० ११५	
आमघातनि० चि० ८२		उदरनि० चि० ११७	
शूलनि० चि० ८४		कुष्ठनि० चि० ११८	
परिणामशूलनि० चि० "		वच्छिन्नसिन्धुपामादृष्टिस्थि-	
गुल्म नि० चि० ८६		मांदिनि० चि० १२०	
हृद्रोगनि० चि० ८९		चतुर्थ प्रकाश ४.	
उदररोगनि० चि० "		शिरोरोगनि० चि० १२३	
प्लीहोदरनि० चि० ९०		नेत्ररोगनि० चि० १२४	
मूत्रकृच्छ्रनि० चि० ९३		घण्टरोगनि० चि० १२७	
अमरीनि० चि० ९४		नासारोगनि० चि० १२८	
प्रमेहनि० चि० ९६		मुण्डरोगनि० चि० १२९	
मेदनि० चि० १००		खीररोगनि० चि० १३१	
श्वपथुनि० चि० १०१		गर्भस्थितिचि० १३२	
सुप्तिवृद्धिनि० चि० १०२		गर्भसंरक्षण १३३	
ममनि० चि० १०३		मुगमस्योपचार १३४	
गलगदनि० चि० १०४		अपघ्नपाटन १३५	
प्रन्थिनि० चि० "		सुतिवारोगनि० चि० "	
गदमालानि० चि० "		क्षीरपिण्डं १३७	
क्षीपदनि० चि० १०५		प्रदरनि० चि० "	
विद्रधिनि० चि० "		मूत्रवृद्धीकरण १४०	
घणनि० चि० १०६		घोनिखंकोर्यीकरण "	
सघोघ्ननि० चि० १०७		घोनिनिर्घोमीकरण "	
विदेशसघोघ्ननि० चि० १०८		जाट्वरोगनि० चि० "	
अमिदग्धघ्ननि० चि० १०९		प्रदग्धबागेपचारक्रम १४४	
भगन्दरनि० चि० "		धूसचिधि १४५	
उपदेशनि० चि० ११०			

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
पंचम प्रकाश ५.		सप्तम प्रकाश ७	
वाजीकरण	१४८	पंचलवण	१६३
कामदेवचूर्ण	"	क्षार	"
पेठापाक	१५१	युक्तायुक्तकथन	"
अश्विनीकुमारयोग	१५२	सप्तम प्रकाश ७	
पिप्पलीखण्ड	१५३	काषविधि	१७८
नोशदार	१५५	अवलेहिका	"
लक्ष्मीविलासरस	१५६	चूर्णविधि	"
चन्द्रोदयरस	१५९	मण्डविधि	१७९
सर्पदंश चि०	१६०	पूष	१८०
वृश्चिकदंशचि०	१६१	धातुशोधनमारण	"
वरदीदंशचि०	१६२	सुवर्णशो०	"
शतपदीदंश चि०	"	रजतशो०	१८१
कुचेके काटेकीचि०	"	ताम्रशो०	१८२
लताविष चि०	१६३	पीतलकांसीशो०	"
भक्षितविषचि०	"	छोदशो०	"
क्षुद्ररोग	१६४	किट्टशो०	"
मुहसिचि०	"	बंगशो०	१८३
कक्षादोषचि०	१६५	जस्तशो०	"
पाददारीचि०	"	सीसाशो०	"
गुदभ्रंश चि०	"	वपधातुशो०	१८४
षष्ठ प्रकाश ६.		अभ्रकशो०	"
त्रिफलाविधि	१६६	सोनामाखीशो०	१८५
हरीतकीयोग	"	तारमाक्षिकशो०	"
विकट्ट	१६७	हरितालशोधन	१८६
यदकडु	"	मनशिलशो०	१८७
शुंठीयोग	१६८	खर्परशो०	"
धातुजात	"	नीलायोवाशो०	"
पंचक्षीरीयुक्त	"	नीलाजनशो०	"
दशमूली	१६९	पारदशो०	१८८
		मंधकशो०	"

विषय.	पृष्ठार	विषय	पृष्ठार
सिन्दूरशो० १८९		अफीमशो० १९३	
समुद्रफेनशो० "		धतूराशो० "	
हिंगुलशोधन... .. "		कुचलाशो० "	
सुहागाशो० "		जमालगोटाशो० "	
शिलाजित्तशो० "		घमनविधि १९३	
विषशो० १९१		वमनमे अनधिकारी... .. १९४	
उपविषशो० "		विरेचनविधि... .. १९५	
कलिपारीशो० "		मानपरिभाषा... .. १९८	
चौटलीशो० "		अजीर्णम्बण्ड २०२	

इति धे० २० विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।



॥ श्रीः ॥

❀ अथ वैद्यरत्न । ❀

भाषाटीकासमेत ।



योगेश्वरं शिवं न त्वापार्वतीवल्लभं हरम् ।

सज्जनानां विनोदाय वैद्यरत्नं करोम्यहम् ॥ १ ॥

नाडीपरीक्षा ।

रोगाक्रान्तशरीरस्य स्थानान्यष्टौ परीक्षयेत् ।

नाडीं मूत्रं मलं जिह्वां शब्दस्पर्शदृग्नाकृतिम् ॥ १ ॥

अर्थ-वैद्य रोगी मनुष्यों के आठ स्थानों की परीक्षा करे. नाडीपरीक्षा, मूत्रपरीक्षा, मलपरीक्षा, जिह्वापरीक्षा, शब्दपरीक्षा, स्पर्शपरीक्षा, नेत्रपरीक्षा और आकृतिकी परीक्षा करे ॥ १ ॥

नाडीज्ञानं विना वैद्यो न लोके पूज्यतां व्रजेत् ।

अतश्चातिप्रयत्नेन शिक्षयेन्मतिमान्नरः ॥ २ ॥

अर्थ-नाडीज्ञानके विना वैद्य लोकमें पूजित नहीं होता है इस कारण बुद्धिमान् प्रयत्नसे नाडीशिक्षा करे ॥ २ ॥

त्यक्तमूत्रपुरीषस्य सुखासीनस्य रोगिणः ।

अन्तर्जानुकरस्यापि सम्यङ् नाडी प्रवुध्यते ॥ ३ ॥

अर्थ-मूत्रपुरीषत्यागे हुए, सुखसे बैठे हुए, भीतर घुटनों के हाथ किये, रोगी की नाडी सुखसे जानी जाती है ॥ ३ ॥

सव्येन रोगधृति कूर्परभागभाजा ।

पीडयाथ दक्षिणकरांगुलिकात्रयेण ॥

अंगुष्ठमूलमपिपश्चिमभागमध्ये ।

नाडीप्रभञ्जनगतिंसततंपरीक्षेत ॥ ४ ॥

अर्थ-जो पहुँचेकी नाडी रोगकी धारण करनेवाली है उसको दहनी हाथकी तीन अंगालियोंसे दबाकर रोगीके हाथकी कोहनीको दूसरे हाथसे अच्छीतरह पकड़कर अंगुष्ठकी जड़के नीचे वातगतिनाडीकी भलीप्रकार परीक्षा करे आशय यह कि दहने हाथसे कोहनी पकड़ फिर बायें हाथको हटाय नाडी देखे ॥ ४ ॥

स्त्रीणांभिपग्ग्वामहस्तेवामेपादेचयवतः ।

शास्त्रेणसंप्रदायेनतथास्वानुभवेनच ॥

परीक्षेद्रत्नवच्चासावभ्यासादेवजायते ॥ ५ ॥

अर्थ-वैद्यको उचित है कि स्त्रियोंके घामहाथ और बायें पैरमें शास्त्रके अनुसार और अपने अनुभवद्वारा रत्नकी समान नाडीपरीक्षा को यह परीक्षा अभ्यास करनेसे हो सकती है ॥ ५ ॥

कस्स्यांगुष्ठमूलेयाधमनीजीवमाक्षिणी ।

तत्रेष्टयासुखंदुःखंज्ञेयंकायस्यपण्डितैः ॥ ६ ॥

अर्थ-हाथके अंगुष्ठकी जड़में जीवमाक्षिणी धमनी (नाडी) है उसकी चेष्टासे विद्वान्को शरीरका सुख दुःख जानना चाहिये ॥ ६ ॥

अंगुलित्रिनयःस्पृष्टाक्रमादोषत्रयोद्भवैः ।

मन्दांमध्यगतांतीक्ष्णांत्रिभिर्दोषैस्तुल्ययेत् ७ ॥

अर्थ-नाडीकी तीन अंगुलियोंके स्पर्शसे तीनों दोष-द्वारा मन्द मध्य और तीक्ष्ण गति जाने अर्थात् पहली अंगु-

लीमें मध्यस्पर्श होनेसे वातकी, बीचकी अंगुलीमें तीक्ष्ण स्पर्शसे पित्तकी, अन्तकी अंगुलीमें मन्दस्पर्श होनेसे कफकी माडी जानी ॥ ७ ॥

पित्तनाडीभवेदुष्णाकफनाडीतुशीतला ।

वातनाडीभवेन्मध्याचैवंस्पर्शविनिर्णयः ॥ ८ ॥

अर्थ—पित्तकी नाडी स्पर्शकरनेसे गरम, कफकी शीतल, वातकी नाडी का स्पर्श मध्यम होता है यह स्पर्शका निर्णय है ॥ ८ ॥

वाताद्वक्त्रगतानाडीचपलापित्तवाहिनी ।

स्थिराश्लेष्मवतीज्ञेयामिश्रितेमिश्रिताभवेत् ॥ ९ ॥

अर्थ—वात तिरछी बहती है इसकारण उसकी नाडी टेढ़ी चलती है अग्नि चंचल होनेसे ऊपरको चलनी है इस कारण पित्तकी नाडी ऊपर चलती है तथा चंचल होती है जल नीचेको जाता है प्रबल नहीं है इसकारण कफकी नाडी स्थिर है और दोषोंके मिलनेसे नाडी मिश्रित चलती है ॥ ९ ॥

सर्पजलीकादिगतिंवदन्तिविबुधाःप्रभञ्जनेनाडीम् ।

पित्तेचकाकंलावकभेकादिगतिंविदुःसुधियः ॥ १० ॥

अर्थ—सर्प जोंककी गतिसे वातकी तथा विच्छूकी गतिसे भी वातकी नाडी जानी, पित्तकी नाडी कोण, लवा और मेंडककी गतिसे चलती है ॥ १० ॥

राजहंसमयूराणांपारावतकपोतयोः ।

कुक्कुटस्यगतिंधत्तेधमनीकफसंगिनी ॥ ११ ॥

अर्थ—राजहंस, मोर, पागावत, कयूर और कुक्कुटकी गतिसे यदि नाडी चले तो कफकं विकारवाली जाननी ॥ ११ ॥

मुहुःसर्पगतिनाडीमुहुर्भेकगतिंतथा ।

वातपित्तसमुद्भूतांतां वदन्ति विचक्षणाः ॥ १२ ॥

अर्थ—यदि नाडी बारवार सर्पगति और बारंवार मेंढ-
ककी गतिसे चले तो बुद्धिमानोंने उसको वातपित्तसे उ-
त्पन्न हुई नाडी कहा है ॥ १२ ॥

सर्पहंसगतिं तद्वद्वातश्लेष्मगतां वदेत् ।

हरिहंसगतिं पित्ते पित्तश्लेष्मान्विताधरा ॥ १३ ॥

अर्थ—सर्प, हंसकी गतिसे चलनेवाली नाडी वात और
कफकी कहनी और हंसकी गतिसे चले तो पित्त और
कफकी जाननी ॥ १३ ॥

• काष्ठकुट्टीयथाकाष्ठं कुट्टते चातिवेगतः ।

स्थित्वा स्थित्वा तथा नाडी सन्निपाते भवेद्भुवम् ॥ १४ ॥

अर्थ—जिस प्रकार काठका कूटनेवाला काष्ठकुट्टनाम
पक्षी बड़े वेगसे काठको कूटता है इस प्रकार ठहर ठहरकर
नाडी भयंकर सन्निपातमें चलती है ॥ १४ ॥

वाताधिक्ये भवेन्नाडी प्रव्यक्ता तर्जनीतले ।

पित्ते व्यक्ता मध्यमायां तृतीयांगुलिगर्भात् ॥ १५ ॥

अर्थ—वातकी अधिकतामें नाडी तर्जनी अंगुलीके नीचे
चलती है, पित्तमें मध्यमा अंगुलीके नीचे और कफमें ती-
सरी अंगुलीके नीचे चलती है. तीसरी अंगुली धरकर नाडी
देखी जाती है उससे यह क्रम जाना ॥ १५ ॥

तर्जनी मध्यमा मध्ये वातपित्ते विके स्फुटा ।

अनामिकायां तर्जन्यां व्यक्ता वातके भवेत् ॥ १६ ॥

अर्थ—तर्जनी और मध्यमाके नीचे चलनेसे वातपि-

तकी अधिकता कहनी; अनामिका और तर्जनीके मध्यमें वात और कफकी नाडी जाती ॥ १६ ॥

मध्यमानामिकामध्येऽङ्गुलिपित्तकफेधिके ।

अङ्गुलित्रितयेपिस्यात्प्रव्यक्तासन्निपातिनः ॥ १७ ॥

अर्थ-मध्यमा और अनामिका अङ्गुलीके मध्यमें पित्त और कफकी नाडी जाती तीसरी अङ्गुलीके मध्यमें सन्निपातकी नाडी जाती ॥ १७ ॥

वाताद्वक्रगतिर्नाडीपित्तादुत्प्लुत्यगामिनी ।

कफान्मन्दगतिर्ज्ञेयासन्निपातादतिद्रुता ॥ १८ ॥

अर्थ-वातकी अधिकतामें नाडी वक्रगतिसे चलती है, पित्तकी अधिकतामें नाडी कूदतीहुई चलती है, कफसे मन्दगति और सन्निपातमें बड़ी शीघ्रतासे चलती है ॥ १८ ॥

वक्रमुत्प्लुत्यचलतिधमनीवातपित्ततः ।

बहेद्वक्रं च मंदं च वातश्छेष्माधिकत्वतः ॥ १९ ॥

अर्थ-वात और पित्तकी अधिकतासे टेढ़ी और कूदती हुई चलती है वात और कफकी अधिकतासे टेढ़ी और मन्दगतिसे चलती है ॥ १९ ॥

उत्प्लुत्यमंदं चलतिनाडीपित्तकफेधिके ।

स्पन्दतेचैकमानेन त्रिंशद्भारं यदाधरा ॥ २० ॥

अर्थ-पित्तकी और कफकी अधिकतामें नाडी कूदती हुई मन्द २ चलती है जब कि नाडी एकही मानसे बराबर तीसवार चले ॥ २० ॥

स्वस्थानेन तदा नूनं रोगी जीवति नान्यथा ।

स्थित्वा स्थित्वा वहति यासां ज्ञेया प्राणघातिनी २१ ॥

अर्थ-और अपने स्थानपर स्थितरहे तो रोगीका जीवन जाना, अन्यथा नहीं और जो नाड़ी रुक रुक कर चले वह प्राणघातिनी जानी ॥ २१ ॥

जिह्वाजिह्वाकुटिलकुटिलंव्याकुलंव्याकुलंवा ।

स्थित्वास्थित्वावहतिधमनीयातिनाशंचसूक्ष्मा ॥

नित्यंकंठेस्फुरतिपुनरप्यंगुलीनांस्पृशेद्वा ।

भावैरेवंबहुविधितरैःसन्निपातादसाध्या ॥ २२ ॥

अर्थ-ढेढी ढेढी कुटिल धारंवार व्याकुलतासे युक्त ठहर ठहरकर चले फिर सूक्ष्म रूपसे लय होजाय नित्य कंठमें स्फुरायमाणहो फिर कुछ कालमें अंगुलीको स्पर्शकरे इसप्रकारके अनेक भावोंसे चलनेवाली नाड़ी सन्निपातकी जानी यह असाध्य है ॥ २२ ॥

पूर्वपित्तगतिप्रभंजनगतिश्छेप्माणमाविभ्रती ।

स्वस्थानाद्भ्रमणमुद्विदधतीचक्राधिरूढेवया ॥

भीमत्वंदधतीकलापिगतिकामूक्ष्मत्वमातन्वती ।

निःसाध्यांधमनीवदन्तिमुनयोनाडीगतिज्ञानिनः २३

अर्थ-पहले पित्तकी गति फिर पयनकी गति फिर कफकी गति को धारण करे अपने स्थानसे धारंवार भ्रमती हुई चक्र की समान भ्रमंकरपना धारण करती हुई मोरकी चाल चलती हुई कमी अत्यन्त सूक्ष्म होती हुई नाड़ीके जानवाले वैद्य मुनि असाध्य कहते हैं ॥ २३ ॥

गंभीरायामवेन्नाडीसाभवेन्मांसवाहिनी ।

ज्वरवेगेनधमनीसोष्णाकोपवतीभवेत् ॥ २४ ॥

अर्थ-गंभीरा नाडी मांसवाहिनी जाती और ज्वरके वेगसे नाडी उष्णता लिये कोपवाली होती है ॥ २४ ॥

कामक्रोधाद्वेगवहाक्षीणाचिन्ताभयप्लुता ।

मन्दाग्नेः क्षीणधातोश्चनाडीमन्दतराभवेत् ॥ २५ ॥

अर्थ-कामक्रोधसे वेगवाली, चिन्तासे क्षीण और भयसे कूदतीहुई चलनी है, मन्दाग्नि और क्षीण धातुवालेकी नाडी अत्यन्त मन्द चलती है ॥ २५ ॥

असृक्पूर्णाभवेत्कोष्णागुर्वीसामागरीयसी ।

लघ्वीवहतिदीप्ताग्नेस्तथावेगवतीमता ॥ २६ ॥

अर्थ-रुधिरसे पूर्ण कुल गरम होती है आमयुक्त होनेसे भारी चलती है प्रदीप्त अग्नि होनेसे हलकी और वेगवाली होती है ॥ २६ ॥

चपलाक्षुधितस्यापितृप्तस्यवहतिस्थिरा ।

शीघ्रानाडीमलापातेमध्याह्नेऽग्निसमोज्वरः ॥ २७ ॥

अर्थ-भूखेकी चपल और तृप्तहुएकी स्थिर चलती है मलपातमें शीघ्रगतिसे मध्याह्नमें जिसको अग्निकी समान प्रबल ज्वरहो ॥ २७ ॥

दिनैकंजीवितंतस्यद्वितीयेप्रियतेध्रुवम् ।

मरणेऽमरुकाराभवेदेकदिनेनच ॥ २८ ॥

अर्थ-यह एक दिन जीता है, दूसरे दिन अवश्य मरजाता है. डमरुके आकारवाली नाडी होनेसे प्राणीका दिनमें मरण होजाता है ॥ २८ ॥

अथ जिह्वापरीक्षा ।

पीताजिह्वाखरस्पर्शास्फुटितामारुताधिके ।

रक्ताश्यामाभवेत्पित्तकफेऽग्रातिपिच्छिला ॥ २९ ॥

अर्थ-जिह्वापरीक्षा कहते हैं । पीली खरखरे स्पर्शवाली और स्फुटित जीभ वातकी अधिकतामें होती है लाल काले रंगकी पित्तमें और कफके विकारमें श्वेत और चिकनी जीभ होती है ॥ २९ ॥

कृष्णासकंटांशुष्कासन्निपाताधिकेतुसा ।

मिश्रितेमिश्रिताज्ञेयारिष्टेलक्षणवर्जिता ॥ ३० ॥

अर्थ-सन्निपातकी अधिकतामें काली कांटोंसे युक्त और शुष्क होती है मिश्रितदोषोंमें मिश्रित लक्षणवाली होती है अरिष्टमें लक्षणहीन होती है ॥ ३० ॥

अथ दृक्परीक्षा ।

रूक्षाधूम्रातथारौद्राचलाचांतर्ज्वलत्यपि ।

दृष्टिर्यदातदातस्यवातरोगविदोविदुः ॥ ३१ ॥

अर्थ-जिस समय दृष्टि रूखी धुमेली रौद्र चलायमान अन्तरसे जलती हुई हो तो जाननेवालोंने इसको वातरोग कहा है ॥ ३१ ॥

दीपद्वेपिचसंतप्तपीतंपित्तेनलोचनम् ।

जलाद्रज्योतिपाहीनंस्निग्धंमन्दंकफेनतत् ॥ ३२ ॥

अर्थ-पित्तके विकारमें दीपक अच्छा नहीं लगता, संतापयुक्त पीले नेत्र होजाते हैं और कफकी अधिकतामें जलमे गीले ज्योतिसे हीन स्निग्ध और मन्द होने हैं ॥ ३२ ॥

द्वन्द्वदोषेभवेन्मिश्रवर्णतृणविलोचनम् ।

श्यामवर्णश्चनिर्मुग्धतन्द्रामोहसमन्वितम् ॥ ३३ ॥

अर्थ-द्वन्द्वदोषमें नेत्रोंका रंगभी मिलाहोता है, श्याम-
वर्ण टेढ़े तन्द्रा और मोहसे युक्त ॥ ३३ ॥

रौद्रं च रक्तवर्णं च भवेच्चक्षुस्त्रिदोषतः ।

एकं च क्षुर्यदाभीमं द्वितीयं मीलितं भवेत् ॥ ३४ ॥

अर्थ-रौद्र लालवर्णके नेत्र त्रिदोषसे होते हैं जब एक
नेत्र भयंकर और दूसरा मुंदाहुआ हो मिचा रहै ॥ ३४ ॥

त्रिभिर्दिनैस्तथारोगी स्यात्तियममन्दि रम् ।

ज्योतिर्विहीनं सहस्रारोगिणो यस्य लोचनम् ॥ ३५ ॥

अर्थ-ऐसा रोगी तीन दिनमें मरजाता है, जिस रोगी
के नेत्र सहसा प्रकाशहीन होजाय ॥ ३५ ॥

ईषत्कृष्णं सनियतं प्रयात्तियमशासनम् ।

सरक्तं कृष्णवर्णं च रौद्रं च प्रेक्षते यदा ॥ ३६ ॥

अर्थ-कुछएक श्यामवर्ण हो वह अवश्य मरजाताहै जब
रक्तवर्ण कृष्णवर्ण और रौद्र दृष्ट होने लगे अर्थात् लाल,
काला और रौद्रवर्णके रूप वस्तुओंका देखने लगे ॥ ३६ ॥

एतैर्लिङ्गैर्विजानीयान्मृत्युमेव न संशयः ।

एकदृष्टिरचैतन्यो भ्रमस्फुरिततारकः ॥ ३७ ॥

अर्थ-तो इन चिह्नोंसे रोगीकी मृत्यु जाननी इसमें
संदेह नहीं जिसकी एक दृष्टि होजाय अर्थात् टकटकी
पाँधकर देखनेलगे, भ्रमहो, नेत्रकी तारका स्फुरायमान
होजाय (अचेतनता प्राप्त होजाय) ॥ ३७ ॥

एकरात्रेण नियतं परलोकपदं व्रजेत् ॥ ३८ ॥

अर्थ-तो ऐसा रोगी एकही रात्रिमें मरजाता है ॥ ३८ ॥

अथ साध्यव्याधिनिरूपणम् ।

निद्रानाशो निशायां प्रभवति च तथा कंठकूपे बलासो ।
 देहे दाहोति सूक्ष्मो लघुतरधमनी प्रस्खलंती च जिह्वा ॥
 हीयंते यस्य शीघ्रं बलदहनमनःशक्तिध्वंसेन्द्रियांगा-
 स्तद्रेपज्यं वदन्ति स्मरणमिदं बुधाः केवलं रामना-
 म्नाम् ॥ ३९ ॥

अर्थ—रातमें नींद न आवे कंठमें घरघर शब्द श्वास रुके
 देहमें दाह हो नाड़ीकी गति सूक्ष्म और मन्दतर हो जाय
 जिह्वा स्खलित होजाय जिसका बलसे रहित मन हीन
 होजाय व्याकुल हो इंद्रियोंकी शक्ति ध्वंस होजाय विद्वा-
 नों और वैद्योंने ऐसे रोगीकी औषधि केवल रामनामका
 स्मरणही कही है अर्थात् ऐसा रोगी चिकित्साके योग्य
 नहीं है ॥ ३९ ॥

अथ ज्वराधिकारः ।

यतस्समस्तरोगाणां ज्वरो राजेति विश्रुतः ।

अतो ज्वराधिकारोऽत्र प्रथमं परिलिख्यते ॥ ४० ॥

अर्थ—सम्पूर्ण रोगोंका राजा ज्वर कहा है इस कारण
 सब रोगोंसे पहले ज्वरका अधिकार लिखते हैं ॥ ४० ॥

अथ वातज्वरः ।

वेपथुर्विषमो वेगः कंठोष्ठमुखशोषणम् ।

निद्रानाशः क्षवस्तम्भोगात्राणामौक्ष्यमेव च ॥ ४१ ॥

अर्थ—कंप विषमवेग कंठ ओष्ठ और मुखका सुखना
 निद्राका नाश ठीकका रुकना शरीरमें सूखापन ॥ ४१ ॥

शिरोरुगात्ररुग्बक्रवैरस्यंगाढविद्धता ।

भवन्ति विविधा वातवेदना वातसुप्तता ॥ ४२ ॥

अर्थ-शिरपीडा, शरीरमें हडफूटन, विरसना, मलका गाढा होना, नींद तथा औरभी अनेक प्रकारकी वेदना बातसे होतीहैं ॥ ४२ ॥

पिडिकोद्वेष्टनंकणस्वनोवक्रकपायता ।

ऊरुसादोहनुस्तम्भोविश्लेषःसंधिजानुनोः ॥ ४३ ॥

अर्थ-फुनसी निकलना, कानोंमें गुन गुन शब्द सुनाई आना, मुख कसैला होना, हृदयमें पीडा, ठोड़ीका रहजाना, जंघाकी संधियोंका विश्लेषहोना ॥ ४३ ॥

शुष्ककासोवमिलोमदन्तहर्षाश्रमभ्रमौ ।

अरुणनेत्रमूत्रादितृप्प्रलापोष्णकामिता ॥ ४४ ॥

अर्थ-सूखी खांसी, वमन, रुयेंखंडे होजाना, दंतहर्ष, श्रम, भ्रम, नेत्र और मूत्रादिका लाल वर्ण होजाना, प्यास लगना, बेसमझे बक उठना ॥ ४४ ॥

शूलाध्मानौजृम्भणंचभवत्यनिलजेज्वरे ॥ ४५ ॥

अर्थ-शूल, अफारा, जंभाईका आना, यह लक्षण वात-ज्वरमें होतेहैं ॥ ४५ ॥

अथ पित्तज्वरः ।

वेगस्तीक्ष्णोतिसारश्चनिद्राल्पत्वंतथावमिः ।

कण्ठौष्ठमुखनासानांपाकःस्वेदश्चजायते ॥ ४६ ॥

प्रलापोवक्रकटुतामूर्छादाहोमदस्तृषा ।

पीतविण्मूत्रनेत्रत्वक्पैत्तिकेभ्रमएवच ॥ ४७ ॥

अर्थ-तीक्ष्णवेग, अतिसार, निद्रा, थोडा वमन, कंठ, ओष्ठ, मुख, नासिका इनका पकना और प्रस्वेदका होना,

मलाप, मुखका स्वाद कटु होना, मूर्च्छा, दाह, मद, तृषा, विष्टा, मूत्र, नेत्र, त्वचाका पीलाहोना, भ्रम यह लक्षण पित्त-ज्वरमें होते हैं ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

अथ श्लेष्मज्वरः ।

स्तैमित्यंस्तिमितोवेगआलस्यंमधुरास्यता ।

शुक्लमूत्रपुरीषत्वंस्तम्भस्तृप्तिरथापिवा ॥ ४८ ॥

गौरवंशीतमुत्क्लेदोरोमहर्षोतिनिद्रता ।

अंगेषुपिडकाःशीताःप्रसेकश्छर्दितंद्रिके ॥ ४९ ॥

कण्डूःप्रलापउष्णाभिलापितावह्निमार्दवम् ।

प्रतिश्यायोरुचिःकासःकफजेऽक्ष्णोश्चशुक्लता ॥ ५० ॥

अर्थ—स्तम्भपन, धमताहुआ वेग, आलस्य, मुखका स्वाद मधुर, मूत्र पुरीष श्वेतवर्ण, शरीरका जकड़ना तृप्ति सीहोनी ॥ ४८ ॥ शरीरमें भारीपन, शक्ति लगना, उत्क्लेद (सच-लई), रुखेंका खड़ा होजाना, बहुत नींदका आना, अंगोंमें छोटी २ पिडिकाओंका उत्पन्न होना, शीत, प्रसेक, वमन और तन्द्राका होना ॥ ४९ ॥ गुजली, मलाप (घेसमझे धक उठना), गरम वस्तुकी अभिलाषा होनी, अग्निका द्रव होना (मन्दाग्नि), श्वास, अरुचि, खाँसी, नेत्रोंमें श्वेतता यह लक्षण कफज्वरके हैं ॥ ५० ॥

अथ घातवित्तज्वरः ।

तृष्णामूर्च्छाभ्रमोदाहःस्वप्ननाशःशिरोरुजा ।

कंठास्यशोषोवमथूगेमहर्षोरुचिस्तमः ॥ ५१ ॥

पर्वभेदश्चजृम्भाचवातपित्तज्वराकृतिः ॥

अर्थ—तृष्णा, मूर्च्छा, भ्रम, दाह, निद्राका नाश, शिरमें

पीडा, कंठ सूखना, वमन होना, रुँका खडा होना, अरुचि, तम ॥ ५१ ॥ ग्रंथियोंमें पीडा, जँभाईका आना यह वात पित्तज्वरके लक्षण हैं ॥

अथ वातश्लेष्मज्वरः ।

स्तैमित्यंपर्वणांभेदोनिद्रागौरवमेवच ॥ ५२ ॥

शिरोग्रहःप्रतिश्यायःकासःस्वेदाप्रवर्तनम् ।

सन्तापोमध्यवेगश्चवातश्लेष्मज्वराकृतिः ॥ ५३ ॥

अर्थ—स्तंभपना, हडफूटन, निद्रा, भारीपन, ॥ ५२ ॥ शिरमें पीडा, जुकाम (पीनस), खांसी, पसीनेका न आना, सन्ताप और मध्यवेगका होना, वातकफज्वरके लक्षण हैं ॥ ५३ ॥

अथ पित्तश्लेष्मज्वरः ।

लित्ततिक्तास्यतातन्द्रामोहःकासोरुचिस्तृषा ।

मुहुर्दाहोमुहुःशीतंपित्तश्लेष्मज्वराकृतिः ॥ ५४ ॥

अर्थ—लित और तीखा मुख, तन्द्रा, मोह, खांसी, अरुचि, तृषा, वारंवार गरमी और वारंवार सरदी लगे यह पित्तकफज्वरके लक्षण हैं ॥ ५४ ॥

अथ सन्निपातज्वरः ।

क्षणेदाहःक्षणेशीतमस्थिसन्धिशिरोरुजा ।

सस्त्रावेकलुपेरक्तेनिर्भुग्नेचापिलोचने ॥ ५५ ॥

अर्थ—क्षणमें दाह, क्षणमें शीत, हड्डीसंधि और शिरमें पीडा आंसू सहित कालेलाल भीतरको घुसे नेत्र होने ॥ ५५ ॥

सस्वनौसरुजौकर्णौकण्ठःशूकैरिवावृतः ॥

तन्द्रामोहौप्रलापश्चकासःश्वासोरुचिर्भ्रमः ॥ ५६ ॥

अर्थ—कानोंमें पीडा, और गुन २ शब्द सुनाई आना

सथा कंठके भीतर सीकरोमरेकी समान धिरजाने, तन्द्रा, मोह, प्रलाप, कास, श्वास, अरुचि, भ्रम, होने ॥ ५६ ॥

परिदग्धाखरस्पर्शोजिह्वास्त्रस्तांगतापरम् ।

घ्नीवनंरक्तपित्तस्यकफेनोन्मिश्रितस्यच ॥ ५७ ॥

अर्थ—सब ओरसे दग्धरूप और खरखरे स्पर्शवाली जीभका होना तथा अंगोंका स्खलित होना, कफसे मिलेहुए रक्त पित्तका थूकना ॥ ५७ ॥

शिरसोलोठनंतृष्णानिद्रानाशोहृदिव्यथा ।

स्वेदमूत्रपुरीषाणांचिराद्दर्शनमल्पशः ॥ ५८ ॥

अर्थ—शिरका डुलाना, तृष्णा, निद्राका नाश, हृदयमें पीडा, स्वेद, मूत्र, पुरीषका बहुतकालमें किञ्चित् दर्शन ५८

कृशत्वंनातिगात्राणांसततंकण्ठकूजनम् ।

कोठानांश्यावरक्तानांमण्डलानांचदर्शनम् ॥ ५९ ॥

अर्थ—शरीरका अतिकृश न होना, कण्ठमें निरन्तर शब्द होना, कोठोंके काले लाल मण्डलोंका दीखना (अर्थात् शरीरमें मंडलाकार काले लाल मण्डलोंका होजाना) ॥ ५९ ॥

मृकत्वंस्रोतसांपाकोगुरुत्वमुदरस्यच ।

तद्वच्छीतंमहानिद्रादिवाजागरणंनिशि ॥ ६० ॥

अर्थ—मृकपन, स्रोतोंका पकना, पेटमें भारीपन, इसी प्रकार शीतका लगना, दिनमें महानिद्रा और रात्रिमें जागना ॥ ६० ॥

सदावानैवदानिद्रामहास्वेदोत्तिनैववा ।

गीतनर्तनहास्यादिविकृतेहाप्रवर्तनम् ॥ ६१ ॥

चिरात्पाकश्चदोषाणांसन्निपातज्वराकृतिः ॥ ६२ ॥

अर्थ-सदा सोना, अथवा निद्राका किंचित भी न होना महापसीनेका आना अथवा नहीं आना, गीत, नाच, हास्यादिमें, बुरी चेष्टा करलेना ॥ ६१ ॥ दोषोंके चिरकालमें पाक हो जानेसे ज्वरकी आकृतिवाला सन्निपात होता है ॥ ६२ ॥

क्षय ज्वरे लंघनकारणम्

ज्वरेलंघनमेवादाबुपदिष्टमृतेज्वरात्

क्षयानिलभयक्रोधकामशोकश्रमादिजात् ॥ ६३ ॥

अर्थ-क्षय, पवनविकार, भय, क्रोध, काम, शोक, श्रम इन कारणोंसे जो ज्वर न हुआ हो तो और ज्वरोंमें प्रथम लंघन कराना चाहिये ॥ ६३ ॥

नलंघयेन्मारुतजेज्वरेचक्षयोद्भवेतिक्षुधिमानसेच ।

नगुर्विणीदुर्बलवालवृद्धभीरुस्तृपार्त्तानपिसोर्ध्ववातान् ॥

अर्थ-वातज्वर, क्षय, बुभुक्षित, गर्भवती, दुर्बल, वालक, वृद्ध, भीरु, तृपासे आर्त तथा उर्ध्ववातवाले पुरुषोंको लंघन न करावे ॥ ६४ ॥

दोषाणामेवसाशक्तिर्लंघनेयासहिष्णुता ।

नहिदोषक्षयकश्चित्सहतेलंघनकचित् ॥ ६५ ॥

अर्थ-जो मनुष्य लंघनको सहन करलेता है यह शक्ति दोषोंहीकी है दोषक्षय होनेपर कोईभी कभी लंघनको नहीं सहसक्ता है ॥ ६५ ॥

वातिकःसप्तरात्रेणदशरात्रेणपैत्तिकः ।

श्लैष्मिकोद्वादशाहेनज्वरःपाकप्रपद्यते ॥ ६६ ॥

अर्थ-सातरातमें वातज्वर, दशरातमें पित्तज्वर और बारहदिनमें कफज्वरका पाक होजाताहै ॥ ६६ ॥

आसप्तरात्रंतरुणज्वरमाहुर्मनीपिणः ।

मध्यंद्वादशरात्रंतुपुराणमतउत्तरम् ॥ ६७ ॥

अर्थ-बुद्धिमानोंने ज्वरको सातरात्रितक तरुण कहाहै बारहदिनतक मध्य और इसके उपरान्त पुराना (जीर्ण) कहाहै ॥ ६७ ॥

तृष्णागरीयसीधोरासद्यःप्राणहरीयतः ।

तस्मादेयंतृपार्त्तयपानीयंप्राणधारणम् ॥ ६८ ॥

अर्थ-प्यास सबके अधिक महाघोर होके शीघ्रही प्राणोंको हरतीहै इसकारण प्यासेको प्राणधारणके निमित्त अवश्य पानी देना चाहिये ॥ ६८ ॥

तृपितोमोहमायातिमोहात्प्राणान्विभुंचति ।

अतःसर्वास्ववस्थासुनक्वचिद्वारिवारयेत् ॥ ६९ ॥

अर्थ-प्यासा मोहको प्राप्त होताहै और मोहित होनेसे प्राण छोड़देताहै इसकारण सबही अवस्थाओंमें जल देना निषेध करना नहीं ॥ ६९ ॥

क्षीणेचमधुमेहेचपानीयमंदमाचरेत् ।

मूर्च्छापित्तोष्मदाहैषुविषोत्थेचमदात्यये ॥ ७० ॥

अर्थ-क्षीण और मधुमधेहवालेको थोड़ा पानी पीना उचितहै मूर्च्छा, पित्तोष्ण, दाह, विषक उपद्रव, मदात्यय (रुग्णत्वं) ॥ ७० ॥

श्रमक्लमपरीतेपुमार्गोत्थेवमथौतथा ।

ऊर्ध्वगेरक्तपित्तेचशीतमंभःप्रशस्यते ॥ ७१ ॥

अर्थ-श्रम और क्लेशसे व्याप्त मार्गचलनेसे उत्पन्नहुए व-
मनमें रक्तपित्तके ऊर्ध्व प्राप्त होनेमें शतिलजल देना
उचित है ॥ ७१ ॥

वृष्णजलाधिकारः ।

नवज्वरेप्रतिश्यायेपार्श्वशूललग्नह ।

सद्यःशुद्धौतथाध्मानेव्याधौवातकफोद्भवे ॥ ७२ ॥

अर्थ-नवीन ज्वर, जुखाम, पार्श्वशूल, गलग्नहरोग,
शीघ्रशुद्धि, अफारा, वातकफसे उत्पन्न हुई व्याधिमें ॥ ७२ ॥

अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषुविद्रवौ ।

हिक्कायास्नेहपानेचपिवेदुष्णजलंनरः ॥ ७३ ॥

अर्थ-अरुचि, संग्रहणी, गुल्म, श्वास, कास, विद्रधि
(वद), हिचकी और स्नेहपानमें मनुष्यको गरम जल
पीना चाहिये ॥ ७३ ॥

यत्क्वाथ्यमानंनिर्वेगंनिःफेनंनिर्मलंजलम् ।

अर्द्धावशिष्टंभवतितदुष्णोदकमुच्यते ॥ ७४ ॥

अर्थ-जो औटाया हुआ बेगरहित फेनरहित निर्मल
जल है और औटते २ आधा रहगया है वह उष्णोदक
कहाता है ॥ ७४ ॥

कफमेदोनिलामघ्नं दीपनं वस्तिशोधनम् ।

कासश्वासज्वरहरं पथ्यमुष्णोदकं सदा ॥ ७५ ॥

अर्थ-उष्णोदक कफ, मेद और वातरोगका हरनेवाला,
दीपन, वस्तिशोधक, कास, श्वास, ज्वरका हरनेवाला
सदा पथ्य है ॥ ७५ ॥

अष्टमेनांशशेषेणचतुर्थेनार्धकेनवा ।

अथवाक्त्रनेनैवसिद्धमष्णोदकंवदेत् ॥ ७६ ॥

अर्थ-आठवाँ अंश शेषरखनेसे चौथा अंश अथवा आधा शेषरखनेसे अथवा औटानेसेही उष्णोदक सिद्ध होता है ७६

तत्पादहीनं वातघ्नमर्द्धहीनं तु पित्तजित् ।

त्रिपादहीनं श्लेष्मघ्नं पाचनं दीपनं लघु ॥ ७७ ॥

अर्थ-चौथाई कम होजानेसे वातको दूर करता है आधा रहनेसे पित्तको जीनता है त्रिपाद हीन होनेसे कफनाशक, पाचन, दीपन और लघु होजाता है ॥ ७७ ॥

द्वन्द्वजैः सन्निपाते च ज्वरे पथ्यं तदार्तिजित् ॥

शारदं चार्द्धपादो न पादहीनं तु हिमनम् ॥ ७८ ॥

अर्थ-द्वन्द्वज और सन्निपातज्वरमें उष्णोदक पथ्य और रोगनाशक है, शरदऋतुमें अर्द्धपादहीन हिमऋतुमें चौथाई कम ॥ ७८ ॥

शिशिरे च वसन्ते च ग्रीष्मे चार्द्धावशेषितम् ।

विपरीते ऋतो तद्वत्प्रावृष्य ष्ठावशेषितम् ॥ ७९ ॥

अर्थ-शिशिर वसन्त और ग्रीष्ममें आधारहाडुआ पथ्य है, ऋतुके बदलनेमें और वर्षाऋतुमें अष्टमांश शेष रहा जल देना चाहिये ॥ ७९ ॥

ज्वरादौ लंघनं प्रोक्तं ज्वरमध्ये तु पाचनम् ।

ज्वरान्तरे च नन्दद्यादेतज्ज्वरचिकित्सितम् ॥ ८० ॥

अर्थ-ज्वरकी आदिमें लंघन करावे, मध्यमें पाचन दे, ज्वरान्तमें रेचन दे यह ज्वरकी चिकित्सा है ॥ ८० ॥

नागरं देवकाष्टं च धान्याकं बृहतीद्वयम् ।

दद्यात्पाचनकं पूर्वज्वरितानां ज्वरपहम् ॥ ८१ ॥

अर्थ-सोंठ, देवदारु, धनियाँ, दोनों कटेरी यह बराबर भाग छदाम २भर लेकर ज्वरपाचनको ज्वरवालोंको इसका पाचन देना चाहिये, यह ज्वर दूरकरताहै ॥ ८१ ॥

किराताब्दामृतोदीच्यबृहतीद्वयगोक्षुरैः ।

सस्थिराकलसीविश्वेःकाथोवातज्वरापहः ॥ ८२ ॥

अर्थ-चिरायता, नागरमोथा, गुरच, नेत्रवाला, दोना कटेरी, गोखरू, शालपर्णी, पिठवन, सोंठ यह सब बराबरले इनका काठा देनेसे वातज्वर दूर होता है ॥ ८२ ॥

कट्फलेन्द्रयवारिष्टतित्तामुस्तेः शृतंजलम् ।

पाचनं दशमेह्निस्वात्तीविपित्तज्वरेनृणाम् ॥ ८३ ॥

अर्थ-कायफल, इन्द्रजौ, नीमकी छाल, कुटकी, नागर मोथा यह जलमें औटाकर देनेसे दशमें दिन तीव्र पित्तज्वर भी शान्त होजाता है ॥ ८३ ॥

गुडूचीनिंबधान्याकंपद्मकंचन्दनान्वितम् ।

एषसर्वज्वरंहन्तिगुडूच्यादिस्तुपाचनः ॥ ८४ ॥

अर्थ-गिलोय, नीमकी छाल, धनियाँ, पद्माक, लाल-चन्दन यह गुडूची आदिका पाचन देनेसे सम्पूर्ण ज्वरको दूर करता है ॥ ८४ ॥

हृल्लासारोचकच्छर्दिपिपासादाहनाशनः ।

बीजपूरशिफापथ्यानागरग्रन्थिकैःशृतम् ॥ ८५ ॥

सक्षारंपाचनंश्लेष्मज्वरेद्वादशवासरे ॥ ८६ ॥

अर्थ-विजौरेकी जड़, सोंफ, छोटीहरद, सोंठ, पीप-लामूल इनका काठाकर जवायार मिलाय बारह दिनके उपरान्त कफज्वरमें, देनेसे ज्वर पचता है ॥ ८५ ॥ ८६ ॥

दुरालभापर्पटकप्रियंगु-

भूनिम्बवासाकटुरोहिणीनाम् ॥

क्वाथंपिवेच्छर्करयासमेतं

तृष्णान्वितेपित्तभवज्वरेऽपि ॥ ८७ ॥

अर्थ-जवासा, पित्तपापडा, फूलप्रियंगु, भूनिम्ब, अडूसा, कुटकी इनका काढा मिश्री ढालकर पिये तो तृष्णा और पित्तज्वरकी शान्ति होती है ॥ ८७ ॥

पटोलपत्रनिःकाथोमधुनामधुरीकृतः ।

तीव्रपित्तज्वरामर्दीपित्ततृड्दाहनाशनः ॥ ८८ ॥

अर्थ-पटोलपत्रके काढेमें शहद ढालकर पीनेसे तीव्र पित्तज्वर, पित्त, तृषा, दाहका नाश करता है ॥ ८८ ॥

गुडूच्यामलकैर्युक्तः केवलोवापिपर्पटः ।

पित्तज्वरंहरत्तूर्णदाहशोषंभ्रमान्वितम् ॥ ८९ ॥

अर्थ-गिलोय आमलेके साथ केवल पित्तपापडा पान करनेसे शीघ्रही पित्तज्वर, दाह, शोष और भ्रम नष्ट हो जाता है ॥ ८९ ॥

लोध्रानृतोत्पलापद्मसारिवानांसशर्करः ।

क्वाथः पित्तज्वरंहन्यादथवापर्पटोद्भवः ॥ ९० ॥

अर्थ-लोध्र, गिलोय, नीलोफर, पुहकरमूल, सारिवा इनका काय कर मिश्री ढालकर पान करनेसे पित्तज्वर नष्ट होता है अथवा पित्तपापडेके साथ मिश्री पान करे ॥ ९० ॥

पर्पटामृतधात्रीणांक्वाथः पित्तज्वरंजयेत् ।

द्राक्षाग्वययोश्चापिकाश्मर्यस्याथवापुनः ॥ ९१ ॥

अर्थ—पित्तपापडा, गिलोय, आमला इनका काढा कर पीनेसे पित्तज्वर नष्ट होता है। दाख अमलतास अथवा खंभारीके काढेसे पित्तज्वरका नाश होता है ॥ ९१ ॥

एषपर्पटकःश्रेष्ठःपित्तज्वरविनाशनः ।

किंपुनर्यदियुंजीतचंदनोदीच्यनागरैः ॥ ९२ ॥

अर्थ—एक पित्तपापडाही पित्तज्वरको नाश करता है। यदि लाल चंदन नेत्रवाला और सोंठ साथ दिया जाय तो क्या कहना है ॥ ९२ ॥

विश्वपर्पटकोशीरघायचंदनसाधितम् ।

दद्यात्सुशीतलंवार्तितृच्छर्दिज्वरदाहनुत् ॥ ९३ ॥

सोंठ, पित्तपापडा, उशीर (खस), धनियां, लाल चंदनसे सिद्ध किया काढा शीतलकर देनेसे प्यास, छर्दि, ज्वर, दाह दूर होता है ॥ ९३ ॥

पर्पटाव्दामृतोदीच्यकिरातैस्साधितंजलम् ।

पंचभद्रमिदं प्रोक्तं वातपित्तज्वरापहम् ॥ ९४ ॥

अर्थ—पित्तपापडा, नागरमोथा, गिलोय, नेत्रवाला भूनिंबसे साधित किया जल पंचभद्र कहलाता है। यह वात-पित्तज्वरका दूर करनेवाला है ॥ ९४ ॥

त्रिफलाशाल्मलीरास्त्राराजवृक्षाटरूपकैः ।

शृतमंत्रुहरेत्तूर्णवातपित्तोद्भवंज्वरम् ॥ ९५ ॥

अर्थ—त्रिफला, सेमल, रायसन, अमलतास, अडूसा इनको बराबर ले काढा कर पिलानेसे वातपित्तज्वर दूर होता है ॥ ९५ ॥

क्षुद्राशुण्ठीगुडूचीनांकपायःपौष्करस्यच ।

कफवातादिकेपेयोज्वरेवापित्रिदोषजे ॥ ९६ ॥

अर्थ-भटकटैया, सोंठ, गिलोय तथा पुहकरमूलका काढा कफवातकी अधिकतामें तथा, त्रिदोषज्वरमें देना चाहिये ॥ ९६ ॥

आरग्वधकणामूलमुस्तातिकाभयाकृतः ।

काथःशमयतिक्षिप्रंज्वरंवातकफोद्भवम् ॥ ९७ ॥

अर्थ-अमलतासका गूदा, पीपलामूल, नागरमोथा, कुटकी, बड़ी हरड, इनका काढा पान करनेसे शीघ्रही वातकफज्वर दूर होता है ॥ ९७ ॥

अमृतारिष्टकटुकामुस्तेन्द्रियवनागरैः ।

पटोलचंदनाभ्यांचशृतंपिप्पलिचूर्णयुक् ॥ ९८ ॥

अर्थ-गिलोय, नीमकी छाल, कुटकी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सोंठ, पटोलपात, लाल चन्दन इनका काढा पीपलके चूर्ण सहित पीनेसे ॥ ९८ ॥

अमृताष्टकमेतत्पित्तश्लेष्मज्वरापहम् ।

पटोलचंदनमूर्वापाठातिकाभृतागणः ॥ ९९ ॥

अर्थ-यह अमृताष्टक पित्त कफ ज्वरका दूर करनेवाला है । पटोलपात, लाल चन्दन, मूर्वा, पाठा, कुटकी, गिलोय यह लेकर ॥ ९९ ॥

पित्तश्लेष्मज्वरच्छर्दिदाहकंडूविपापहः ।

पटोलंपिचुमंदंचत्रिफलामधुकंवला ॥ १०० ॥

अर्थ-इन औषधोंका काढा पित्तश्लेष्मज्वर, छर्दि, दाह, सुजली और विषका दूर करनेवाला है । पटोलपात, नीम की छाल, त्रिफला, मुलेटी, खरेटी ॥ १०० ॥

साधितोयंकपायःस्यात्पित्तश्लेष्मोद्भवेज्वरे ॥ १०१ ॥

अर्थ-इनका काढा पित्तश्लेष्मज्वरमें देना चाहिये ॥ १०१ ॥

रामायणे लंकाकाण्डे ।

लंकायामुत्तरेकोणेकुमुदोनामवानरः ।

तस्यस्मरणमात्रेणनश्यत्येकाहिकोज्वरः ॥ १०२ ॥

अर्थ-मंत्र । लंकाके उत्तर कोनमें कुमुद नाम वानरहै उस के नामस्मरणमात्रसे प्रतिदिन आनेवाला ज्वर नष्ट होता है ॥ १०२ ॥

अयंश्लोकःपिप्पलपत्रपृष्ठभागेसमतया

मण्डलाकारेणलिखित्वाज्वरदिवसेज्वरा

गमनात्पूर्वमेवप्रदर्शनीयः ॥ १०३ ॥

अर्थ-यह श्लोक पीपलके पत्तेकी पीठपर समानतासे मण्डलाकारसे लिखें, ज्वरके दिन ज्वर आनेसे पहले दिखलाना चाहिये ॥ १०३ ॥

पटोलारिष्टमृद्धीकाशम्याकत्रिफलावृषैः ।

क्वाथएकाहिकंहन्तिशर्करामधुसंयुतः ॥ १०४ ॥

अर्थ-पटोलपत्र, नीमकीछाल, दाख, साया, त्रिफला, अदूसा इनका काढ़ा मिश्री, शहत मिलाकर पीवें तो एकाहिक ज्वर दूर होता है ॥ १०४ ॥

द्राक्षापटोलनिम्बाब्दशक्राह्वत्रिफलाशृतम् ।

जलंजंतुःपिवेच्छीतमन्येद्युज्वरशान्तये ॥ १०५ ॥

अर्थ-मुनक्का, पटोलपत्र, नीमकीछाल, नागरमोथा, इन्द्रजौ, हरड, बेहडा, आमला इनका काढ़ा कर पीनेसे दूसरे दिन आनेवाला ज्वर शान्त होता है ॥ १०५ ॥

पटोलेन्द्रयवानंतापथ्यानंतामृताजलम् ।

ज्वरंसततकंपानान्निहन्त्याशुप्रयोजितम् ॥ १०६ ॥

अर्थ-पटोल (परवल), इन्द्रजौ, जवासा, हरड, जवासा, गिलोय इनका काढा कर पीनेसे शीघ्र निरन्तर आनेवाला ज्वर शान्त होजाताहै ॥ १०६ ॥

उशीरंचन्दनमुस्तंगुडूचीधान्यनागरम् ।

अम्भसाक्थितंपेयंशर्करामधुयोजितम् ॥

ज्वरेतृतीयकेपुंसांतृष्णादाहसमन्विते ॥ १०७ ॥

अर्थ-खस, लाल चन्दन, नागरमोथा, गिलोय, धनियाँ, सोंठ इनका काढाकर मिश्री और शहद मिलाकर पीवे तो तृष्णा दाहवाला तिजारीको शान्त करता है ॥ १०७ ॥

लंकाधीश्वरदर्पहाजनकजाशोकांतकृच्छ्रक्ष्मण-

प्राणत्राणकरोजितेन्द्रियगणःसथ्रीहनूमान्भटः ।

एतैर्नामभिरादरादुषसियोनिद्रालयेकीर्तये-

त्तस्यैवोत्तरतिद्रुतंक्षणगतो नित्यंतृतीयज्वरः १०८ ॥

अर्थ-अथवा यह लिखा श्लोक विचारकर पढ़ें । रावणके दर्पहरनेवाले, जानकीके शोकनाशक लक्ष्मणके प्राणदाता, जितेन्द्रिय, महावीर इन नामोंसे जो आदरपूर्वक प्रातःकाल और रात्रिको सोते समय कीर्तन करना है उसका तीसरे दिन आनेवाला ज्वर शान्त होता है ॥ १०८ ॥

प्रातश्श्लोकाश्चपाठेनतृतीयज्वरनाशकाः ।

स्थिरासामलकीदारुशिवावृषमहोषधेः ॥ १०९ ॥

शृतशोतंजलंदद्यात्सितामधुविमिश्रितम् ।

चातुर्थिकज्वरेतीव्रमेदैचेवाथपावके ॥ ११० ॥

अर्थ-अथवा प्रातःकालमें पठनीय श्लोकोंके पाठ करनेसे तिजारी नष्ट होती है, शालपर्णी, आंवला, देवदारु, हरड़, अडूसा और सोंठ इनका काढाकर शहत और मिश्री मिलाकर पीनेसे कठिन चौथिया ज्वर और मन्दाग्रि दूर होती है ॥ १०९ ॥ ११० ॥

अगस्तिपत्रस्वरसेननस्यंनिहन्तिचातुर्थिकमुग्रवीर्यम् ॥
अर्थ-अगस्त वृक्षके पत्तेकी नस्य देनेसे कठिन चातुर्थिक ज्वर नष्टहोजाता है ॥ ११ ॥

मुस्ताक्षुद्रामृताशुण्ठीधात्रीकाथःसमाक्षिकः ।

पिप्पलीचूर्णयुक्सर्वविषमज्वरनाशनः ॥ १२ ॥

अर्थ-नागरमोथा, कटेरी, गिलोय, सोंठ और आमले इन पांच औषधोंका काढा शहत और पीपलका चूर्ण डालकर पीवे तो विषमज्वर दूर होय ॥ १२ ॥

जीरकंगुडसंमिश्रंविषमज्वरनाशनम् ॥

अग्निमांचंजयेच्छीघ्रंवातरोगापहमतम् ॥ १३ ॥

मधुनावाभयालीढाहन्त्याशुविषमज्वरम् ।

क्षीरेणपंचवृद्ध्याचदुग्धान्नाशीकणांपिबेत् ॥ १४ ॥

अर्थ-जीरा और गुड मिलाकर खानेसे विषमज्वर दूर होता है इससे मन्दाग्रि और वातरोग दूर होता है ॥ १३ ॥ शहदके साथ हरड़ खानेसे विषमज्वर दूर होता है दूधके साथ, क्रमसे बढ़ाताहुआ पांचसे प्रारम्भकरके, पीपलको पानकरे ॥ १४ ॥

यावत्पूर्णशतंतस्यास्तावतैवापकर्षयेत् ॥

वातास्रश्वासपांड्वशोगुल्मशोथोदरापहम् ॥ १५ ॥

अर्थ-पीपल सौतक बराबर बढाता जाय सौ पूर्णहो जानेसे उसीप्रकार क्रमसे कमतीकरता जाय तौ बात अम्र, श्वास, पाण्डु, बवासीर, गुल्म, शोथ, और उदररोग दूर होताहै ॥ १५ ॥

विषमज्वरजिद्वृष्यपिप्पलीवर्द्धमानकम् ।

भृङ्गराजजटावद्धाकर्णेरात्रिज्वरापहा ॥ १६ ॥

अर्थ-यह वर्द्धमान पिप्पली विषमज्वरको दूर करनेवाली और बलको बढाती है भांगरेकी जटाकानमें बांधनेसे रात्रिमें आने वाला ज्वर नष्ट होताहै ॥ १६ ॥

सर्वज्वरहरीश्वेतमन्दारस्यचमूलिका ।

तुरंगरिपुमूलंवाश्वेतंशीतज्वरापहम् ॥ १७ ॥

अर्थ-श्वेत मन्दारकी जड भी सम्पूर्ण ज्वर दूर करती है तथा कनेरकी जड वा श्वेत कनेरकी जड शीतज्वरको हरने वाली है ॥ १७ ॥

विवस्त्रेणोद्धृतादेवीमूलिकाकर्णबंधनात् ।

चातुर्थिकज्वरंहन्तिद्रोणपुष्पीरसांजनात् ॥ १८ ॥

अर्थ-नग्नहोकर सहदेवीकी जडको कानमें बांधनेसे वा गूमा घासका रस आंखोंमें आजनेसे चौथियाज्वर नष्ट होताहै ॥ १८ ॥

कटुकारोहिणीमुस्तंपिप्पलीमूलमेवच ।

हरीतकीचतत्तोयमामाशयगतेज्वरे ॥ १९ ॥

अर्थ-कुटकी, हरड, नागरमोया, पीपलामूल, हरडका काढा आमाशयमें प्राप्तहुए ज्वरको दूरकरता है ॥ १९ ॥

पाकलाह्यश्वगंधाचशतपुष्पासर्पपेस्समम् ।

एतदुद्धूलनंश्रेष्ठंवातपित्तज्वरापहम् ॥ १२० ॥

अर्थ—कूठ, असगंध, सौंफ, सरसाका उद्धूलन (अर्थात् इनका चूर्णकर शरीरमें मलना) वातपित्तज्वर नाशकरने में श्रेष्ठ है ॥ १२० ॥

कट्फलंपौष्करंकृष्णाशृंगीचमधुनासह ।

श्वासकासज्वरहरःश्रेष्ठोलेहःकफांतकृत् ॥ २१ ॥

अर्थ—कायफल, पुष्करमूल, पीपल, काकडासींगी इनका चूर्ण बनाकर शहदके साथ चाटनेसे श्वास खाँसी ज्वर और कफ दूर हाता ह ॥ २१ ॥

शृतशीतमथितपेपितमदनफलालेपनंसद्यः ।

अपनयतिदाहमुग्रज्वरजंहस्ताग्निमूर्द्धतले ॥ २२ ॥

अर्थ—मैनफलको पीसकर ओटावे फिर उसे ठंडाकरके लेप करे तो ज्वरका अतिदाह, नष्ट होता है इसका मालिस हथेली तलुए और शिरमें करना चाहिये ॥ २२ ॥

उत्तानमुत्तस्यगभीरमध्यं

कांस्यादिपात्रंविनिधायनाभौ ॥

तत्रांबुधाराबहुलापतन्ती

निहन्तिदाहंत्वरितंसुशीता ॥ २३ ॥

बदरीपल्लवोत्थेनफेनेनारिष्टकेनवा ॥ २४ ॥

अर्थ—पुरुषको सीधा लिटाकर उसकी नाभीपर बीचमें गहरा इसप्रकारका एक कांसीका पात्र रखकर उसके ऊपर शीतलजलकी धारा छोड़े तो बहुत शीघ्र दाह दूर होकर शीतलता होती है ॥ २३ ॥ तथा बेरीके पत्ते पानीमें डालकर मथे उससे उठे फेन को अंगमें लगावे तो दाह शान्तहो ॥ २४ ॥

अथ चूर्णानि ।

धात्रीशिवसैन्धवचित्रकाणां

कणायुतानांसमभागचूर्णम् ॥

जीर्णज्वरारोचकवह्निमान्द्ये

सविड्ग्रहेशस्तमितिप्रतिज्ञा ॥ २५ ॥

अर्थ—(चूर्ण) आमला, हरड, सेंधानमक, चीता, पीपल यह, सब औषधि बराबर भागलेकर इनका चूर्ण बना लें यह जीर्णज्वर, अरुचि, मन्दाग्नि, दस्तका न होना इतने रोगोंको दूर करना है यह प्रतिज्ञा है ॥ २५ ॥

तालीसोपणविश्वपिप्पलितुगाः कर्पाभिवृद्धासृटिः

कर्पाद्धात्वगपिप्रकामधवलाद्वात्रिशकर्पासिता ॥

तालीसाद्यमिदंसुचूर्णमरुचावाध्मानमन्दानलः

श्वासच्छर्द्यतिसारशोपणसरणीहज्वरेशस्यते ॥ २६ ॥

अर्थ—नालिसपत्र १ तोला, कालीमिर्च २ तोले, सांठ ३ तोले, पीपल ४ तोले, वंशलोचन ५ तोले, दालचीनी छोटी इलाची छः छः मासे, मिर्ची ३२ तोले इन सबको कूट पीस चूर्णकरे यह तालीसादिचूर्ण है यह अरुचि, अफारा, मन्दाग्नि, श्वास, छर्दि, अतिसार, शोष, संप्रहणी, प्लीहा और ज्वरको शान्त करना है ॥ २६ ॥

अथ तैलम् ।

लाशाहरिद्रामंजिष्ठाकल्केस्तैलंविपाचयेत् ।

पङ्गुणेनारनालेनदाहशीतज्वरपहम् ॥ २७ ॥

अर्थ—लाख, हल्दी, मैजोठ इनकी लुगदीकर औषधियोंसे चौगुना तेल ले छः गुनी कांजीमें सिद्ध करे यह मलनेसे दाह और शीतज्वरका नाश करता है ॥ २७ ॥

लाक्षामूर्वाहरिद्रेद्रेमंजिष्ठाचेन्द्रवारुणी ।

वृद्धतीसैन्धवंकुष्ठंशस्त्रामांसीशतावरी ॥ २८ ॥

आरनालाढकेनात्रतैलप्रस्थंविपाचयेत् ।

तैलमंगारकंनामसर्वज्वरविनाशनम् ॥ २९ ॥

अर्थ—लाख, मूर्वा, हल्दी, दारुहलदी, मैजोठ, इन्द्रायन, भटकदैया, सेंधा, कूठ, रास्त्रा, जटामांसी, शतावरी यह औषध कूट २५६ तोले कांजीमें ६४ तोले तेल सिद्ध करले यह अंगारकनामतेल सब ज्वरोंका नाश करता है २८॥२९॥

अथ रस ।

शुद्धसूतंविपंगंधंधूर्तृषीजंत्रिभिः समम् ।

चतुर्णांद्भिगुणंव्योपंदेमक्षीरीविभावितम् ॥ ३० ॥

चतुर्वारंघर्मशुष्कंचूर्णं गुंजाद्वयोन्मितम् ।

जम्बीरकस्यमज्जाभिरार्द्रकस्यरसेनवा ॥ ३१ ॥

महाज्वरांकुशोनामसमस्तज्वरनाशनः ।

एकाहिकंद्वयाहिकंवात्र्याहिकंवाचतुर्थकम् ।

विषमंचत्रिदोषंचहन्तिसद्योनसंशयः ॥ ३२ ॥

अर्थ—शुद्ध पारा ३मासे, शुद्ध कराहुआ विष तीन मासे, गंधक तीन मासे, धतूरेके बीज नौमासे इन चारोंसे दूना त्रिकुंटा ले चूकेकी भावना दियाहुआ यह चार बार धूपमें सुखावै इन सबको एकत्र कर चूर्ण करे जम्बीरी अथवा अदरकके

रसमें दोरती दे यह महाज्वराकुश रस सम्पूर्ण ज्वर दूर करता है एकांतरा, तिजारी, चातुर्थिकज्वर, विषमज्वर त्रिदोषज्वर सब नष्ट होजातेहैं इसमेंसंदेह नहीं ॥ १३० ॥ ३१ ॥ ३१ ॥

अथ सन्निपातचिकित्सा ।

त्रिरात्रंपंचरात्रंवादशरात्रमथापिवा ।

लंघनंसन्निपातेपुकुर्यादारोग्यदर्शनात् ॥ ३३ ॥

अर्थ-तीनदिन पांचदिन दशदिन सन्निपातमें लंघन कराने चाहिये जबतक आरोग्यता नहो ॥ ३३ ॥

शालिपर्णीपृश्निपर्णीवृद्धतीक्ष्णगोक्षुरैः ।

विल्वाम्बिमंथस्योनाकपाटलाकाशमरीयुतैः ॥ ३४ ॥

दशमूलमिदंभ्यातंक्थितंतज्जलंपिवेत् ।

पिप्पलीचूर्णसंयुक्तंसन्निपातज्वरापहम् ॥ ३५ ॥

अर्थ-शालपर्णी, पिठवन, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, गोखरू, बेलगिरी, अरनी, टटू, कंमारी, और पाटल यह दशमूलका काढा पीपलीका चूर्ण ढालकर पीवै तो सन्निपातज्वर दूर होता है ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

भूनिंबदारुदशमूलमहोपधाह-

तिक्तेन्द्रवीजधनिकेभकणाकपायः ।

तन्द्राप्रलापकसनारुचिदाहमोह-

श्वासादियुक्तमखिलंज्वग्माशुह्न्यात् ॥ ३६ ॥

अर्थ-भूनिम्ब (चिरापता), देयदारु, दशमूल, मोंठ, कुटकी, इन्द्रजो, धनियां, गजपीपल इनका काढा कर पिलानेसे तन्द्रा, प्रलाप, ग्यामी, अरुचि, दाह, मोह, श्वास और सम्पूर्ण ज्वर शीघ्र दूर होतेहैं ॥ ३६ ॥

भार्ङ्गीभूनिम्बनिर्वैर्जलदकटुवचाव्योपवासाविशाला
राम्नानंतापटोलीसुरतरुजनीपाटलाटिंडुकीभिः ॥

ब्राह्मीदार्वीगुडूचीत्रिवृदतिविषयापुष्करत्रायमाणैः
पाठाव्याघ्रीकलिङ्गैस्त्रिफलसठियुतैःकल्पितैस्तुल्यभागैः

अर्थ-भारङ्गी, चिरायता, नीमकी छाल, नागरमोथा,
कुटकी, वच, त्रिकुटा, (सोंठ, मिर्च, पीपल), अडूसा,
इन्द्रायन, राम्ना, जवासा, पटोलपात, देवदारु, हलदी, पाठ-
ल, जलसिरस, ब्राह्मी, दारुहलदी, गिलोय, श्वेत निशोथ,
अतीस, पुष्करमूल, त्रायमाण, पाठ, इन्द्रजौ, हरड, बहेडा,
आमला और कचूर यह सब बराबर भागले काढाकरे ॥ ३७ ॥

काथोद्वात्रिंशकाख्यस्त्रिकदशकलितान्सन्निपातान्निहन्ति
श्वासंशूलचहिक्कांश्चसनगुदरुजाध्मानमन्यारुजश्च ॥

ऊरुस्तंभांत्रवृद्धीगलगदमरुतंसर्वसंधिग्रहातिं

हन्यादेकोपिसिंहोगजनिवहमिवप्रस्फुरद्धारिधारम् ३८

अर्थ-यह द्वात्रिंशक नामवाला काथ तेरह प्रकारके
सन्निपातोंको दूर करता है, श्वास, शूल, हिचकी, गुद-
रोग, अफारा तथा दूसरे रोग, ऊरुस्तंभ, अंत्रवृद्धि, गल-
रोग, वातरोग, संधिपीडा इत्यादि रोगोंको यह एकही
काथ इसप्रकार दूर करता है जैसे एकही सिंह अनेक
हाथियोंको नष्ट करता है ॥ ३८ ॥

दार्यवुदौतिकफलत्रिंशच

क्षुद्रापटोलीरजनीसनिवम् ॥

काथंविदद्याज्ज्वरसन्निपाते

निश्चेतनेपुंसिविवोधनाय ॥ ३९ ॥

अर्थ—देवदारु, नागरमोथा, कुटकी, त्रिफला, कटेरी, दारुहलदी, नीमकी छाल, इनका काढा कर सन्निपातसे अचेत हुए पुरुषके ज्ञानके निमित्त देना चाहिये ॥ ३९ ॥

अथावलीहिक्का ।

कदफलंपौष्करंशृंगीव्योपंजासश्चकारवी ।

श्लक्ष्णं चूर्णीकृतं ह्येतन्मधुना सह लेहयेत् ॥ १४० ॥

एपावलेहिका हंतिसन्निपातं सुदारुणम् ।

हिक्कांश्वासं च कासं च कण्ठरोधं च घर्धरम् ॥ ४१ ॥

एतद्योज्यं कफोद्रेके चूर्णमाद्र्कजैरसैः ।

किरातं नागरं मुस्तं गुडूची चेत्ययंगणः ॥ ४२ ॥

अर्थ—कायफल, पुष्करमूल, काकडासींगी, त्रिकटु (सोंठ मिर्च पीपल), अजवायन इनका चूर्णकर शहतके साथ चाटे । यह अवलेहिका दारुण सन्निपातको दूर करती है । हिचकी, श्वास, कास, कंठरोध, घर्धरको दूर करती है, जब कफकी अधिकता हो तो इन औषधियोंका चूर्ण कर अद्रक्षके रसमें चाटे अथवा चिरायता, सोंठ, नागरमोथा गिलोय यह औषधी सेवन करें ॥ १४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

अथोद्धलनम् ।

भूानवकारवीतिकावचाकदफलजं रजः ।

उद्धलनं त्रिदोषोत्थे स्वेदाभिप्यंदिनिज्वरे ॥ ४३ ॥

अर्थ—चिरायता, अजवायन, कुटकी, वच, कायफल इनका चूर्ण कर उद्धलन करनेसे त्रिदोष, स्वेद, अभिप्यंदि ज्वरमें हितकारक है ॥ ४३ ॥

मरीचंपिप्पलीशुण्ठीपथ्यालोध्रंसपुष्करम् ।

भूनिवंकटुकाकुष्ठंकारवीन्द्रयवाःशटी ॥ ४४ ॥

अर्थ—काली मिर्च, पीपल, सोंठ, हरड, लोध, पुष्करमूल, चिरायता, कुटकी, कूठ, अजवायन, इन्द्रजौ, कचूर ४४ ॥

एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ।

प्रस्वेदेकंठरोधेचसंधिमर्दनमिष्यते ॥

एतदुद्धूलनंश्रेष्ठं सन्निपातहरंपरम् ॥ ४५ ॥

अर्थ—यह बराबर भाग लेकर इनका बारीक चूर्ण करले प्रस्वेद, कंठरोध, संधिपीडामें हितकारी है यह उद्धूलन अत्यन्त श्रेष्ठ और सन्निपातका हरनेवाला है ॥ ४५ ॥

स्वेदोद्गमेभ्रष्टकुलत्थचूर्णैरुद्धूलनंशस्तमितिश्रुवन्ति ४६॥

अर्थ—जब बहुत पसीना आवै तौ भुनी कुलत्थीके चूर्णसे उद्धूलन करना परम श्रेष्ठ है ॥ ४६ ॥

अथ नस्यम् ।

मधूकसारसिन्धूत्थवचोपणसमंकृतम् ।

श्लक्ष्णमपिचनस्यंहिकुर्यात्संज्ञाप्रबोधकम् ॥ ४७ ॥

अर्थ—महुएका सार, सैंधानिमक, वच, मिर्चकाली इन सबको बराबर ले गरम पानीमें पीसि नस्य देनेसे अचेतन मनुष्यको संज्ञा प्राप्त होती है ॥ ४७ ॥

अथ कर्णिकषन्निपातः ।

ज्वरस्यपूर्वज्वरमध्यतोवा

ज्वरांततोवाश्रुतिमूलशोथः ।

क्रमादसाध्यःखलुकृच्छ्रसाध्यः

सुखेनसाध्योमुनिभिःप्रदिष्टः ॥ ४८ ॥

अर्थ—कर्णिक सान्निपातका लक्षण—सान्निपात ऋतुसे पहले, मध्यमें वा अन्तमें कर्णके मूलमें सूजन होती है, वह क्रमसे असाध्य कष्टसाध्य और सुखसाध्य होती है, ऐसा मुनिजन कहते हैं ॥ ४८ ॥

कुलत्थंकदफलंशुण्ठीकारवीचसमांशका ।

सुखोष्णलेपनंकार्यकर्णमूलेमुहुर्मुहुः ॥ ४९ ॥

अर्थ—कुलथी, कायफल, सोंठ, अजवायन यह सब बराबर किंचित् गरम जलके साथ कानकी जड़में बारंबार लेप करें ॥ ४९ ॥

बीजपूरकमूलानिअग्निमंथस्तथैवच ।

नागरदेवकाष्ठंचरास्नाचित्रकपेशितम् ॥ ५० ॥

प्रलेपनमिदंश्रेष्ठं कर्णशोथविनाशनम् ॥ ५१ ॥

अर्थ—बिजौरा, नींबूकी जड़, अरणी, सोंठ, देवदारु, रास्ना, चित्रक इन सबको पीसकर कर्णमूलपर लेप करें तो सूजन दूरहो ॥ ५० ॥ ५१ ॥

अथ सान्निपातरम् ।

त्र्यूपणंपंचलवणंशतपुष्पाद्विजीरकम् ।

क्षारत्रयंसमांशेनचूर्णमेपांपलत्रयम् ॥ ५२ ॥

अर्थ—सोंठ, मिर्च, पीपल, पांचोन्नोत, सोंफ, दोनों जीरे, तीनों क्षार यह सब बराबर भाग लेकर इनका चूर्णकर तीन पल ले ॥ ५२ ॥

शुद्धसूतंमृतंचाभ्रंगंधकंचपलंपलम् ॥

आर्द्रकस्पर्शसेखल्वेदिनमेकंविमर्दयेत् ॥ ५३ ॥

अर्थ—शुद्धपारा, अभ्रककी भस्म, गंधक यह एक-एक पल एक दिन पर्यन्त अद्रव्यके रसमें रारल करें ॥ ५३ ॥

वीरभद्रोरसःख्यातोमापैकःसन्निपातजित् ।

चित्रकार्द्रकसिंधूत्थमनुपानजलैःसह ॥ ५४ ॥

अर्थ-यह वीरभद्ररस है एक उरदके बराबर खानेसे सन्निपात दूर होता है इसके ऊपर चित्रक, अदरक, सेंधानोंन जलके साथ पिये ॥ ५४ ॥

पथ्यंशीरौदनंदेयंद्विवारंचरसोहितः ॥ ५५ ॥

अर्थ-तथा दूधभातका पथ्य दोबार दे तो हितकरै ५५॥

ज्वरस्य दशोपद्रवाः ।

श्वासोमूर्च्छारुचिच्छर्दिस्तृष्णातीसारविड्ग्रहाः ।

हिकाकासांगभेदाश्चज्वरस्योपद्रवादश ॥ ५६ ॥

अर्थ-श्वास, मूर्च्छा, अरुचि, छर्दि, तृष्णा, अतिसार, दस्तका न आना, हिचकी, खांसी, हडकूटन यह ज्वरके दश उपद्रव हैं ॥ ५६ ॥

त्रिकटुशटीवनशृंगीर्दभशाकंचपौष्करंसपदि ।

श्वासंजयति पयोधरसुधालतामूलजलपीतम् ॥ ५७ ॥

अर्थ-त्रिकुटा, कपूर, नागरमोथा, काकडासींगी, गर्दभशाक (भारंगी) पुष्कामूल यह कसेरु, गिलोय, मालकांगनी, पीपलामूलके साथ पीनेसे श्वास ठीक होताहै ॥ ५७ ॥

मूर्च्छायामिहकृतमालहारहूराकट्ठीभिस्सन-

लदपर्पटाभयाभिः । संशीतंजलमिति सिद्ध-

मिष्टभुक्तं लेहोवामधुत्रिवृतासिताभयाभिः ॥ ५८ ॥

अर्थ-मूर्च्छामें अमलतासका गूदा, मुनक्का, कुटकी, खस, पित्तपापडा, हरड इनका चूर्णकर शीतल जलके साथ सेवन करनेसे अथवा शहत, निशोथ, मिश्री हरड यह चाटनेसे मूर्च्छा दूर होतीहै ॥ ५८ ॥

अरुचौतुतिक्तरसैरसकृत्कवलग्रहस्तथाम्लरसेः ॥

मधुलवणमातुलुंगीफलकेसरधारणं वक्त्रे ॥ ५९ ॥

अर्थ-अरुचिमें तिक्तरस अथवा अम्लरसका कवल (ग्रास) धारण करना, अथवा शहद, लवण, विजोरा, नींबू और नारियलकी छाल मुखमें धारण करनी चाहिये ॥ ५९ ॥

मयूरपिच्छस्यमपीसुकृष्णा

मध्वन्वितावाकतुकासधातुः ।

काथोगुडूच्याः समधुः सुशीतः

पीतः प्रशान्तिवमनस्यकुर्यात् ॥ १६० ॥

अर्थ-मोरपंखकी चन्द्रिकाको जलाकर शहदके साथ चाँटे अथवा कुटकीका सेवन करे अथवा शहद डाल कर गिलोयका काठा शीतल कर पिये तो वमनक शान्ति होती है ॥ १६० ॥

दंतशठबीजपूरकदाडिमददरैः सचुक्रकैर्वदने ।

लेपोजयतिपिपासामथरजतगुटीमुखांतःस्था ॥ ६१ ॥

अर्थ-जम्बीरी, नींबू, विजोरा, नींबू, अनार, घेर, चूक (अम्लघेन) इनका लेप मुखमें करनेसे पिपासा दूर होती है अथवा चाँदीकी डेली मुखमें डालनेसे प्यास शान्त होती है ॥ ६१ ॥

पाठामृतापर्पटमुस्तविश्वाक्किगततिक्तेन्द्रियवा-

न्विपाच्य । पिवज्वरज्वेनसर्वज्वरातिसागान-

तिदुर्निवारान् ॥ ६२ ॥

अर्थ-पाट, गिलोय, पिसपावटा, मोथा, सोंठ, चिरायता, कुटकी, इन्द्रजो इनको बराबर ले इनका काठा कर देनेसे कठिन और दुर्निवार ज्वरातिसार दूर होना है ६२।

१ नीमर, गिलोय, अदृष्ट आदि ।

विबन्धेवातजित्कर्मकुर्यादत्रानुलोमनम् ।

मलंप्रवर्तयेदाशुतीक्ष्णाभिःफलवर्त्तिभिः ॥ ६३ ॥

अर्थ—यदि विबन्ध अर्थात् रोगीको दस्त न आताहो वात पेटमें घुमड रहीहो तो वातजित् और वातको नीचेकी ओर प्रवृत्त करनेवाले कर्म करने चाहिये और फलवर्ती अर्थात् हाथके अँगूठेके प्रमाण मोटी और चिकनी मलके प्रवृत्त करनेवाली वर्ती गुदामें घी लगाकर प्रवेश करें । तीक्ष्ण फलवर्ती द्वारा शीघ्र मलको बाहर निकालें ॥ ६३ ॥

नीरेणसिंधूत्थरजोतिसूक्ष्मं

नस्येननूनंविनिहन्तिहिक्काम् ॥ ६४ ॥

अर्थ—जलमें थोड़ा समुद्रलवण डालकर नास लेनेसे हिचकी दूर होतीहै ॥ ६४ ॥

कामेकणाकणामूलकलिंगफलजंरजः ।

सविश्वभेषजंलिह्यान्मधुनाववृषाद्रसम् ॥ ६५ ॥

अर्थ—खांसीमें पीपल, पीपलामूल, इन्द्रजौ, बहेडा और सोंठ इनको बराबर ले शहदके साथ अथवा विसौंटेके रससे सेवन करनेसे खांसी दूर होतीहै ॥ ६५ ॥

दाहेज्वराविरोधेनयथाशास्त्रंहिमोविधिः ।

ज्वरेशान्तेप्रणश्यन्तिसद्यःसर्वेप्युपद्रवाः ॥ ६६ ॥

अर्थ—ज्वरदाहमें ज्वर विगड न जाय इस प्रकार शास्त्रानुसार हिम (शीतल औषधी) की विधि करनी चाहिये ज्वरके शान्त होनेमें सद्य उपद्रव शान्त होजातेहैं ॥ ६६ ॥

विष्णुंसहस्रमूर्धानंचराचरपतिंप्रभुम् ।

स्तुवन्नाम्नांसहस्रेणज्वरान्सर्वानपोहति ॥ १६७ ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानन्दभट्टविरचिते

वैद्यरत्ने प्रथमः प्रकाशः ॥ १ ॥

अर्थ-विष्णु सहस्र शिर चराचरपति प्रभु नारायणकी
सहस्रनामसे स्तुति करनेसे सब ज्वर नष्ट होजाते हैं ॥ १६७॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानन्दभट्टविरचिते वैद्यरत्ने षष्ठितन्त्रज्वालाप्रभाद-

मिश्ररत्नभाषाटीकायां प्रथम प्रकाशः ॥ १ ॥

अथातीसारः ।

संशम्यापांधातुरग्निप्रवृद्धः

शकृन्मिश्रोवायुनाधःप्रणुन्नः ।

सरत्यतीवासारंतमाहु-

व्याधिघोरंपद्भिर्धतंवदन्ति ॥ १ ॥

अर्थ-जलके धातु जो कफ, रस, मूत्र, स्वेद, मेद, पित्त और
रक्त इत्यादि अधिक बढ़कर जठराग्निको मन्दकर वायुसे
प्रेरित मलको बारंबार गिराते हैं इस घोर व्याधिका नाम
वैद्योंने अतीसार कहाहै. एक एक दोपसे तीन, एक सन्निपात
से, एक शोकसे, एक आमसे इस प्रकार छः प्रकारका है ॥ १ ॥

नागरंधान्यमुस्तंचवालकं विल्वमेवच ।

आमशूलविष्वग्घ्नपाचनंवह्निदीपनम् ॥ २ ॥

अर्थ-सोंठ, धनियाँ, नागरमोथा, नेत्रयाला, बेलगिरी इन
औषधोंका पाचन देनेसे आमशूल विष्वग्घ्न दूर होताहै, यह
पाचन और अग्नि दीन करनेवाला है ॥ २ ॥

पित्तेधान्यचतुष्कंतुशुंठीत्यागाद्वदंतिहि ।

ह्रीवेरातिविषामुस्तविल्वनागरधान्यकम् ॥ ३ ॥

अर्थ-यदि पित्तसे अतिसार हो तो धनियाँ आदि चार औषधी लेनी सोंठ न डालनी ह्रीवेर, अतीस, नागरमोथा, बेलकी गिरी, सोंठ, धनियाँ ॥ ३ ॥

पिबेत्पिच्छाविवंधग्रंशूलदोषमपाचनम् ।

सरक्तंहन्त्यतीसारंसज्वरंवाथविज्वरम् ॥ ४ ॥

अर्थ-इसके पान करनेसे विबंध, शूलदोष और अपाचन दूर होता है, रक्तातीसार ज्वरके सहित अथवा बिनाज्वरके हो वह दूर होता है ॥ ४ ॥

कुटजोवह्निचूर्णञ्चमधुनासहलेहितम् ।

चिरोत्थितमतीसारंपक्वपित्तास्रजंजयेत् ॥ ५ ॥

अर्थ-कुरैया, चीत्तिका चूर्ण कर शहद के साथ चाटनेसे चिरकालसे हुए अतिसार और पक्व पित्तातिसार को दूर करता है ॥ ५ ॥

कुटजातिविषामुस्तंवालकंलोध्रचंदनम् ।

धातकीदाडिमंपाठाक्राथंक्षौद्रयुतंपिबेत् ॥ ६ ॥

अर्थ-कुरैया, अतीस, नागरमोथा, सुगंधवाला, लोध, लाल चन्दन, धवईके फूल, दाडमी, पाठ इनका काढा कर शहद के साथ पीनेसे ॥ ६ ॥

दाहेरक्तेसशूलेचआमरोगेचदुस्तरे ।

कुटजाष्टमिदंरुग्यातंसर्वातीसारनाशनम् ॥ ७ ॥

अर्थ-दाह, रक्तशूल, दुस्तर आमरोग दूर होते हैं, यह कुटजाष्टक सब अतीसारोंका नाश करनेवाला है ॥ ७ ॥

स्निग्धंघनंकुटजवल्कमजंतुजग्ध-

मादायतत्क्षणमतीवचपोथयित्वा ।

जंवृपलाशपुटतंडुलतोयसिक्तं

बद्धंकुशेनचत्रहिर्वनपंकलितम् ॥ ८ ॥

अर्थ—कुरैयाकी छाल चिकनी मोटी कठिन कीड़े आदिकी खाई न होय वह ताजी लेकर कूटे फिर उसके गूदीको जामुनके पत्तोंमें लपेट उसपर टाकके पत्ते लपेटकर चावलके धोवनसे पत्ते और लुगदीको छिड़कर फिर लपेट बाहर कुशसे लपेट ऊपर गाढीमट्टीका लपेट करे ॥ ८ ॥

सुस्विन्नमेतदवपीडयरसंगृहीत्वा

क्षौद्रेणयुक्तमतिसारवतेप्रदद्यात् ।

कृष्णात्रिपुत्रमतपूजितएपयोगः

सर्वातिसारहरणेस्वयमेवराजा ॥ ९ ॥

अर्थ—फिर इस गोलेको पुटपाकके अनुसार पकावै जब पक जाय तब उसको निचोड़के रस निकाल ले और सहद मिलाकर परिभाषामें कही मात्राके अनुसार अभिसारवाले को देना यह कुटजपुटपाकका योग सब अतिसारोंके हरनेमें स्वयं राजा है यह कृष्णात्रिपुत्रका श्रेष्ठ मत है ॥ ९ ॥

एरण्डमूलस्वरसेनशुण्ठ्याः

कल्कंसुपिष्टंपुटपाकयोगे ।

क्षौद्रेणलीढंविनिहन्तिशीघ्र-

मामातिसारारुचिशूलमुग्रम् ॥ १० ॥

अर्थ—अण्डकी जड़के स्वरसमें सोंठका कल्क पुटपाकके योगसे पीसकर बनावे यह सहदके साथ चाटनेसे आमातिसार अरुचि और शूलको दूर करना है ॥ १० ॥

यथाशृतं भवेद्वारितथानीमारनाशनम् ॥ ११ ॥

अर्थ-जितना औटाहुआ जलहो इसी प्रकार अतिसारका नाश होता है ॥ ११ ॥

अथ संग्रहणी ।

अतीसारनिवृत्तेपिमंदाग्नेरहिताशिनः ।

भूयःसंदूषितोवह्निर्ग्रहणीमपिदूषयेत् ॥ १२ ॥

सादुष्टावद्बुशोभुक्तमाममेवविमुंचति ।

पक्वासरुजंपूतिमुहुर्वह्निमुहुर्द्रवम् ॥ १३ ॥

अर्थ-अतीसार निवृत्त होनेपर अथवा मध्यहीमें जो मन्दाग्निवाला पुरुष अहित पदार्थोंका सेवन करलेता है, तो उस आहारसे दूषितहो अग्नि ग्रहणीको दूषित करता है, (पक्काशय और आमाशयके बीचमें एक अन्न ग्रहण करनेवाली आंतको ग्रहणी कहते हैं) वह वातादि दोषसे दुष्ट हुई ग्रहणी भोजन किये आहारको कच्चाही बहुतसा बाहर निकला देती है, अथवा पीडा और दुर्गन्धि सहित पकेको भी कभी बँधा और कभी पतला गिराती है इसे ग्रहणी कहते हैं ॥ १२ ॥ १३ ॥

धान्यविल्ववलागुण्ठीशालिपर्णीशृतंजलम् ।

स्याद्वातग्रहणीदोषे सानादेसपरिग्रहे ॥ १४ ॥

अर्थ-धानियाँ, बेलगिरी वरिआरी, सोंठ, शालपर्णी इनका काढाकर देनेसे घात अतिसार आनाह रोग दूरहोते हैं ॥ १४ ॥

मुस्तावालकलोध्रवत्सकवृकीविश्वारलथ्रीमदा-

लज्जामोचरसाम्रकौटजविपाचूर्णस्तुगंगाधरः ।

पीतस्तंदुलवारिमाक्षिकयुतःकर्पोन्मितोवाहिका-

मुग्रांचग्रहणीनिवन्तिसहसासर्वातिसारामयान् १५ ॥

अर्थ-नागरमोथा, नेत्रशाला, लोध्र, कुरैयाकी छाल, पाठा,

सोंठ (अरलु) टेंट, बेलकी गिरी, लज्जालु, मोचरस, आमकी
 गुठली, इन्द्रजौ, अतीस, इनको बराबर ले गंगाधर चूर्ण
 बनावे यह चूर्ण चाबलोंके धोवनके साथ शहद मिलाकर
 एककर्म मात्र पान करनेसे तीक्ष्ण संग्रहणी और सब अती-
 सारके रोगोंको शान्त करता है ॥ १५ ॥

नागरातिविषामुस्तंधातकीसरसांजनम् ।

वत्सकत्वक्फलंविल्वंपाठाकटुकरोहिणीम् ॥ १६ ॥

पिवेत्समांशतश्चूर्णसक्षौद्रंतदुलांबुना ।

पैत्तिकेग्रहणीदोषेरक्तं यच्चोपवेश्यते ॥ १७ ॥

अशांस्यथगुदेशूलं जयेच्चैव प्रवाहिकाम् ।

नागराद्यमिदंचूर्णकृष्णात्रेयेण पूजितम् ॥ १८ ॥

अर्थ—सोंठ, अतीस, नागरमोथा, धवईके फूल, रसोत, कु-
 रैयाकी छाल, इन्द्रजौ, पाठ, बेलगिरी और कुटकी इनका
 चूर्ण चाबलके धोवन और शहदके साथ पिये तो रक्तस-
 हित पित्तग्रहणी नष्ट हो यह नागरादिचूर्ण कृष्णात्रेयनें
 कहा है ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

शुद्धाहिफेनवलिसूतकपर्दभस्म-

हालाहलोपणविशुद्धसुवर्णबीजैः ॥

अंभोधिपंक्तिकरशैलवराष्ट्रविंश-

त्यंशैर्विचूर्णिततमेग्रहणीकपाटः ॥ १९ ॥

अर्थ—शुद्ध अफीम ४ भाग, गंधक १० भाग, पारा २ भाग,
 कौडीकी भस्म ७ भाग, हालाहल १ भाग, शुद्ध धतूरेके
 बीज २० भागले सबका चूर्ण करे तो यह ग्रहणीकपाटरस
 हो ॥ १९ ॥

बल्लोस्यहन्तिमधुनासहजीरकेण

भुक्तोतिसारमपिसंग्रहणीमुदग्राम् ।

आमंविपाच्येसहसाजनयत्यवश्यं

वैश्वानरंजठरवर्त्तिनमार्तिभाजः ॥ २० ॥

अर्थ-दो रत्ती रस शहद और जीरेके साथ सेवन करनेसे प्रबल संग्रहणी और अतिसारको दूरकर आमको पचाय आग्निको प्रज्वलित करता है ॥ २० ॥

भैषज्यमेकतःसर्वग्रहण्यांतक्रमेकतः ।

पथ्यंमधुरपाकित्वान्नचपित्तप्रकोपनम् ॥ २१ ॥

अर्थ-संग्रहणीमें सब औषधि एक ओर और तक्र एक ओर है यह पथ्य पचनेमें मधुर और पित्तका कोप करनेवालाभी नहीं है ॥ २१ ॥

कपायोष्णविपाकित्वाद्देशद्याच्चकफेहितम् ।

वातेस्वाद्वम्लसांद्रत्वात्सद्यःकुमविदाहितम् ॥ २२ ॥

अर्थ-यह कषाय उष्णविपाकी होनेसे तथा विशद होनेसे कफमें हितकारक है, वातमें स्वादु तथा अम्ल सान्द्र होनेसे तत्काल कुम और दाहको दूर करता है ॥ २२ ॥

तावत्संवर्द्धयेत्तक्रंयावत्स्याद्बद्धविद्धता ।

ततस्तद्धासयित्वातदन्नसंभोजयेत्क्रमात् ॥ २३ ॥

अर्थ-तबतक मट्टेको बढ़ाता रहे जबतक मलबन्धहो फिर उसे ग्यून करताहुआ क्रमसे अन्नका सेवन करे ॥ २३ ॥

भयार्थः ।

पृथग्दोषैःसमस्तैश्चशोणितात्सहजानिच ।

अर्शांसिपदप्रकाराणिविद्याद्बद्धवलित्रये ॥ २४ ॥

अर्थ-पृथक् २ तीनों दोष तीनों मिलके एक चौथा तथा रक्तसे पांचवा और सहज छटवाँ इस प्रकार बवासीर रोग छः प्रकारका है ॥ २४ ॥

दोषास्त्वङ्मांसमेदांसिसंदूष्यविविधाकृतीन् ।

मांसांकुरानपानादौकुर्वत्यर्शांसिताञ्जगुः ॥ २५ ॥

अर्थ-त्वचा मांस और मेदको दूषित करके वातादि दोष अनेक प्रकारके मांसके अंकुरोंको गुदाआदिमें उत्पन्न करतेहैं उन अंकुरोंको अर्श कहतेहैं यह नासिका आदिमें भी होता है ॥ २५ ॥

मरिचमहौषधिचित्रकसूरणभागायथोत्तरं द्विगुणाः ।

सर्वसमोगुडभागः प्रोक्तोयमोदकः प्रसिद्धफलः ॥

ज्वलनंज्वलयतिजठरमुन्मूलयतिप्रभृतिगुल्मगदान् ।

निःशेषयतिश्लीपदमर्शांसिचनाशयत्याशु ॥ २६ ॥

अर्थ-कालीमिर्च १ भाग, सोंठ २ भाग, चित्रक ४ भाग जिमीकंद ८ भाग ऐसे एकसे एक दना लेकर सबके समान १५ भाग गुड लेकर लड्डू बना सेवन करे । यह सूरण मोदक जठराग्निको मदीत करता है गुल्म और शलादि श्लीपद और अर्शरोगोंको दूर करता है ॥ २६ ॥

शुण्ठीकणामरिचनागदलत्वगेलं

चूर्णीकृतंक्रमविवर्द्धितमेतदंत्यात ।

खादेन्नरः समसितं गुदजाग्रिमाम्बु-

गुल्मारुचिश्चसनकण्ठहृदामयेषु ॥ २७ ॥

अर्थ-सोंठ १ भाग, पीपल २ भाग, कालीमिर्च ३ भाग, नागकेशर ४ भाग, तेजपात ५, दालचीनी ६, नज ७, इलाय

यची छोटी ८ भाग इसप्रकार क्रमसे बढायेहुए इन औष-
धोंका चूर्णकर उसकी बराबर मिश्री मिलाकर खाय तौ
बवासीर, मन्दाग्रि, गुल्म, अरुचि, श्वास, कंठरोग,
हृदयरोग यह दूर होते हैं ॥ २७ ॥

चूर्णीकृताःपोडशसूरणस्यभागास्तदद्धनवचित्रकस्य ।

महौषधाद्धमरिचस्यचैकोगुडेनदुर्नामजयायपिण्डी २८

अर्थ—जिमीकंद चूर्णकिया हुआ १६ भाग, चीता आठ
भाग, सोंठ २ भाग, काली मिर्च एकभाग यह एकत्र कर
गुडके साथ खानेसे बवासीर रोग दूर होता है ॥ २८ ॥

तक्रंसकृष्णंपिवतांनराणांदुर्नामनामश्रवणंकुतःस्यात् ।

यथासर्वाणिकुष्ठानिहतःखदिरवीजकौ ।

तथैवाशांसिसर्वाणिवृक्षकारुष्करौहतः ॥ २९ ॥

अर्थ—जो मनुष्य मट्टेमें काली मिर्च डालकर पीते हैं
उनको बवासीर नहीं रहती जिस प्रकार खैरसार, विजय-
सार, सब कुष्ठोंको दूर करतेहैं, इसीप्रकार कुडे और भिला-
वेका प्रयोग सब प्रकारसे अर्शरोग दूर करता है ॥ २९ ॥

हरिद्रायाःप्रयोगेणप्रमेहाइवपोडश ।

क्षाराग्निभ्यांनिवर्त्ततेतथादृश्यागुदोद्भवाः ॥ ३० ॥

अर्थ—जैसे हरिद्राके प्रयोगसे सोलह प्रमेह नष्ट होते हैं
इसीप्रकार क्षार और अग्निके प्रयोगसे बवासीरके मस्से
नष्ट होजाते हैं ॥ ३० ॥

मृल्लिप्तंसौरणंकन्दंपक्त्वाग्नौपुटपाकवत् ।

दद्यात्सतैललवणंदुर्नामविनिवृत्तये ॥ ३१ ॥

अर्थ-जिमीकंदको मिट्टीमें लपेटकर पुटपाककी विधिसे पकावे उसमें तेल और लवण मिलाकर देनेसे गुदाके मस्से नष्ट होते हैं ॥ ३१ ॥

नवनीततिलाभ्यासात्केशरनवनीतशर्कराभ्यासात् ।
केशरदधिमथिताभ्यासाद्भुदजाः शाम्यन्तिरक्तवहाः ३२॥

अर्थ-काल तिल और मक्खनके नित्य अभ्याससे तथा नागकेशर मक्खन मिश्रीके नित्य अभ्याससे अथवा दहीके पानी और मट्ठाके नित्य अभ्याससे बवासीरके मस्से शान्त होते हैं ॥ ३२ ॥

देवदालीकपायेणशौचमाचरतानृणाम् ।

किंवातद्धूमसेवाभिःकुतःस्याद्भुदजांकुरः ॥ ३३ ॥

अर्थ-अथवा बन्दालीके काढ़ेसे शौच करनेसे अथवा उसका धूम देनेसे बवासीरके मस्से नहीं रहते ॥ ३३ ॥

सिन्धूत्थं देवदाल्याश्च बीजं कांजीकपेपितम् ।

गुदांकुरान्प्रलेपेन पातयेदुत्त्वणानपि ॥ ३४ ॥

अर्थ-सिंधालवण बन्दालके बीज कांजीके साथ पीसकर लेप करनेसे कठिन बवासीरके मस्से भी नष्ट होजाते हैं ३४
अप्याजीर्णम् ।

प्रकृत्यारसशोषाद्वात्रिभिर्दोषैरपाकृतः ।

भवन्ति पण्डजीर्णानि वैषम्यादशनस्य च ॥ ३५ ॥

व्योषसिन्धूत्थवलिभिरेकद्वित्रिलवैः कृतः ।

निवाम्बुमर्दितंगाढनाम्नाक्षुद्रो धनोरसः ॥ ३६ ॥

सपादटंकमात्रो यं भुक्तः क्षुत्कारको भृशम् ।

आलिप्य जठरं प्राज्ञोर्हि गुणैः नृपणैः न्ववैः ॥ ३७ ॥

पथ्यापिप्पलिसंयुक्तचूर्णसौवर्चलंपिबेत् ।

मस्तुनोष्णोदकेनाथमत्वादोपगतिंभिंपक् ॥ ३८ ॥

अर्थ-स्वभावसे रस शेष रहनेसे ते-गें दोषोंके विकारसे अथवा भोजनके विपरीत पनेसे अजीर्ण होता है, वह अजीर्ण छः प्रकारके हैं सोंठ, मिरच, पीपल, तीनों एक तोला, सेंधानोन २ तोले गंधक ३ तोले, इन सबको कूट पीस नाबूके रसमें खरल करे यह छुद्रोधन रस है इसके खानेसे भूख बढ़ती है ३ मासेकी मात्रा है इससे बहुत भूख लगती है चुद्धिमान पेटके ऊपर हींग, सोंठ, मिरच, पीपल, सेंधानोन गरम पानीसे पेटके ऊपर लेप करके दिनमें सो रहै तो सब अजीर्ण शान्त होजाता है । हरड, पीपल, सोंचरलौनका चूरन दहीके पानीसे अथवा गरम पानीसे दोषका बलाबल देख पीनेको दे ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

चतुर्विधमजीर्णचमंदानलमथारुचिम् ।

आध्मानंवातगुल्मंचशूलंचाशुनियच्छति ॥ ३९ ॥

अर्थ-इससे चारों प्रकारका अजीर्ण मन्दाग्नि अरुचि अफारा वात गुल्म और शूलका शीघ्र ही नाश होता है ३९

त्रिकटुकमजमोदंसैन्धवंजीरके द्वे

समधरणिघृतानामष्टमोहिंशुभागः ।

प्रथमकवलभुक्तंसर्पिपाचूर्णमेत-

ज्जनयतिजठराग्निंवातरोगान्निहंति ॥ ४० ॥

अर्थ-सोंठ, मिर्च, पीपल, अजमोद, सेंधानमक, दोनों जीरे यह समान भाग ले इनसे आठवाँ भाग भूनी हींग ले यह चूर्ण घृतके साथ पहले आसमें खाय तो जठराग्नि तीव्र होकर वातरोगों को दूर करती है ॥ ४० ॥

हिंशुभागोभवेदेकोवचाचद्विगुणामता ।

पिप्पलीत्रिगुणाज्ञेयाशृंगवेरंचतुर्गुणम् ॥ ५१ ॥

यवानीस्यात्पंचगुणापङ्गुणाचहरीतकी ।

चित्रकंसप्तगुणितंकुष्ठंचाष्टगुणंमतम् ॥ ५२ ॥

एतद्वातहरंचूर्णपीतमामप्रशान्तये ।

पिवेदध्रामस्तुनावासुरयाकोष्णवारिणा ॥ ५३ ॥

अर्थ—हींग एकभाग, वच दो भाग, पीपली तीनभाग, अदरक चारभाग, अजवायन पांचभाग, हरद छःभाग, चीता सातभाग, कूठ आठभाग, यह औषधी एकत्र कर चूर्ण बनावै, यह चूर्ण वातहर, आमनाशक है. इसको दही-के पानी अथवा गरम जलके साथ ले अथवा सुरा या लह-सनके साथ ले ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

सोदावर्तमजीर्णचप्लीहानमुदरंतथा ।

अंगानियस्यशीर्यन्तेविपंवायेनभक्षितम् ॥ ५४ ॥

अर्थ—उदावर्त, अजीर्ण, प्लीहा, उदररोग नष्ट होते हैं, जिसके अंग विशीर्ण होते हों अथवा जिसने विषभक्षण किया हो ५४

चूर्णमग्निमुखं नाम सर्वोपद्रवमाहरेत् ।

हरीतकीभक्ष्यमाणानागरेण गुडेन वा ॥ ५५ ॥

अर्थ—यह अग्निमुखनाम चूर्ण सब उपद्रव दूर करता है । सोंठ और गुडके साथ हरद खानेसे ॥ ५५ ॥

सेन्धवोपहितावापिशीतत्वेनाग्निदीपनी ।

शुंठीचूर्णसमायुक्तं यवक्षारं समालिहेत् ॥ ५६ ॥

अर्थ—चा सेंधवके साथ खानेसे शीतमें अग्नि दीप्त करती है । जो सोंठके चूर्णके साथ जवाखार ॥ ५६ ॥

सर्पिपाप्रातरुत्थायनरोवह्निप्रदीपनम् ।

विजयापिप्पलीशुंठीत्रिसमंपरिकीर्तितम् ॥

अग्निसंदीपनं नृणां त्रिदोषामयनाशनम् ॥ ५७ ॥

सैन्धवसमूलमगधाचव्यानलनामहरीतक्यः ॥

क्रमवृद्धाग्निविवृद्धिं करोति वडवानलं चूर्णम् ॥ ५८ ॥

अर्थ—धीके साथ प्रातःकाल उठकर खाय तो अग्नि प्रदीप्त होती है, भंग, पीपल, सोंठ यह मनुष्यों के त्रिदोष शान्त करने वाली हैं और अग्नि दीप्त करती हैं. यह तीनों बराबर लेकर सेवन करें. सेंधानिमक १ भाग, पीपलामूल २ भाग, पीपल ३ भाग, चव्य ४ भाग, चीतेकी छाल ५ भाग और जंगी हरड ६ भाग, इस क्रमसे इन औषधियों का चूर्ण बनावें. यह वडवानल चूर्ण अग्निको बढ़ाता है ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

पथ्यानागरपिप्पलीसरुचकैः श्यामान्वितैः पंचभि-

श्रूर्णपंचसमं समस्तरुचिकृत्कामाग्निसंदीपनम् ॥

प्राणोत्साहविवर्द्धनं रुचिकरं प्लीहापहं गुल्मनुत् ।

प्रत्याध्मानगरोदरार्शशमनं चामेनिले पूजितम् ॥ ५९ ॥

अर्थ—हरड, सोंठ, पीपल, काला नौंग, पीपलमूल यह पांचो वस्तु बराबर ले इनका चूर्ण कर सेवन करनेसे रुचि करनेवाला तथा कामाग्निको दीप्त करनेवाला है. प्राणमें उत्साह बढ़ानेवाला, रुचि करनेवाला, प्लीहा गुल्म हरनेवाला प्रत्याध्मान गर उदर अर्शको शान्त करता, आम और वात रोगमें श्रेष्ठ है ॥ ५९ ॥

शुद्धं सूतं गंधकं च पलमानं पृथक् पृथक् ।

हरीतकी च द्विपलानागरस्त्रिपलः स्मृतः ॥ ६० ॥

कृष्णाचमरिचंतद्वत्तिसधूत्थंत्रिपलंपृथक् ।

चतुष्पलाचविजयामर्दयेन्निम्बुकद्रवैः ॥ ६१ ॥

पुटानिसतदेयानिघर्ममध्येपृथक्पृथक् ।

अजीर्णारिरयंप्रोक्तःसद्योदीपनपाचनः ॥

भक्षयेद्दिगुणंभक्ष्यंपाचयेद्रेचयेदपि ॥ ६२ ॥

अर्थ—शुद्धपारा ४ तोले, गंधक ५ तोले, हरद ८ तोले, सोंठ १२ तोले, पीपल, मिर्च, सैधानोन प्रत्येक बारह २ तोले, भांग १६ तोले इन सबका चूर्णकर धूपमें नोडूके रसकी सात पुटदे यह अजीर्णारिरस दीपन पाचनहै इसके सेवनसे मनुष्य दूना भोजन करनेलगताहै यह दस्तावर भी है ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

अथ विसूचिना ।

सूचीभिरिवगात्राणितदन्संतिष्ठतेऽनिलः ।

यस्याजीर्णेनसावैद्यैर्विसूचीतिनिगद्यते ॥ ६३ ॥

अर्थ—जिस अजीर्णमे अंगमें वायु रहकर सुई छेदनेकीसी पीडा करै, वद्य उसको विसूचिका कहते है. इस रोगमें अपरिमित आहारबाले प्रसिद्ध होते हैं ॥ ६३ ॥

दुष्टं तमुक्तंकफमारुनाभ्यां

भवर्तते नोर्द्धमधश्चयस्य ।

विलंबिकांतांभृशदुश्चिकित्स्या-

ग्नाचक्षतेशास्त्रविदःपुगणाः ॥ ६४ ॥

कुष्ठसैन्धवयोःकल्कश्चुक्रतैलसमन्वितः ।

विसूच्यामर्दनकोष्णखलीशूलनिवारणम् ॥ ६५ ॥

अर्थ—कूठ और सैन्धवके कल्कमें चूका और तेल भिला कर विसूचिका रोगमें गरम २ मर्दन करे, यह खली और शूलका नाशक है ॥ ६५ ॥

मातुलुंगीजटाव्योपनिशाबीजंकरंजकम् ।

कांजिकेनांजनहन्याद्विसूचीमतिदारुणाम् ॥ ६६ ॥

अर्थ—विजैरेकी जड़, सोंठ, मिर्च, पीपल, हलदी, करंजके बीज इनका चूर्णकर कांजीके रसकी भावना दे गोलीकर छायामें सुखाय नेत्रोंमें अंजन करनेसे दारुण विसूचिकारोग शान्त होता है ॥ ६६ ॥

पथ्यावचाहिङ्गुकलिङ्गभृङ्गैः

सौवर्चलैःसातिविपैःसुचूर्णम् ।

तुपांबुपीतंविनिहंत्यजीर्णं

शूलं विसूचीमरुचिचसद्यः ॥ ६७ ॥

अर्थ—हरड़, वच, हिङ्गु, इन्द्रजौ, भांगरा, सोंचरलोन और अतीस, धानकी भूसीके जलके साथ इस चूर्णको सेवन करनेसे शूल विसूचिका और अरुचि दूर होती है ६७॥

अथ कृमिः ।

ज्वरोविवर्णताशूलहृद्रोगःश्वसनभ्रमः ।

भक्तेद्वेषातिसारश्चसंजातकृमिलक्षणम् ॥ ६८ ॥

अर्थ—पेटमें कृमि हुआका लक्षण कहते हैं—अंगमें ज्वर, शरीरका रंग विरंग, शूल, हृदयमें पीडाके भ्रम, अन्नमें द्वेष तथा अतिसार यह पेटमें कृमि होनेके लक्षण हैं ॥ ६८ ॥

दाडिमीत्वक्कृतःक्वाथस्तिलतैलेनसंयुतः ।

त्रिदिनात्पातयत्येवकोष्ठतःक्रिमिजालकम् ॥ ६९ ॥

अर्थ-दाडिमीके छिलकेका क्वाथ, तिलके तेलसे संयुक्तकर पानकरनेसे तीन दिनमें पेटसे कीड़ा निकालेदेता है ॥ ६९ ॥

पारसीकयवानीकाःपीताःपर्युपितवारिणाप्रातः ।

गुडपूर्वाःकृमिजालंकोष्ठगतंपातयंत्याशु ॥ ७० ॥

अर्थ-प्रातःकाल उठकर गुड खाना फिर कुछ देरमें बासी पानीमें बांटकर खुरासान अजवायन पिये ता कोठेसे उत्पन्न हुए कृमिको गिरा देता है ॥ ७० ॥

पालाशबीजस्यरसंपिवेद्वामधुसंयुतम् ।

लेह्यात्क्षौद्रेणवैडंगचूर्णवाक्रिमिकृतनम् ॥ ७१ ॥

अर्थ-पालाशके बीजोंका रस शहदके साथ पिये अथवा बीजोंको बांटकर मट्टेके साथ पिये तो कृमिरोगका नाश होगा ॥ ७१ ॥

अथ पाण्डुरोगः ।

पाण्डुरःश्वासकासार्तःपीतत्वङ्नखलोचनः ।

वम्यग्निसादश्वयथुसहितःपाण्डुरोगवान् ॥ ७२ ॥

अर्थ-श्वास काससे आर्तहुआ, पीतशरीर, नख और पल्ले नैत्रवाला, वमी, अग्निकी मन्दता, शोथयुक्त पुरुष पाण्डुरोगी कहाजाता है, वातादिदोष रक्तमें प्राप्तहो तब चाको पाण्डुरंगको करदेते हैं ॥ ७२ ॥

द्विपञ्चमूलीकथितंसविश्वं

कफात्मकेपाण्डुगदेपिवेत्तम् ।

ज्वरेतिसारेश्वयथौग्रहण्यां

कासेऽरुचौकंठहृदामयेषु ॥ ७३ ॥

अर्थ-दशमूलको लेकर उसमें सोंठ मिलाय इनका काढा कर कफसे उत्पन्न हुए पाण्डुरोगमें पानकरे तो यह ज्वर, अतिसार, सूजन, संप्रहणी, कास, अरुचि, हृदयादि रोगोंमें हितकारी है ॥ ७३ ॥

त्रिफलायागुडूच्यावादाव्यानिम्बस्यवारसम् ।

प्रातःप्रातर्मधुयुतंकामलार्तःपिवेत्ररः ॥ ७४ ॥

अर्थ-त्रिफला, गिलोय, दारुहलदी, नीमका रस, प्रातः काल शहत मिलाकर पीनेसे कामलारोग नाश होता है ७४॥

अथ रक्तपित्तम् ।

क्षारकट्फलतीक्ष्णादेर्दग्धपित्तंदहत्यसृक् ।

तदूर्ध्वाधोविलैर्यातिरक्तपित्तंतदुच्यते ॥ ७५ ॥

अर्थ-कटु अल्म पदार्थ तथा तीक्ष्णक्षार आदिके सेवन करनेसे दग्ध होकर पित्त रुधिरको जलाता है तब वह रक्त ऊर्ध्व वा अधो अथवा दोनों मार्गसे निकलने लगता है, ऊर्ध्वगामी नासिका नेत्र कान मुखसे और अधोगामी लिंगयोनि गुदासे निकलता है ॥ ७५ ॥

पक्वोदुंबरकाश्मर्यपथ्याखजूरगोस्तनी ।

मधुनाहंतिसंलीढारक्तपित्तंनसंशयः ॥ ७६ ॥

अर्थ-पक्के कठुमरके फलका रस शहदके संग पिये खंभारी हरद, छुहारा अथवा दास इनको शहदसे चाटे तो अवश्य रक्तपित्त शान्त होगा इसमें सन्देह नहीं ॥ ७६॥

मध्वाटरूषकरणैर्यदितुल्यभागौ
कृत्वानरःपिवतिपुण्यतरःप्रभाते ।

तद्रक्तपित्तमतिदारुणमप्यवश्य-

माशुप्रशाम्यतिजलैरिववह्निपुञ्जः ॥ ७७ ॥

अर्थ—शहद, अडूसा इन दोनोंको बराबर भाग लेकर जो मनुष्य प्रातःकालमें पान करता है उसका दारुण रक्त-पित्तभी अवश्य शीघ्रतासे शान्त होजाता है, जैसे जलसे अग्नि शान्त होजाती है ॥ ७७ ॥

चन्दनंनलदंलोध्रमुशीरंपद्मकेशरम् ।

नागघुष्पंचविल्वंचभद्रमुस्तंसशर्करम् ॥ ७८ ॥

ह्रीवेरंचैवपाठाचकुटजोत्पलमेवच ।

शृंगवेरंचातिविपाधातकीसरसांजनम् ॥ ७९ ॥

आम्रास्थिजम्बूसारास्थितथामोचरसोपिच ।

नीलोत्पलंसमंगाचसूक्ष्मैलादाडिमीत्वचम् ८० ॥

चतुर्विंशतिरेतानिसमभागानिकारयेत् ।

तंडुलोदकसंयुक्तंमधुनासहयोजयेत् ॥ ८१ ॥

अर्थ—लालचन्दन, जटामांसी, लोध, खस, कमलफूलका केसर नागकेसर बेलगिरी, नागरमोथा, मिश्री, ह्रीविर, सोना-पाठा, कुरैया, कमल, सोंठ, अतीस, धवके फूल, रसौत आमकी गुठली, जामुनकासार गुठली, मोचरस, नीलकमल, मंजीठ, छोटीइलायची, अनारका छिलका, इन चौ-बीस औषधियोंको बराबर भागले और चाबलके जलके संग शहदके साथ चाटे ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥

योगंलोहितपित्तानामर्शसांज्वरिणांतथा ।

भूच्छामदोषसृष्टानांवृण्णार्त्तानांप्रदापयेत् ॥ ८२ ॥

अतीसारंतथाछर्दिस्त्रीणांचापिरजोयहे ।

प्रच्युतानांचगर्भाणांस्थापनंपरिशिष्यते ।

अश्विनोःसंमतयोगोरक्तपित्तनिवर्हणः ॥ ८३ ॥

अर्थ-यह योगरक्तपित्त, अर्श,, ज्वर, मूर्छा, मद, तृष्णाको दूर करता है । अतिसार, छर्दि, स्त्रियोंको रजोधर्म न होता हो तथा गर्भ गिरताहो तो उसका स्थापन होजाता है, यह आश्विनेय संमत रक्तपित्तविनाशी योग रक्तपित्तका नाशकरनेवाला है ॥ ८२ ॥ ८३ ॥

अथ कासः ।

प्राणोद्युदानमन्वेत्ययदोर्द्ध्वमुपसर्पति ॥

तदासंजायतेकासःकंठहृन्नाभिकर्षणः ॥ ८४ ॥

अर्थ-जब अपने दोषोंसे कोपको प्राप्तहो प्राण उदानको साथ मिलकर ऊपरको गमन करताहै तब कंठ हृदय नाभि को आकर्षण कर खांसी उत्पन्न होतीहै ॥ ८४ ॥

पंचमूलीकृतःकाथःपिप्पलीचूर्णसंयुतः ॥

रसान्नमश्रुतो नित्यंवातःकासश्चनश्यति ॥ ८५ ॥

अर्थ-शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटिकटेरी, बड़ीकटेरी और गोखरू इन पाँचोंकी जड़को कूट पीपलीका चूर्ण मिलाय खानेसे वातकी खांसी दूर होती है ॥ ८५ ॥

हरीतकीकणाशुंठीमरिचंगुडसंयुतम् ।

कासघ्नोमोदकःप्रोक्तःसचानलप्रदीपनः ॥ ८६ ॥

अर्थ-हरद, पीपल, सोंठ, मिर्च, गुड इनको बराबर लेकर मोदक बना ले यह कासहर मोदक है और अग्निको दीप्त करता है ॥ ८६ ॥

कदफलंकतृणंभार्ङ्गीमुस्तंथान्यंवचाभया ।

शुंठीपर्पटकंशृंगीसुराह्वंचजलेशृतम् ॥ ८७ ॥

मरिचकैर्पमात्रं स्यात्पिप्पलीकर्पसंमिता ।

अर्द्धकर्पोयवक्षारः कर्पयुग्मं च दाडिमान् ॥ ८८ ॥

एतच्चूर्णीकृतं युंज्यादृक् कर्पगुडेन हि ।

शाणप्रमाणां गुटिकां कृत्वा वक्त्रे विधारयेत् ॥

अस्याः प्रभावात्सर्वेपिकासायांत्येव संक्षयम् ॥ ८९ ॥

अर्थ—कायफल, पिठवन, भारंगी, मोथा, धनियॉ, वच, हरड, सोंठ, पित्तपापडा, काकडाशृंगी, देवदारु इन को जलमें औटाकर फिर उसमें मिर्च १ कर्प, पिप्पली एक कर्प, जवाखार आधा कर्प, दाडिम दो कर्प, यह सब चूर्णकर आठ कर्प गुड मिलावै, शाण (४ मासे) प्रमाण गुटिका बनाकर मुखमें धरै, इसके प्रभावसे सब कास क्षय हो जाती है ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

लवंगजातीफलपिप्पलीनां

भागान्प्रकल्प्याक्षसमानमानान् ।

पैलार्द्धमेकं मरिचस्य दत्त्वा

पलानि च त्वारिमहौषधस्य ॥ ९० ॥

अर्थ—लौंग, जायफल, पीपल इनको बराबरे भाग लें उसमें आधे पल काली मिर्च और चार पल सोंठ डाले ९० ॥

सितासमंचूर्णमिदं प्रसह्य

रोगाननेकान्प्रथलान्निहन्ति ।

कासज्वरारोचकमेहगुल्म-

श्वासानिमाद्यग्रहणीप्रदोषान् ॥ ९१ ॥

कप एक तोला । २ पल ४ तोला ।

अर्थ—इनकी बराबर मिश्री लेकर चूर्ण बनाले तो यह कास, ज्वर, अरोचक, प्रमेह, गुल्म, श्वास, मंदाग्नि, ग्रहणी-आदि अनेक प्रबल रोग दूर करता है ॥ ९१ ॥

अथ श्वासः ।

यैर्निमित्तैर्भवेद्धिकाश्वासस्तैरेवजायते ।

हरीतकीकणाशुण्ठीमरिचंगुडसंयुतम् ॥ ९२ ॥

श्वासघ्नोमोदकःप्रोक्तः परंचानलदीपनः ।

दशमूलीकृतःकाथःपौष्करेणावचूर्णितः ॥ ९३ ॥

अर्थ—जिन कारणोंसे खांसी होतीहै उन्हींसे श्वास होजाताहै । हरद, पीपल, सोंठ, कालीमिर्च, गुड यह सम भाग लेकर इनके मोदक बनाकर खानेसे कास दूरकर अग्नि दीप्त होतीहै । अथवा दशमूलका काढाकर पुष्करमूलका चूर्ण डालकर पिचे तो ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

श्वासकासप्रशमनःपार्श्वशूलनिवारणः ।

गुडशुंठीशिवामुस्तैर्यारयेद्वटिकांमुखे ॥ ९४ ॥

अर्थ—श्वास, कास, पार्श्वशूल दूर होता है, गुड, सोंठ, हरद, नागरमोथा इनकी गुटिका मुखमें धरे ॥ ९४ ॥

श्वासकासेपुसर्वेपुकेवलंवाविभीतकम् ।

कूष्माण्डकशिफाचूर्णपीतंकोप्णेनवारिणा ॥ ९५ ॥

अर्थ—अथवा सब श्वासकासके रोगोंमें केवल मुखमें बहेडा रखना परमहितहै, पेठा और जटामांसीका चूर्ण गरमजलके साथ पीनेसे ॥ ९५ ॥

शीघ्रंशमयतिश्वासंकासंचैवसुदारुणम् ।

सुरसंशृंगवेरस्यमाक्षिकेणसमन्वितम् ॥

पाययेच्छ्वासकासघ्नं प्रतिश्यायकफापहम् ॥ ९६ ॥

अर्थ—दारुणकास श्वास शीघ्र नष्ट हो जाता है, अथवा अदरकका सुरस शहदेके साथ पिलानेसे श्वास, कास, प्रतिश्याय, पीनस और कफरोग दूर होते हैं ॥ ९६ ॥

शृंगीकटुत्रयफलात्रयकंटकारी

भाङ्गीसपुष्करजटालवणानिपंच ।

चूर्णपिवेदशिशिरेणजलेनहिक्का-

श्वासोर्द्ध्वातकफमारुतपीनश्लेपेषु ॥ ९७ ॥

अर्थ—काकडासींगी और हरद, बहेडा, आमला, सोंठ, मिर्च, पीपल, भटकटैया, भारंगी, पुष्करमूल, जटामांसी इन पाँचोंका चूर्ण कर ठंडे जलके साथ लेंनेसे हिचकी, श्वास, ऊर्द्ध्वात, कफवात, पीनसादि रोग दूर होने हैं ॥ ९७ ॥

गुडंकटुकतैलेनभिश्चयित्वासमंलिहेत् ।

त्रिसप्ताहप्रयोगेणश्वासनिःशेषतोजयेत् ॥ ९८ ॥

अर्थ—गुड और कडुआ तेल बराबर मिलाकर चाटनेसे यह प्रयोग तीन सप्ताहमें श्वासरोग को सम्पूर्णनासे नष्ट कर देता है ॥ ९८ ॥

रसगंधविपंचैवटंकणंचमनःशिला ।

एतानिटंकमात्राणिमरिचंचापटंककम् ॥ ९९ ॥

अर्थ—पारा, गंधक, विष, सुहागा और मनसिलको समान भाग ले अर्थात् एक एक टंक ले और काली मिर्च आठ टंक ले ॥ ९९ ॥

एकैकं मरिचं दत्त्वा खल्वेसूक्ष्मं विमर्दयेत् ।

त्रिकटुकं दुपट्कं च दत्त्वा पश्चाद्विचूर्णयेत् ॥ १०० ॥

अर्थ—एक एक मिर्च इसमें डालकर खरलकरता जाय पीछे त्रिकुटा और पीपल, पीपलामूल, चव्य, सोंठ, चीता, कालीमिर्च, डालकर इसका चूर्ण करे ॥ १०० ॥

सर्वमेकत्र संयोज्य काचकुप्यां विनिक्षिपेत् ।

श्वासेकासेचमन्दाग्नीवातश्लेष्मामयेषु च ॥ १ ॥

अर्थ—फिर यह सब एकत्र कर कांचकी मीसीमें रख-छोड़े श्वास, कास, मन्दाग्नि, वात श्लेष्मा रोगमें ॥ १ ॥

गुंजामात्रं प्रदातव्यं पर्णखंडेन धीमता ।

सन्निपातेषु मूर्च्छायामपस्मारेतथैव च ॥ २ ॥

अतिमोहत्वमापन्नेन स्यंदद्याद्विचक्षणः ।

रसः श्वासकुठारोऽयं सर्वश्वासगदप्रणुत् ॥ ३ ॥

अर्थ—चोंटली (गुंजा) मात्र पानके साथ देना चाहिये, सन्निपात, मूर्च्छा, अपस्मार, अधिक मोह होजाय तो इसकी नास देनी चाहिये, यह श्वासकुठाररस सम्पूर्ण श्वासरोगका दूर करनेवाला है ॥ २ ॥ ३ ॥

अथ दद्यात् ।

विदाहिगुरुविष्टं भिरूक्षाभिष्यंदिभोजनैः ।

शीतपानाशनस्थानरजोधूमातपानिलैः ॥ ४ ॥

व्यायामकर्मभाराध्वने गावातापतर्पणैः ।

द्विकृत्वा श्वासश्च कासश्च नृणां समुपजायते ॥ ५ ॥

मधुसौवर्चलोपेतं मातुलुंगरसं पिबेत् ।

द्विकृत्वा तं मधुना लिङ्ग्याच्छृण्वी कणान्विताम् ॥ ६ ॥

अर्थ—जो पदार्थ दाहकारक, भारी, कज्ज करनेवाले तथा सूखे और कफकारक हैं उनके पीने खानेसे तथा बहुत ठंडे स्थानमें बैठनेसे धूरि धुआं घाम और पवनके सेवनसे मेहनत, बोझ उठाना, रस्ता चलना, मलमूत्रादिके वेगको रोकना, तथा उपवासादिके करनेसे मनुष्योंको हुचकी, कास, श्वास यह रोग उत्पन्न होतेहैं। शहद और सोंचरलोनके साथ विजौरेनीबूका रस पिये अथवा शहदके साथ सोंठ आमला और पीपलका चूर्ण चाटे ॥४॥५॥६॥

तृणामलकशुंठीनांचूर्णमधुसितायुतम् ।

मुहुर्मुहुःप्रयोक्तव्यंहिकाश्वासनिवारणम् ॥

हिकाश्वासीपिवेद्वाङ्गीसविश्वामुष्णवारिणा ॥ ७ ॥

अर्थ—सुगन्धि तृण, आमले, सोंठ इनका चूर्ण कर मिश्री डाल शहदके साथ चाटे, यह बारंबार चाटनेसे हिका और श्वासरोग दूर होताहै। भारंगी और सोंठ गरम-जलके साथ सेवन करनेसे हिचकी और श्वासरोग दूर होता है ॥ ७ ॥

अथ क्षयः ।

श्लेष्माधिक्याद्व्यवायाद्यैःपीडितोयःप्रशुष्यति ।

कासश्वासादितोरक्तं वमेच्छुक्लेक्षणोज्वरी ॥ ८ ॥

अर्थ—श्लेष्मा अधिक होनेसे व्यवायादिसे पीडित हो सुखता जाय कासश्वाससे अर्दित हो रक्तकी वमन करे शुक्ल नेत्र हो जाय, ज्वर हो जाय ॥ ८ ॥

अग्निमांद्यतृषायुक्तोरिरंसुर्मांसलोलुपः ।

विस्वरश्छर्दिमान्दीनस्सन्नेयःक्षयपीडितः ॥ ९ ॥

तालीशोपणविश्वपिप्पलितुगाःकर्षाभिवृद्धास्रुटिः

कर्पाद्धात्वगपिप्रकामधवलाद्वात्रिंशकर्पासिता ।

तालीशाद्यमिदंसुचूर्णमरुचावाध्मानमंदानल-

श्वासच्छर्द्यतिसारशोपकसनप्लीहज्वरेशस्यते ११० ॥

अर्थ-मन्दाग्नि, प्यास, विहारकी इच्छा, मांसलोलुपता, स्वरभंग, छर्दिमान, दीनमन यह लक्षण क्षयवाले मनुष्यके जानने, तालीशपत्र १ कालीमिर्च २ सोंठ ३ पीपल ४ वंशलोचन ५ तोले, दालचीनी छःमासे, मिश्री ३२ तोले यह तालीशादिचूर्ण अकारा, मन्दाग्नि, श्वास, छर्दि, अतिसार, शोष, कास, प्लीहा ज्वररोग इसके चूर्ण सेवन करनेसे दूर होते हैं ॥ ९ ॥ ११० ॥

शर्करामधुसंयुक्तंनवनीतंलिहेत्क्षयी ।

पिवेन्नागबलामूलंसार्द्धकर्पविवर्द्धितम् ॥ ११ ॥

पलक्षीरयुतंमांसंक्षीरवृत्तिरनन्नभुक् ।

एषप्रयोगःपुण्यायुर्वलारोग्यकरःपरः ॥ १२ ॥

अर्थ-अथवा क्षयरोगवाला मिश्री, शहत और मक्खन यह तीन चीजें मिलाकर चट्ट तो क्षयरोग जाय छः छः मांसे बढाता हुआ ककहीकी जड़का चूर्ण पिथे तो जाय अथवा चारतोले दुग्धयुक्त मांस खाय, क्षीरवृत्तिसे रहे, अन्न भोजन नकरे, यह प्रयोग वायु, बल और आरोग्यका करनेवाला है ॥ ११ ॥ १११ ॥

कुकुभत्वङ्नागबलावानरिधीजंसुचूर्णितंपक्कम् ।

भुक्तंमधुघृतयुक्तंससितंत्यक्ष्मादिकासहरम् ॥ १३ ॥

चूर्णस्वदंप्लाफलवाजिगन्धा-

समन्वितंमाक्षिकसंयुतंच ।

क्षीरेणसार्द्धपरिपीयमानं

क्षयंचकासंविनिहन्तिपुसाम् ॥ १४ ॥

लवंगंशुद्धकर्पूरमेलात्वङ्नागकेसरम् ।

जातीफलमुशीरंचनागरंकृष्णजीरकम् ॥ १५ ॥

कृष्णागुरुतुगाक्षीरीमांसीनीलोत्पलंकणा ।

चंदनंतगरंवालंकंकोलंचेतिचूर्णयेत् ॥ १६ ॥

समभागानिसर्वाणिसर्वेभ्योऽर्द्धासिताभवेत् ।

लवंगाद्यमिदंचूर्णंराजार्हवह्निदीपनम् ॥ १७ ॥

अर्थ—कोहवृक्षकी छाल, ककहीकी जड़, शकशिम्बकी बीज, चूर्णकर पक्क करके इनको मधु घृतसे युक्त मिश्री डालकर खाय तो यक्ष्मा और कासरोग दूर होता है. गोखरु, मंनफलका चूर्ण असगंधका चूर्ण कर इसमें शहद डालकर दूधके साथ पिथे तो क्षय और कासरोग दूर होते हैं. लोंग, भीमसेनी कपूर, इलायची, दालचीनी, नागकेशर, जायफल, रास, सोंठ, कालाजीरा, काली अगर, वंशलोचन, जटामांसी, नीलाकमल, पीपल, श्वेतचन्दन, तगर, नेत्रवाला और कंकोल इन अठारह औषधियोंको समान भाग लेकर चूर्ण करे, चूर्णसे आधी मिश्री मिलावे, यह लवंगादिचूर्ण है, यह राजाओंके योग्य अन्निको प्रदीत करनेवाला है ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥

रोचनंतर्पणंवृष्यंनिदोषघ्नंवलप्रदम् ।

हृद्रोगंकंठरोगंचकासंक्षिकांचपीनसम् ॥ १८ ॥

यक्ष्माणंतमकंश्वासमतीसारसुरःशतम् ।

प्रमेहारुचिगुल्मादिग्रहणीमयिनाशयेत् ॥ १९ ॥

अर्थ—यह रुचिकर, शरीरशुष्टिकरना, ग्रामीभोगकी शक्ति-

ताहै, वात पित्त कफसे दोषोंको दूर कर बल करंताहै, हृद-
रोग, कंठरोग, खांसी, हिचकी, पीनस, खई, तमक,
पास, अतीसार, अरुचि, प्रमेह, गाला, संग्रहणी, सब
रोग दूर होते हैं ॥ १८ ॥ १९ ॥

कुमुदेश्वररसः ।

पारदंशोधितगन्धमभ्रकंचसमंमतम् ।

तदद्धंद्रदं दद्यात्तदद्धांचमनःशिला ॥ १२० ॥

अर्थ-शुद्धपारा, शुद्धगंधक, अभ्रकमस्म, यह सब समान
भाग ले इससे आधा हिंगुल, हिंगुलका आधा मनसिल १२०

सर्वाद्धमृतलोहंचखल्वमध्येविनिक्षिपेत् ।

द्विःसप्तभावनादेयाशतावय्यारसेनच ॥ २१ ॥

ततःसिद्धोभवत्येपकुमुदेश्वरसंज्ञकः ।

सितयामारिचेनाथगुंजाद्वित्रिप्रमाणतः ॥ २२ ॥

भक्षयेत्प्रातरुत्थायपूजयेदिष्टदेवताम् ।

यक्ष्माणमुग्रहन्त्येववातपित्तकफामयान् ॥ २३ ॥

ज्वरादीनखिलात्रोगान्यथादैत्याजनार्दनः ।

सतताभ्यासयोगेनवलीपलितनाशनम् ॥ २४ ॥

अर्थ-सबसे आधी लोहभस्म ले, इन सबकी खरल कर
शतावरीके रसकी सात भावना दे, इसको दो या तीन
चोटली काली मिर्च और मिश्रीके चूर्णसे दे, यह कुमुदेश्व-
ररस राजयक्ष्मा, वातरोग, पित्तरोग, कफरोग और सब
ज्वरादिरोगोंका नाश करता है, जैसे दैत्योंको जनार्दन
नाश करते हैं । निरन्तर अभ्यास करनेसे वली और ना-
श रोग नाश होते हैं ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

रसेनतुल्यंकनकंतयोस्तु
 साम्येनयुंज्यान्नवमौक्तिकानि ॥
 रसप्रमाणोवलिरंध्रभागः
 क्षारश्चसर्वतुपवारिणातु ॥ २५ ॥
 समर्थवमंसुविधायगोलं
 दिनेपचेत्तलवणेनपूर्णे ॥
 भाण्डेमृगांकोयमतिप्रगल्भः
 क्षयाग्निमांद्यग्रहणीगदेषु ॥ २६ ॥

अर्थ—पारकी बराबर सोनेके बर्क और दूने मोती पारकी
 बराबर गंधक और सुहागा जवाखार इन सबको धान्यकी
 भूमिके जलमें एकदिन गरल कर गोला बनाय फिर एक
 पात्रमें निमक भरकर पात्रका मुख बंद कर चूल्हेपर चढ़ाय
 चार पहरकी आग दे तो यह मृगांकरस घने, यह क्षय,
 भंदाग्नि, संप्रदणीरोगको दूर करे ॥ २५ ॥ २६ ॥

साज्योपणाभिर्मधुपिप्पलीभि-
 र्वहोस्यदेयो नतनोधिकम्तु ॥
 पथ्यंहितंशीतलमेवयोज्यं
 त्याज्यंमदापित्तकरंविदाहि ॥ १२७ ॥

हनिश्रीगोम्यामिनिवानंदभट्टविगर्जिनं

वेद्यरत्ने द्वितीयः प्रकाशः ॥ २ ॥

अर्थ—चागरत्ती फाली मिर्चके चूर्णके संग ग्राय अथवा
 पीपलके चूर्ण और गहदके माष भक्षण करे यह इसके ऊपर
 पाय दलके पदार्थोंका भोजन करे परन्तु दाह करनेवाले

पदार्थ न खाय (बेंगन बेलफल तेल करेले न खाय) स्त्री-
संग और क्रोधका त्याग करे ॥ २७ ॥

इति श्रीगोस्वामिशिष्यान्तर्दमश्चरिते वैद्यरत्ने षष्ठित्तज्ज्वालामाद
मिश्रकृतभाषाटीकाया द्वितीयः प्रकाशः ॥ १ ॥

अथारुचिः ।

अरोचकोभवेदोपैर्जिह्वाहृदयसंश्रयैः ॥

सन्निपातेनमनसःसन्तापेनचपंचमः ॥ १ ॥

अर्थ-वातादिदोष, जिह्वा और हृदयमें आश्रित हो
मनको बिगाड़ते हैं तब अरुचि होती है अर्थात् शोक भय
लोभ और क्रोध आहार तथा गंध इन भेदोंसे अरुचि
पांच प्रकारकी है ॥ १ ॥

अम्लिकागुडतोयंचत्वगेलामरिचान्वितम् ॥

अभक्तच्छन्दरोगेषुशस्तं वलावधारणम् ॥ २ ॥

अर्थ-इमली और गुडके शरबतमें तज इलायची और
काली मिर्चका चूर्ण मिलाकर मुखमें धारण करनेसे अरुचि
दूर होती है ॥ २ ॥

कारव्यजाजिमरिचन्द्राक्षावृक्षाम्लदाडिमम् ॥

सौवर्चलंगुडंक्षौद्रमेपांकार्यावटीशुभा ॥ ३ ॥

अर्थ-करोंजी, जीरा, मिर्च, मुनक्का, दाग्य, दाडिम,
सांकरलोन, गुड और शहद यह सबप्रकारकी अरुचिको
दूर करताहै ॥ ३ ॥

वदरास्थिमितासास्येधृताऽरोचकनाशिनी ॥

अर्थ-बेरकी मींगीकी बराबर गुटिका मुगमें धरनेसे
अरुचि दूर होती है ।

अथ तृष्णा ।

सततं यः पिवेद्भारिणस्तृप्तिमधिगच्छति ।

पुनः कांक्षति तोयं च तं तृष्णादितमादिशेत् ॥ ४ ॥

अर्थ—जो निरन्तर जलपान करता जाय और उसकी तृप्ति न हो और बारंबार जलकी इच्छा करे उसे तृष्णासे अर्दित जानै ॥ ४ ॥

लाजोदकं मधुयुतं पीतं श्वेताविमिश्रितम् ।

द्राक्षाखर्जूरसंयुक्तं पिवेत्तृष्णादितो नरः ॥ ५ ॥

अर्थ—खीलोंके पानीमें शहद और श्वेत कटेरी डालकर पिये अथवा द्राग्य और खजूरके साथ पान करनेसे तृष्णारोग शान्त होता है ॥ ५ ॥

नीलाब्जकुष्ठमधुलाजवटावरोहेः

श्लक्ष्णीकृतैर्विरचिता गुटिका मुखस्था ॥

तृष्णां निवाप्य तितक्ष्णमेव तीव्रां

मर्त्यस्पृहामिव यतेः परमार्थचिन्ता ॥ ६ ॥

अर्थ—नीलोफर, कूठ, शहद, खील, वडके अंकुर इनको कूटकर इनकी गुटिका कर मुखमें रखनेसे तत्काल तीक्ष्ण तृष्णा दूर होती है यह यतिको परमार्थकी चिन्ताकी समान तृष्णावाले मनुष्योंको प्रार्थनीय है ॥ ६ ॥

अथ छर्दिः ।

दुष्टैर्दोषैः पृथक्सर्वैर्वीभत्सालोकनादिभिः ।

छर्दयः पञ्चविज्ञेयास्ताः पृथग्लक्षणैर्मताः ॥ ७ ॥

अर्थ—दुष्ट हुए वातादि दोषोंसे पृथक् २ तिन, एक प्रदोषसे और पांचवीं विभत्स (जिसके देखनेसे भय हो) यह पांच प्रकारके लक्षणोंवाली छर्दि होती है ॥ ७ ॥

कोमलकरंजपत्रंसलवणमम्लेनसंयुक्तम् ॥

यःखादतिदिनवदनेछर्दिकथातस्यकुत्रेह ॥ ८ ॥

अर्थ—कोमल करंजके पत्ते, सेंधानोन यह इमलीके साथ प्रातःकाल प्रतिदिन खानेसे छर्दिका नाम नहीं रहता ॥ ८ ॥

एलालवंगगजकेसङ्कोलमञ्जा-

लाजाप्रियंगुघनचंदनपिप्पलीनाम् ॥

चूर्णसितामधुयुतंमनुजोविलिह्य

छर्दिनिहन्तिकफमारुतपित्तजाताम् ॥ ९ ॥

अर्थ—इलायची, लौंग, नागकेशर, बेरकी मींग, खीलें, प्रियंगु, नागरमोथा, लालचन्दन, पीपल इनका चूर्ण कर शहद और मिश्रीके साथ मनुष्य चाटे तौ कफवातपित्तसे उत्पन्न हुई छर्दि नष्ट होती है ॥ ९ ॥

जंब्वाप्रपल्लवशृतंक्षौद्रं दत्त्वासुशीतलंतोयम् ॥

लाजैरवचूर्ण्यपिवेच्छेद्यतिसारे पलंसिद्धम् ॥ १० ॥

अर्थ—जामुन और आमके पत्तोंका काढ़ा कर उसमें शहद मिलाय ठंडा कर पिये तौ वा खीलोंका चूर्ण कर पिये तौ छर्दि अतिसार रोग दूर हो ॥ १० ॥

अथ मूर्च्छा ।

सुखदुःखव्यपोहाच्चनरःपततिकाष्ठवत् ।

मोहोमूर्च्छेतितामाहुःपङ्क्तिधासाप्रकीर्तिता ॥ ११ ॥

अर्थ—जब चेतनाकी बहनेवाली नाडी वातादि दोषसे बंद होती है तब एकाएकी सुखदुःखका दूर करनेवाला तमोगुण प्राप्त होता है उसके न जाननेसे मनुष्य काष्ठकी समान गिरजाता है उसको मोह और मूर्च्छा कहते हैं वह तीन वातादिदोष चौथी रक्तः पांचवीं मदिरा और छठी विषसे होती है ॥ ११ ॥

सेकावगाहोमणयःसुहाराः
शीतोपचाराव्यजनानिलाश्च ॥

पुष्पाण्यनेकानिचगंधवन्ति
विसानिशस्तानिचमूर्छितेषु ॥ १२ ॥

अर्थ-संपूर्ण मूर्छारोगमें सेचन, स्नान, मणिहार, लेप, पंखेकी पवन, सुगंधियुक्त शीतलपान तथा कमलनाल शीतल यह उपचार श्रेष्ठ हैं ॥ १२ ॥

कोलमज्जोपणोशीरकेसरंशीतवारिणा ।

पीतमूर्च्छाजयेल्लीङ्गाकृष्णां वामधुसयुताम् ॥ १३ ॥

अर्थ-बेरकी मींगी, कालीमिर्च, खस, नागकेशर, यह शीतल पानीके साथ पीसकर शहदके और पीपलके चूर्णके साथ चाटनेसे मूर्छा दूर होती है ॥ १३ ॥

नासावदनरोधेननस्यैर्मरिचनिर्मितैः ॥

नरंजागरयेद्भूमौमूर्छितंमंदमारुतैः ॥ १४ ॥

अर्थ-मुख और नासिका बंद करनेसे तथा काली मिर्चकी नाशें देनेसे तथा पवन करनेसे मूर्छा दूर होती है ॥ १४ ॥

अथ दाहः ।

त्वचंप्रातःसमानोष्मापित्तरक्ताभिमूर्छितः ।

दाहंप्रकुरुतेघोरंपित्तवत्तत्रभेषजम् ॥ १५ ॥

अर्थ-समानवायुकी उष्णता पित्तरक्तसे बढकर त्वचामें प्राप्त होकर दाहको उत्पन्न करती है, पित्तकी औषधिकी समान उसका उपचार करना चाहिये ॥ १५ ॥

शतधौतघृताभ्यक्तोलिह्यात्सक्तुसिताघृतम् ।

पीत्वावेणुत्वचःकाथंसक्षौद्रंशिशिरंनरः ॥ १६ ॥

रक्तसंपूर्णकोष्ठोत्थंदाहंजयतिदुस्तरम् ।

वाप्यःकमलदासिन्योजलयन्त्रगृहाःशुभाः ।

नार्यश्चचंदनार्द्राग्न्यःपित्तदाहहरामताः ॥ १७ ॥

अर्थ-सौबार पानीसे धोये घृतको शरीरमें मलना अथवा जौके सत्तू मिश्रीके साथ खाना घृतका सेवन करे अथवा रक्तजदाहमें बांसकी छालका काढा कर शहद मिलाकर पिये तो जिसके कोठेमें रक्त भरनेसे दाह हुआ है वह शान्त होजाताहै काढा ठंडा कर पिये अथवा कमल फूली हुई बावड़ी और फुहार छुटते हुए घरोंमें बैठने तथा चन्दनादि लगाये स्त्रियोंके दर्शनसे दाह दूर होताहै १६॥१७
अथोन्मादः ।

मदयंत्युद्रतादोपायस्मादुन्मार्गगामिनः ।

मानसोयमतोव्याधिरुन्मादइतिकीर्त्तितः ॥ १८ ॥

अर्थ-अपने २ कारणोंसे बड़ेहुए वातादि दोष जब सरल मार्ग छोड़के उन्मार्गी होते हैं तब मनको उन्मत्त करते हैं इस कारण इस रोगका नाम उन्माद है ॥ १८ ॥

कुष्ठाश्वगंधालवणाजमोदंद्रेजीरकेत्रीणिकटूनिपाठा ।

मंगल्यपुष्पीचसमानचूर्णकृत्वाथचूर्णेनवचोद्भवेन १९॥

अर्थ-कूट, असगंध, संधानोन, अजमोद, दोनों जीरे, सोंठ, मिर्च, पीपल, पाठ इनको बराबर ले और इन सबकी बराबर बच लेय औरोंकी समान शंखाहूलीकी मात्रा ले ॥ १९ ॥

तुल्येनयुक्तं बहुशोरसेनतद्भावितं ब्रह्मविनिर्मितायाः ।

सर्पिर्मधुभ्याश्चततोक्षमात्रं लिह्यान्नरः पष्टिदिनं हिताशी ॥

अर्थ-इन सबका चूर्ण कर ब्राह्मीके रसकी भावना दे इसको घृत अथवा शहदसे ४ टंक साठदिन तक खाय तो ॥ २० ॥

ऐश्वर्यवान्वामनसश्वयेर्यमेधांचविंदेद्विगुणंचकालम् ।

पठेन्नरःश्लोकसहस्रमह्नातद्वत्प्रयोज्योद्विगुणंक्रमेण ॥ २१ ॥

अर्थ—ऐश्वर्यवान् मनमें धीरता प्रबलता हो सहस्र श्लोक १ दिनमें पठन करनेकी शक्ति हो जाती है, यह दूनी मात्राभी क्रमसे दी जा सकती है ॥ २१ ॥

सारस्वतंचूर्णमिदंप्रदिष्टंस्वयंभुवालोकहितार्थमुच्चैः ।

दुर्मेधसामुन्मदमानसानामपस्मृतिग्रस्तहृदांसुखाय २२

अर्थ—ब्रह्माने लोकके हितके निमित्त यह सारस्वत चूर्ण बनाया है । कुब्जाद्विता, उन्माद, अपस्मृति आदि मन-के रोगोंमें हितकारी है ॥ २२ ॥

वद्धंसर्पपतैलाक्तमुत्तानंचातपेन्यसेत् ।

कपिकच्छाथवातसैलौहतैलांबुभिःस्पृशेत् ॥ २३ ॥

कशाभिस्ताडयेद्बद्धंस्थापयित्वाऽजनेगृहे ।

रुध्यात्ततोतिविभ्रांतमेवंव्रजतिसत्सुखम् ॥ २४ ॥

अर्थ—इसमें रोगीको बांधना चाहिये और तेलका मालिश कर धूपमें खड़ा करे, कोंचके बीजोंका स्पर्श करावै अथवा तप्तलोह तेल और जलका स्पर्श करावै वा बांधकर मर्मस्थान बचाकर चाबुकसे ताडन करे बन्दकर रखे अग्रिय समाचार सुनावै तो उन्मादी आरोग्य होता है ॥ २३ ॥ २४ ॥

अथापस्मारः ।

तमःप्रवेशःसंरम्भोदोषोद्वेकोहतस्मृतिः ।

अपस्मारइतिज्ञेयोगदोषोरश्चतुर्विधः ॥ २५ ॥

अर्थ—अकस्मात् अंधकार नेत्रोंके सामने आजाना नेत्र टूटे करना हायपांवका कंपना वातादि दोषोंके बढनेसे स्मृति

का नाश होना इस प्रकार इस रोगका नाम अपस्मार है यह वात पित्त कफ और सन्निपातके भेदसे चार प्रकारका है २५॥

पुण्योद्धृतं शुनः पित्तमपस्मारघ्नमंजनम् ।

तदेव सर्पिषा युक्तं धूपनं परमं स्मृतम् ॥ २६ ॥

अर्थ-पुण्य नक्षत्रमें कुत्तेका पित्त निकालकर अंजन करना अपस्मार रोग दूर करता है, इसीको घृतमें मिलाकर धूप देनेसे आरोग्यता होती है ॥ २६ ॥

यः स्वादेत्क्षीरभक्ताशीमाक्षिकेण च चारजः ।

अपस्मारं महाघोरं सुचिरोत्थं जयेद्भुवम् ॥

अपस्मारविनाशाय यद्यद्याह्नं सपिवेद्यहम् ॥ २७ ॥

अर्थ-जो केकल दूधका पान करता हुआ शहदके साथ बचका चूर्ण कर खाये तो महाघोर अपस्मार अवश्य दूर हो जाता है अथवा अपस्मारके नाश करनेको तीन दिन मुलहटी पान करे ॥ २७ ॥

अथ वातः प्राधिः ।

स्वहेतु कुपितो वातो यद्यदंगग्रहो वली ।

तत्तदाख्यो बहु रुचः कुरुतेऽशीतिमामयान् ॥ २८ ॥

मापवलाशुकशिंवीकचृणरास्नाश्वगंधोरुयुकाणाम् ।

काथोनश्यति पीतो गमठलवणान्वितः कोष्णः २९॥

अर्थ-अपने कारणसे क्रोधित हुआ वायु जिस जिस अंगको ग्रहण करे उस रोगका वही वही नाम होता है । वातः प्राधि ८० प्रकारकी है ॥ सरद ग्रियारी शुकशिम्बी पिठवन रास्ना असगंध पेरण्ड इनका काढा कर हींग और संधानोंन डाल गरम गरम पान करनेसे ॥ २८ ॥ २९ ॥

अपहरतिपक्षघातंमन्यास्तंभंसकर्णनादरुजम् ।

दुर्जयमर्दितवातंसप्ताहाजयतिचावश्यम् ॥ ३० ॥

अर्थ—पक्षाघात मन्यास्तंभ कर्णनाद अर्दितवातादि रोगोंको सात दिनमें अवश्य दूर कर देता है ॥ ३० ॥

सहचरामरदारुसनागरं

क्वथितमंभसितैलविमिश्रितम् ।

पवनपीडितदेहगतिः पिबन्

द्रुतविलंबितगोभवतीच्छया ॥ ३१ ॥

अर्थ—श्वेतकुटक (पियावासा) देवदारु सोंठ इनका काटा कर उसमें तेल डालकर वातरोगसे पीडित देहवाला मनुष्य पान करनेसे शीघ्र रोगरहित हो जाता है ॥ ३१ ॥

हिंग्वम्लत्रिकदूग्रपदकटुसटीवृक्षाम्लदीप्यालका-

पाठाजाज्यजगंधमूलहृषुपाद्विक्षारसाराभयम् ॥

हिध्माध्मानविबंधवर्ध्मकसनश्वासाग्निसादारुचिष्टी

हाशोखिलशूलगुल्मगलहृद्रोधाष्मपांडुप्रणुत् ॥ ३२ ॥

अर्थ—हींग अम्लवेत और सोंठ मिर्च पीपल वच पीपल पीपलामूल चव्य सोंठ चीता कालीमिर्च कचूर आमला अजवायन श्वेतआक पाठ कालाजीरा सफेद जीरा असगंध पीपलामूल हाऊवेर सजीखार जवाखार ववखार हरड इन सबको बराबर ले सबका चूर्ण कर सेवन करनेसे हिध्म आध्मान (अफारा) विबंध, वर्ध्मक, कास-श्वास, मन्दाग्नि, अरुचि, फ्रीहा, बवासीर, शूल, गुल्म, गल-रोग, हृदयरोग, अश्म (पथरी) और पांडुरोगको दूर करता है ॥ ३२ ॥

१ जो भीषधि दोबार कही जाय सो दूनी डेनी ।

तैलमेरण्डजंवापिगोमूत्रेणपिवेन्नरः ।

मासमेकंप्रयोगोयंगृध्रस्यूरुग्रहापहः ॥ ३३ ॥

अर्थ-जो अंडके तेलमें गोमूत्र डालकर एक महीनेतक पान करे तो यह गृध्रसी और ऊरुग्रह रोग दूर करता है ३३

तैलंघृतंचार्द्रकमातुलंगयोरसंचचुकंसगुडंपिवेद्वा ।

कट्यूरुपृष्ठत्रिकगुल्मशूलगृध्रस्युदावर्तहनुग्रहेषु ३४ ॥

अर्थ-तेल घी अद्रकका रस मातुलंग (विजौरेनींबू) का रस वा अमलवेत और गुड जो इनका पान करे तो इसके पृष्ठ हंसली त्रिक (पीठका वांसा) गुल्म शूल गृध्रसी उदावर्त हनुग्रहादिरोग दूर होते हैं ॥ ३४ ॥

हनुग्रहेहनुस्तंभेमन्यास्तंभेर्दितेपिवेत् ।

दशमूल्यंभसाकृष्णांपिप्पल्याःस्वरसेनच ॥ ३५ ॥

अर्थ-हनुग्रह हनुस्तंभ मन्यास्तंभ वातरोगमें दशमूलका काढा कर वा कालीमिर्च और पीपलका स्वरस कर पान करना चाहिये ॥ ३५ ॥

रास्नाद्विगुणभागास्यादकभागास्तथापरे ।

धन्वयासवलैरंडदेवदारुशटीवचाः ॥ ३६ ॥

वासकोनागरंपथ्याचव्यमुस्तापुनर्नवाः ।

गुडूचीवृद्धदारुश्चशतपुष्पाचगोक्षुरः ॥ ३७ ॥

अश्वगंधाप्रतिविपाकृतमालःशतावरी ।

कृष्णासहचरश्चैवधान्यकंवृहतीद्वयम् ॥ ३८ ॥

एभिःकृतंपिवेत्काथंशुण्ठीचूर्णेनसंयुतम् ।

कृष्णाचूर्णेनवायोगेराजगुग्गुलुनाथवा ॥ ३९ ॥

अर्थ-१ रासना दो तोले २ धमासा ३ खरेंटी ४ अंडकी जड़ ५ देवदारु ६ कपूर ७ वच ८ अडूसेका पंचाङ्ग ९ सोंठ १० हरडकी छाल ११ चव्य १२ नागरमोथा १३ सोंठकी जड़ १४ गिलोय १५ विधायरा १६ सोंफ १७ गोखरू १८ असगंध १९ अतीस २० अमलतासका गूदा २१ शतावर २२ पीपल छोटी २३ पियावासा २४ धनियाँ २५-२६ छोटीबड़ी दोनों कटेरी इन छव्वीस औषधोंके काठेमें सोंठका चूर्ण मिलाकर अथवा पीपलका चूर्ण मिलाकर अथवा योगराज गुग्गलके साथ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

अजमोदादिनावापितैलेनैरंडजेनवा ।

सर्वाङ्गकंपकुब्जत्वेपक्षवातेचवाहुके ॥ ४० ॥

गृध्रस्यामामवातेचश्लीपदेचाऽपतानके ।

अंत्रवृद्धौतथाध्मानेजंघाजानुगतेर्दिते ॥ ४१ ॥

शुक्रामयेमेदूरोगेवंध्ययोन्यामयेषुच ।

महारास्नादिनाख्यातोब्रह्मणागर्भकारणम् ॥ ४२ ॥

अर्थ-अथवा अजमोदादि चूर्णके साथ अथवा अण्डीके तेलके साथ इस काठेको पिये तौ सर्वाङ्गकंप कुबड़ापन पक्षाघात अपवाहुक गृध्रसी आमवात श्लीपद अपतानक वायु अण्डवृद्धि अफारा जंघाजानुपीडा शुक्रदोष लिंगरोग बन्ध्यायोनि गर्भाशयके रोग दूर होते हैं । यह महारास्नादि काथ ब्रह्माजीने गर्भस्थापनके कारण बनायाहै ४०॥४१॥४२॥

अथ शुगुलः ।

रास्नामृतैरंडसुराह्वविश्वंतुर्येनगाढंपुरुणाविमर्द्य ।

खादेत्समीरीसशिरोगदीचनाडीव्रणीचापिभगंदरीच ४३

गिलोय परण्ड देवदारु सोंठ यह सब ब-

रावर ले अच्छी प्रकार बारीक करके सेबनसे वातरोग शिर-
पीडानाडीत्रण भगन्दरादि रोग इससे दूर होते हैं ॥ ४३ ॥

अथ तैलानि ।

तैलाढकंसमतुपांबुहयारिहेम-

निर्गुण्डिभास्करशिफाशृतसाधुसिद्धम् ।

धतूरकुष्ठफलिनीविषहेमदुग्धा-

रास्नाहयारिकटभीमरिचोपचित्राः ॥ ४४ ॥

अर्थ-तिलका तेल ४ सेर इसीकी बराबर भूसीका जल
कनेर धतूरा संभालू आक जटामांसी इनका रस निकाल-
कर तेलमें ओटावे जब तेलमात्र रहजाय और रस जल-
जाय तब धतूरा कूठ फूलप्रियंगु विष स्वर्णक्षीरी (पीले
दुग्धकी कटेरी) रास्ना कनेरकी जड़ मालकांगनी काली
मिरच गूगल मंजीठ ॥ ४४ ॥

मांसीवचादहनसर्पपदेवदारु-

दावीनिशोरुबुककात्रिफलासमांगाः ।

पिप्पलाक्षिपेत्पलमिताविषगर्भमेतत्

तैलंसमस्तपवनामयनाशनं स्यात् ॥ ४५ ॥

अर्थ-जटामांसी वच चिता सरसों देवदारु दारुहलदी
अण्डकी जड़ त्रिफला यह सब बराबर ले पीसकर इसमें
डालदे यह औषधी चार २ तोले डाले यह विषगर्भ तैल
समस्त वातके रोगोंको दूर करता है ॥ ४५ ॥

विल्वोग्निमन्थःस्योनाकःपाटलापारिभद्रकः ।

प्रसारिण्यश्वगंधाचवृहतीकंटकारिका ॥ ४६ ॥

बलाचातिबलाचैवश्वदंष्ट्रासपुनर्नवा ।

एषां दशपलान् भागांश्चतुर्द्रोणां भसापचेत् ॥ ४७ ॥

पादशेषंपरिस्राव्यतैलपात्रेप्रदापयेत् ।

शतपुष्पादेवदारुमांसीशैलेयकंबलाः ॥ ४८ ॥

चदनंतगरंकुष्ठमेलापर्णीचतुष्टयम् ।

रास्नातुरगगंधाचसैन्धवंचपुनर्नवा ॥ ४९ ॥

एषांद्विपलिकान्भागान्पेषयित्वाविनिक्षिपेत् ।

शतावरीरसंचैवतैलतुल्यंप्रदापयेत् ॥ ५० ॥

अर्थ—बेल अरणी अरलू पाटल, नीमकी छाल, गंध-
प्रसारणी, असगंध, कोटर्री, खरेंटी, गंगेरन, गोखरु, सोंठ
यह सब १० पल लेकर ६४ सेर पानीमें औटावे जब चौथाई
रहजाय तब १०२४ टंक तेल डाले, सोंठ, देवदारु, बाल-
छड, छारछबीला, वच, चन्दन, तगर, कूट, इलायची, शाल-
पर्णी, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, पीलवनी, रास्ना, असगंध,
सैन्धानोन, यह सब दोदो पल ले पीसकर डाल देवे और
शतावरीका रस तेलके बराबर अर्थात् चार सेर
डाले ॥ ४६-५० ॥

आजकंयदिवागव्यंक्षीरंदत्त्वाचतुर्गुणम् ।

पानेवस्तौतथाऽभ्यंगेभोज्येनस्येप्रयोजयेत् ॥ ५१ ॥

अश्वोवावातभग्नोवागजोवायदिवानरः ।

पंगुर्वाभग्नहस्तोवाभग्नपादोथवानरः ॥ ५२ ॥

अधोभागेचयेवाताःशिरामध्यगताश्चये ।

दन्तशूलेहनुस्तम्भेमन्यास्तम्भेऽपतंत्रके ॥ ५३ ॥

एकांगग्रहणेवापिसर्वांगग्रहणे तथा ।

क्षीणेन्द्रियानष्टशुक्राज्वरग्रस्ताश्चयेनराः ॥ ५४ ॥

ललजिह्वाश्वबधिराविस्वरा मंदमेधसः ।

मंदप्रजाचयानारीयाचगर्भनविंदति ॥ ५५ ॥

वातात्तौघृपणौयेषामंत्रवृद्धिश्चदारुणा ।

एतन्नारायणंतैलंशस्तंसर्वत्रसर्वदा ॥ ५६ ॥

अर्थ-बकरी या गायका चौगुना दूध डालकर मन्द अग्निसे औटावै सब सिद्ध होजाय तब उतारले इस तेलको पिये वा मर्दन करे भोजनके प्रथम तेलका लेप करे. घोड़े हाथीके वातरोग मनुष्यके पंगु पीठभग्न वायुआदि रोग इस तेलसे नाश होतेहैं, अर्थात्तु नचिके अंगकी वायु, माथेकी वायु, दन्तशूल हनुस्तंभ जावडास्तम्भ गलग्रहइन्द्री, इन्द्रीक्षीण, नष्टवीर्य, तथा जो मनुष्य ज्वरसे ग्रस्त है, जीभ फूलना, विकलता मंदबुद्धि, स्त्रीके संतान न होना, अण्डकोषमे वातरोग होना, दारुण अंत्रवृद्धि होनी इतने रोगोमें नारायण तेल सब प्रकारसे श्रेष्ठ है ॥ ५१-५६ ॥

चतुःशेरमितेतैलेतिलानांशोधितेमृदा ।

महानिर्वार्कनिर्गुण्डीधतूरैरंडकस्नुहाम् ॥ ५७ ॥

भृंगराजहयार्योश्चरसंशेरमितंपृथक् ।

विपाच्यसाधितं ह्येतत्सर्ववातव्यथापहम् ॥ ५८ ॥

अर्थ-चारसेर तिलोंका तेल लेकर, वकायन आक सँभाल धतूरा अण्ड सेहुँद ॥ ५७ ॥ भृंगरा और कलेर इनके पत्तोंका एकसेर रस निकाले इनको मिलाय अग्निपर चढ़ा दे जय रसमात्र जलकर तेल रहजाय तब उतारले यह मालिस करनेसे सम्पूर्ण वातकी व्याधाको दूर करता है ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

अथ स्वच्छन्दभैरवरसः ।

शुद्धसूतमृतलोहं ताप्यं गंधकतालकम् ।

पथ्याग्रिमं थनिर्गुण्डी त्र्यूपणं टंकणं क्षिपेत् ॥ ५९ ॥

तुल्यां संमर्दयेत्स्वल्वे दिनं निर्गुण्डिकाद्रवैः ।

मुंडीद्रवैर्दिनैकं तु द्विगुं जांचवटीकृताम् ॥ ६० ॥

भक्षयेद्वातरोगात्तौ नाम्नास्वच्छन्दभैरवः ।

रास्नामृतादेवदारुशुण्ठीवातारिजं शृतम् ।

सगुग्गुलं पिवेत्कोष्णमनुपानं सुखावदम् ॥ ६१ ॥

अर्थ-शुद्धपारा १ लोहभस्म २ स्वर्णमाक्षिककी भस्म
३ गंधक हरताल जंगीहरड अरणी निर्गुण्डी सोंठ काली
मिर्च पीपल सुहागा यह समान भाग लेकर निर्गुण्डीके
रसमें १ दिन खरल करे, दोदो रत्तीकी गोली बनावे, इस-
को स्वच्छन्दभैरवरस कहते हैं, यह रस और रास्ना गिलोय
देवदारु सोंठ अंडकी जड़ इन पांच औषधियोंका
काढ़ा करके उसमें गुग्गुल मिलाय सेवन करे तो वातरोग
दूर होता है ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

अथ वातरक्तम् ।

वाहनाभिरतस्यासृग्दूपयित्वा निलोवली ।

स्पर्शाज्ञत्वं मण्डलानि स्फोटनानि विसृचिकाम् ६२ ॥

अर्थ-दायी घोड़े ऊंट आदिपर सवारी करनेवालेके,
तथा दाहक पदार्थ खानेवालेके आहार दग्ध होनेपर देहका
रुधिर दूषित हो उठता अर्थात् गरम होजाता है तब त्व-
चाका स्पर्श खरखरा और विसृचिकाकेसे फोड़े पड़जाते हैं
अर्थात् शरीरमें चकत्ते पड़जाते हैं ॥ ६२ ॥

करोत्यंगुलिवैकल्यं वातरक्तमिदं स्मृतम् ।

कालातिक्रान्तमेतत्तु कुष्ठं भवति दुर्द्धरम् ॥ ६३ ॥

अर्थ—यही वातरक्त अंगुलीकी विकलता करता है और उपेक्षा करनेसे कालांतरमें दारुण कुष्ठरोग करता है ॥ ६३ ॥

दावीं गुडूची कटुकोग्रगंधा-

मंजिष्ठा निबत्रिफला कपायः ॥

वातास्रमुच्चैर्नवकार्षिकाख्यो

जयेच्च कुष्ठान्यखिलानि नृणाम् ॥ ६४ ॥

अर्थ—दारुहलदी गिलोय कुटकी वच मँजीठ नीमकी छाल हरड बहेडा आमला इनका काढा कर पान करनेसे वातरक्त और संपूर्ण कुष्ठरोग दूर होते हैं ॥ ६४ ॥

मंजिष्ठारिष्टवासात्रिफलदहनकंद्वेहरिद्रेगुडूची

भूनिम्बो रक्तसारः सखदिरकटुका वाकची व्याधिघातः ।

मूर्वादन्ती विशालाकृमिरिपुजटिला वायसीरासपाठा ।

श्यामानंतापटोली समरिचमगधासाधितोऽयं कपायः

पीतो हन्यात्समस्तान्सकलतनुगतात्रक्तजातान्विकारा-

न्कंदू विस्फोटकादीनलसकविषमश्चित्रपामादिदोषान्

अर्थ—मँजीठ नीम अडूसा हरड बहेडा आमला चीता हलदी दारुहलदी गिलोय चिरायता लालचंदन खैरसार कुटकी वाकुची (सोमराजी) अमलतासका गूदा मूर्वादन्ती इन्द्रवारुणी वायविडंग जटामांसी काकमाची और पाठ निसोथ धमासा पटोल मिर्च पीपल इन औषधियोंको बराबर ले इनका काढा कर पिये तो सम्पूर्ण शरीरके रक्तपित्तविकार कण्डू विस्फोटकादि अलसक काठिन चित्रकोठादि सम्पूर्ण विकार दूर होते हैं ॥ ६५ ॥

अथ स्वच्छन्दभैरवरसः ।

शुद्धसूतंमृतलोहंताप्यंगंधकतालकम् ।

पथ्याग्रिमंथनिर्गुण्डीऽयूपणंटकणक्षिपेत् ॥ ५९ ॥

तुल्यांसंमर्दयेत्खल्वेदिनंनिर्गुण्डिकाद्रवैः ।

मुंडीद्रवैर्दिनैकंतुद्विगुंजांचवटीकृताम् ॥ ६० ॥

भक्षयेद्वातरोगात्तौनाम्नास्वच्छन्दभैरवः ।

रास्नामृतादेवदारुशुण्ठीवातारिजंशृतम् ।

सगुग्गुलंपिवेत्कोष्णमनुपानंसुखावहम् ॥ ६१ ॥

अर्थ-शुद्धपारा १ लोहभस्म २ स्वर्णमाक्षिककी भस्म
३ गंधक हरताल जंगीहरड अरणी निर्गुण्डी सोंठ काली
मिर्च पीपल सुहागा यह समान भाग लेकर निर्गुण्डीके
रसमें १ दिन खरल करे, दोदो रत्तीकी गोली बनाये, इस-
को स्वच्छन्दभैरवरस कहते हैं, यह रस और रास्ना गिलोय
देवदारु सोंठ अंडकी जड़ इन पांच औषधियोंका
काढ़ा करके उसमें गुग्गुलु मिलाय सेवन करे तो वातरोग
दूर होता है ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

अथ वातरक्तम् ।

वाहनाभिरतस्यासृग्दूषयित्व निलोबली ।

स्पर्शाज्ञत्वंमण्डलानिस्फोटनानिविसृचिकाम् ६२ ॥

अर्थ-हाथी घोड़े ऊंट आदिपर सवारी करनेवालेके,
तथा दाहक पदार्थ खानेवालेके आहार दग्ध होनेपर देहका
रुधिर दूषित हो उठता अर्थात् गरम होजाता है तब त्व-
चाका स्पर्श खरखरा और विसृचिकाकेसे फोड़े पड़जातेहैं
अर्थात् शरीरमें चकत्ते पड़जाते हैं ॥ ६२ ॥

करोत्यंगुलिवैकल्यं वातरक्तमिदं स्मृतम् ।

कालातिक्रान्तमेतत्तु कुष्ठं भवति दुर्द्धरम् ॥ ६३ ॥

अर्थ—यही वातरक्त अंगुलीकी विकलता करता है और उपेक्षा करनेसे कालांतरमें दारुण कुष्ठरोग करता है ॥ ६३ ॥

दावीं गुडूची कटुकोशगंधा-

मंजिष्ठा निवत्रिफला कपायः ॥

वातास्रमुच्चैर्नवकार्षिकारुख्यो

जयेच्च कुष्ठान्यखिलानि नृणाम् ॥ ६४ ॥

अर्थ—दारुहलदी गिलोय कुटकी वच मँजीठ नीमकी छाल हरड बहेडा आमला इनका काढा कर पान करनेसे वातरक्त और संपूर्ण कुष्ठरोग दूर होते हैं ॥ ६४ ॥

मंजिष्ठारिष्टवासात्रिफलदहनकंद्वेहरिद्रेगुडूची

भूनिम्बोरक्तसारः सखदिरकटुका वाकची व्याधिघातः ।

मूर्वादन्ती विशालाकृमिरिपुजटिला वायसीरासपाठा ।

श्यामानंतापटोली समरिचमगधासाधितोऽयं कपायः

पीतो हन्यात्समस्तान्सकलतनुगतात्रक्तजान् विकारान्

नकंदू विस्फोटकादीनलसकविषमश्चित्रपामादिदोषान्

अर्थ—मँजीठ नीम अडूसा हरड बहेडा आमला चीता हलदी दारुहलदी गिलोय चिरायता लालचंदन खैरसार कुटकी वाकुची (सोमराजी) अमलतासका गूदा मूर्वा दन्ती इन्द्रवारुणी वायविडंग जटामांसी काकमाची और पाठ निसोथ धमासा पटोल मिर्च पीपल इन औषधियोंको बराबर ले इनका काढा कर पिये तो सम्पूर्ण शरीरके रक्तपित्तविकार कण्डू विस्फोटकादि अलसक काठिन चित्रकोटादि सम्पूर्ण विकार दूर होते हैं ॥ ६५ ॥

कनकंभुजगवल्लीमालतीपत्रमूर्वा-
रसगदकुनटीभिर्मर्दितस्तैलयोगात् ॥

अपहरतिरसेन्द्रःकुष्ठकण्डूविसर्प-
स्फुटितचरणरंध्रस्थामलत्वंनराणाम् ॥ ६६ ॥

अस्यतैलस्यलेपेनवातरक्तंप्रशाम्यति ॥

अर्थ—धतूरेके पत्ते नागवेलके पत्ते, चमेलीके पत्ते मूर्वा इनका रस तथा कूठ और मनशिल इनके संगमें पारा और तेल खूब मर्दन करके लेप करनेसे यह रसेन्द्र कुष्ठ कण्डू विसर्प चरणोंका फटना आदि रोगोंको दूर करता है और शुद्ध शरीर होजाता है ॥ ६६ ॥ इस तैलके लेप करनेसे वातरक्त रोग शान्त होजाता है ।

अथामवातः ।

वृद्धेनवायुनानुन्नआमोयातिकफाशयम् ॥ ६७ ॥

लभ्येतसचनाडीभिरामवातोयमीरितः ॥

कट्यूरुजानुजंवासुपृथुशूलरुजाकरः ॥ ६८ ॥

अर्थ—जी मनुष्य प्रकृति वा कालसे विरुद्ध आहार चेष्टा आदि करताहै उस मनुष्यके स्निग्धादि भोजन करने उपरान्त कसरनआदि करनेसे वायुसे प्रेरित हुआ आम कफाशयमें प्राप्त होताहै अर्थात् छाती कंठ मस्तककी सन्धिमें प्राप्त होताहै और बिना पके नाडियोंमें प्राप्त होता है इसको आमवात कहते हैं कटि ऊरु जानु जंघामें सूजन शूल होतेहैं ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

रास्नांगुडूचीमेरंडदेवदारुमहोपधम् ।

पिवेत्सवांगेवातेसामेसंध्यस्थिमज्जगे ॥ ६९ ॥

अर्थ—रास्ना गिलोय एरण्डकी मूलदेवदारु सोंठका काढ़ा

सर्वांगवात आमवात संधि अस्थि और मज्जामें प्रातः
वातरोगमें पिये ॥ ६९ ॥

विशोध्यैरण्डबीजानिपिद्धातत्पायसंपिबेत् ।

आमवातेकटीशूलगृध्रस्यांचौषधंपरम् ॥ ७० ॥

अर्थ—अण्डके बीज शोधकर उन्हें दूधमें पीसकर पिये
तो आमवात कटीशूल और गृध्रसी रोगकी यह परम
औषधी है ॥ ७० ॥

एरण्डबीजमज्जासमविश्वःशर्करासहितः ।

गुटिकीकृतःप्रभातेभुक्तःसामानिलंजयति ७१ ॥

अर्थ—अण्डके बीजकी मींग और सोंठ बराबर ले मिश्री
सहित ८ गुटिका कर प्रभातकालमें पिये तो आमवात
रोग दूर होता है ॥ ७१ ॥

नागरस्यपलान्यष्टौघृतस्यपलविंशतिः ।

क्षीरद्विप्रस्थसंयुक्ताखण्डस्यार्द्धतुलान्यसेत् ॥

व्योषत्रिजातकद्रव्यात्प्रत्येकंचपलंपलम् ॥ ७२ ॥

अर्थ—सोंठ आठ पल घी २० पल दो सेर दूध और खांड
पांचसेर लेकर इसकी चासनी करे और सोंठ, मिर्च, पीपल,
तज, पत्रज, इलायची यह प्रत्येक एक एक पल ले ॥ ७२ ॥

निदुध्याच्चूर्णितंतत्रखादेदग्निबलंप्रति ।

आमवातप्रशमनंवलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥

वर्ण्यमायुष्यमोजस्यंवलीपलितनाशनम् ॥ ७३ ॥

अर्थ—इसका चूर्ण कर सेवन करे तो अग्निवृद्धि हो आम,
वातकी शान्ति और बल पुष्टिकी वृद्धि करनेवाला है
सुन्दर वर्ण करनेवाला आयुष बढ़ानेवाला बली और
पालित नाश करनेवाला है ॥ ७३ ॥

अथ शूलम् ।

दोषैः पृथक्समस्तामद्वन्द्वैः शूलोऽप्यभावेत् ।

सर्वेष्वेतेषु शूलेषु प्रायेण पवनः प्रभुः ॥ ७४ ॥

अर्थ—वातादि दोषसे पृथक् २ तीन सन्निपातसे एक द्वंद्वज तीन आमजन्य एक इस प्रकार आठ प्रकारका शूल है परन्तु आठोंमें वायु सर्वत्र बलवान है बहुधा यह वायुके बिना नहीं होता है महादेवके शूलसे इसकी उत्पत्ति है ७४॥

अथ परिणामशूलम् ।

अग्नेजीर्यतियच्छूलन्तदेवपरिणामजम् ।

साधमानादोपविष्मूत्रबंधमष्टविधंतथा ॥ ७५ ॥

अर्थ—और कोप करानेवाले पदार्थोंसे कुपित हुआ वायु कफ पित्तम व्याप्त हो शूलरोग उत्पन्न करता है वह शूल भोजन पचनेके समय होता है इस कारण इसको परिणाम-शूल कहते हैं उसमें पेटमें अफारा पेटका गुडगुडाना मल मूत्रका रोध विश्राम न पाना इत्यादि लक्षण होते हैं ॥ ७५ ॥

करंजसौवर्चलनागराणां सरामठानां समभागिकानाम् ।

चूर्णकटूष्णेन जलेन पीतं समीरशूलं विनिहन्ति सद्यः ७६ ॥

अर्थ—करंजुआ, काला नोन, सोंठ और हींग समान भाग लेकर इनका चूर्ण कर गरमजलसे ले तो वातशूल शीघ्र नष्ट होता है ॥ ७६ ॥

चूर्णतुम्बुरुमठत्रिलवणक्षाराजमोदाभया-

वेल्लञ्चूपणपुष्कराह्वयकृतकुंभत्रिभागान्वितम् ॥

मन्दोष्णेन जलं पीतमखिलं शूले सगुल्मोदरा-

धमाना जीर्णविबंधमामपवनानाहौ च शीघ्रं जयेत् ७७

अर्थ—तुम्बुरु, हींग, संधानोन, सोंचरनोन, विडनोन, जवा;

खार, अजमोद, हरड, वायविडंग, सोंठ, मिर्च, पीपल, पुष्करमूल, यह सब समान भाग ले, इन सबका तीसरा भाग निशोथ ले, इसका चूर्ण कर गरम जलके साथ ले तो सम्पूर्ण शूल गुल्मोदर अफरा अजीर्ण विबन्ध आमवात अनाहरोग शीघ्र दूर होजाता है ॥ ७७ ॥

चूर्णसमंरुचकहिंगुमहौपधीनां
शूण्ठ्यम्युनाकफसमीरणसंभवासु ।
हृत्पार्श्वपृष्ठजठरार्तिविसूचिकासु
पेयंतथायवरसनचविड्विवन्धे ॥ ७८ ॥

अर्थ-कालानौन, हींग, सोंठ, सफेद कोटरीका चूर्ण जलसे सेवन करनेसे कफवात हृत्पार्श्वशूल पृष्ठशूल जठररोग विसूचिका दूर होती है, यदि मूत्ररोध न हो तो यबके पानीसे इसे सेवन करे ॥ ७८ ॥

तुपवारिविनिष्पिष्टतिलकल्कोष्णपोटली ।
भ्राजिताजठरस्योर्ध्वमुद्गुःशूलंविनाशयेत् ॥ ७९ ॥

अर्थ-धानकी भूसीके जलमें तिलका कल्क कर पीसें और उसको पोटली कर गरम गरम सेक कर तो पेटका शूल दूर हो ॥ ७९ ॥

नाभिलेपाजयेच्छूलंमदनंकांजिकार्द्रितम् ।
विल्वैरण्डतिलैर्वाथपिष्टैर्मलेनपोटली ८० ॥
गिलितं हिंगुसघृतंसद्यःशूलंविनाशयेत् ।
करंजवीजमज्जावाभृष्टाशूलंनिकृन्तति ॥ ८१ ॥

अर्थ-मेनफलको कांजीमें पीसकर नाभिपर लेप करे अथवा घेलपत्र और अण्डके पत्ते और तिल इनको कां-

जीमें पीस पोटली करे इसका सेक कर और हींग और घी खानेसे शीघ्र शूलका नाश करता है करंजुके बीजोंकी मींगी भूनकर सेवन करे तो शूलको दूर करता है ॥ ८० ॥ ८१ ॥

कृष्णाभयालोहचूर्णलिह्यात्समधुशर्करम् ।

परिणामभवंशूलसद्योहन्तिनसंशयः ॥ ८२ ॥

अर्थ-पीपल हरड और लोहचूर्ण, इनको वारीक पीस मधु और शर्कराके साथ चाटे तो परिणामशूल शीघ्रही नष्ट होजाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ८२ ॥

नागरतिलगुडकल्कंपयसासंसाध्ययःपुमानद्यात् ।

उग्रंपरिणामभवंशूलसप्ताहाज्यतिचावश्यम् ॥ ८३ ॥

अर्थ-सोंठ, पीपल और गुडका कल्क करके दूधमें सिद्ध कर जो नित्य खाय तो सात दिनमें कठिन परिणामशूल नष्ट होजाता है ॥ ८३ ॥

एरण्डवह्निशम्बूकवर्पाभूगोक्षुरंसमम् ।

अंतर्दग्धापिवेदद्रिरूग्माभिःपक्तिशूलजित् ॥ ८४ ॥

अर्थ-अरण्ड, चीता, शंख (घोंघा), पुनर्नवा, गोखरु यह तीनों औषधि समान ले इनमें घोंघेकी भस्म करके गरम जलसे पान करनेसे पक्तिशूल दूर होताहै ॥ ८४ ॥

रसविपंगंधकर्पूक्षारोपणासिंधुपिप्पलीविश्वैः ।

अद्विवल्यंबुनिष्टृष्टैःशूलेभहरिर्द्विगुंजोऽयम् ॥ ८५ ॥

अर्थ-पारा, गंधक, विष, यह तीनों वस्तु शोधीहुई कौडीका चूर्ण, जवाखार, पिपलामूल, सुहागा, पीपल, सोंठ, यह पानके रसमें खरल कर दो रत्ती मात्रा देनेसे उ दूर करता है यह शूलगजकेसररस है ॥ ८५ ॥

अथ गुल्मम् ।

हृद्रस्त्योरन्तरेग्रंथिर्जायतेयश्चलाचलः ।

सगुल्मःपंचधादोषैःसर्वैश्चासृग्भवोपिच ॥ ८६ ॥

अर्थ-हृदयकमल, वस्ती और पेडूके बीचमें चलनेवाली अथवा अचल तथा घटने बढ़नेवाली जो गांठ होती है उसको गुल्म कहते हैं यह गुल्म पृथक् वातादि दोषसे तीन प्रकारका सन्निपातसे चौथा और केवल स्त्रियोंके रक्तसे पांचवाँ ऐसे पांच प्रकारका है ॥ ८६ ॥

कुमार्याःपक्वपर्णानिद्रोणार्धानिविनिक्षिपेत् ।

जीर्णाद्गुडान्तुलान्तत्रजलद्रोणद्वयंतथा ॥ ८७ ॥

अर्थ-पक्के धीकुवारके पट्टेका रस आधे द्रोण पुराना गुड १०० पल जल दो द्रोण ॥ ८७ ॥

लोहचूर्णत्रिकटुकंत्रिफलाचयवानिका ।

विडंगमुस्तकंचित्रंचतुःसंख्यापलंपृथक् ॥ ८८ ॥

अर्थ-लोहचूर्ण, सोंठ, मिर्च, पीपल, हरद, बहेडा, आमला, अजवायन, बायाविडंग, चीता, दालचीनी, पत्रज, इलायचीके दाने, नागकेशर, यह एक एक पल ले ॥ ८८ ॥

चूर्णाकृत्यततःक्षौद्रंचतुःपट्टिपलंक्षिपेत् ।

घृतभांडेविनिक्षिप्यनिदध्यान्मासमात्रकम् ॥ ८९ ॥

अर्थ-इन सबका चूर्ण कर ६४ पल शहद मी डाले यह सब औषधी धीके घर्तनमें भरकर एक महीनेपर्यन्त धरा रहने दे ॥ ८९ ॥

कुमार्यासवमेतत्तुपिवेद्वह्निकरंपरम् ।

पांडुश्वयधुगुल्मानिजठराण्यर्शसारुजाम् ॥ ९० ॥

अर्थ-यह कुमारी आसव एक पल अथवा आधे पल

पीनेसे अग्नि दीप्त करताहै पाण्डुरोग शोथ गुल्म जठर रोग
गुल्म अर्शरोग ॥ ९० ॥

कुष्ठप्लीहामकंकंडूकासंश्वासंभगंदरम् ।

अरोचकं च ग्रहणी हृद्रोगादींश्चनाशयेत् ॥ ९१ ॥

अर्थ-कुष्ठ प्लीहा आमरोग कण्डु कास श्वास भगन्दर
अरोचक ग्रहणी हृद्रोग यह कुमारी आसव दूर करताहै ९१

वचाभयाविडंशुण्ठीहिंशुकृष्णाग्निदीप्यकान् ।

द्वित्रिपट्चतुरेकाष्टपंचसप्तपलांशकान् ॥ ९२ ॥

चूर्णयेद्वस्त्रगलितंचूर्णचैतद्यथाबलम् ।

मध्येनोष्णांबुनावापिपीतंगुल्मानपोहति ॥ ९३ ॥

अर्थ-वच २ भाग हरड ३ भाग वायविडंग ६ भाग
सोंठ ४ भाग हींग १ भाग पीपल ८ भाग चीता ९ भाग
अजवायन ७ भाग इन सब वस्तुओंका चूर्ण कर कपड़ेसे
छान ले मद्य वा गरम जलके साथ पान करनेसे गुल्मरोग
दूर होता है ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

शूलार्शःश्वासकासघ्नग्रहणीदीपनंपरम् ।

हिंशुसैन्धववृक्षाम्लराजिकानागरैः समैः ॥ ९४ ॥

चूर्णगुल्मप्रशमनं स्यादेतद्विंशुपंचकम् ।

सूक्ष्मगंधकणापथ्यास्तुल्याआरग्वधांबुभिः ॥ ९५ ॥

अर्थ-शूल अर्श श्वास, कास रोगका दूर करनेवाला
ग्रहणीका दूर करनेवाला अग्नि दीप्त करनेवाला है हींग
एक भाग सोंचरनोन अम्लवेत अनारदाना राई सोंठ यह
सब समान ले चूर्ण करे यह हिंशुपंचक चूर्ण गुल्मरोगको
दूर करताहै निर्मली, गंधक, पीपल, हरड, अमलतासके
फलका गूदा यह बराबर ले ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

मर्दयेद्वज्रदुग्धैश्चतन्मापमधुनालिहेत् ॥ ९६ ॥

स्त्रीणांजलोदरंहन्तिपथ्यंशाल्योदनंदधि ॥

चिंचाफलरसंचानुपिवेत्संशीलितेरसे ॥ ९७ ॥

अर्थ—इन सबको थूहरके दूधम खरल करे एक मासे शहदके साथ चाटे तो यह स्त्रीका जलोदर रोग दूर करता है वही भात खाना इसपर पथ्य है इसके ऊपर इमलीके फलोंका शीतल रस पान करना चाहिये ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

अथ हृद्रोगः ।

शोपयित्वारसंदोषाविगुणाहृदयंगताः ।

हृदिवाधांप्रकुर्वन्तिहृद्रोगंतंप्रचक्षते ॥ ९८ ॥

अर्थ—वातादि दोष अन्नरसको दूषित करके फिर कुपित हुए हृदयको प्राप्त होकर जो हृदयमें पीडा करते हैं उसको हृद्रोग कहते हैं ॥ ९८ ॥

घृतेनदुग्धेनगुडांभसावापिघ्नन्तिचूर्णककुभत्वचोये ।

हृद्रोगजीर्णज्वररक्तपित्तहत्वाभवेयुश्चिरजीविनस्ते ९९

अर्थ—घृत दूध गुड वा जलके साथ जो कोई अर्जुनवृक्षकी छालका चूर्ण खाये उसके हृद्रोग जीर्णज्वर रक्तपित्त दूर होकर वह चिरजीवी होता है ॥ ९९ ॥

चूर्णपुष्करमूलस्यमधुनासहलेहयेत् ।

हृष्टासश्वासकासघ्नंहृदामयहरंपरम् ॥ १०० ॥

अर्थ—पुष्करमूलका चूर्ण शहदके साथ चाटे तो हृष्टास कास श्वासादि तथा हृदयरोग दूर होते हैं ॥ १०० ॥

अथोदरम् ।

रुद्धास्वेदांबुवाहीनिदोषाःस्रोतांसिसंचिताः ।

प्राणाग्न्यपानान्संदूष्यजनयंत्युदरंनृणाम् ॥ १०१ ॥

अर्थ—संचित हुए वातादि दोष पसीने और जलके बहाने

वाली नसोंको रोककर प्राणवायु जठराग्नि और अपान वायुको दूषित करके उदररोगको उत्पन्न करते हैं ॥ १०१ ॥

आध्मानंगमनेशक्तिर्दौर्बल्यंदुर्बलाग्निता ।

दाहस्तन्द्राचसर्वेषुजठरेषुभवन्तिहि ॥ २ ॥

अर्थ-पेटमें अफारा चलनेमें अशक्ति दुर्बलता मन्दाग्नि दाह तन्द्रा यह सब लक्षण उदररोगमें होतेहैं ॥ २ ॥
अथ प्लीहोदरम् ।

विदाह्यभिष्यंदिरतस्यजन्तोःप्रदुष्टमत्यर्थमसृक्कफश्च ।

प्लीहाभिवृद्धिकुरुतःप्रवृद्धौप्लीहोत्थमेतज्जठरंवदन्ति ॥

सव्यान्यपाश्वर्येयकृतिप्रवृद्धेज्ञेयंकृदाल्युदरंतदेव ॥ ३ ॥

अर्थ-जो मनुष्य दाहकारक कफकारक पदार्थोंका अति सेवन करता है उसके रक्त कफ अत्यन्त दूषित होकर बड़े हुए प्लीहाकी वृद्धि करते हैं उसको प्लीहोदर कहते हैं यह प्लीहा अर्थात् तापतिह्ली वाई पसलीके निकट बढती है इसीका भेद यकृदाल्युदर है यह दाहिनी ओर यकृतके दूषित होनेसे यकृतदाल्युदरके नामसे होती है ॥ ३ ॥

कुष्ठदन्तीयवक्षारंपाठात्रिलवणंवचाम् ।

अजाजीदीप्यकंहिंगुस्वर्जिकांचव्यचित्रकम् ॥ ४ ॥

शुण्ठीचोष्णाम्भसापीत्वावातोदररुजापहम् ।

हिंगुत्रिकटुकंकुष्ठंयवक्षारोथसेन्धवम् ।

मातुलुंगरसोपेतंप्लीहशूलहरंपरम् ॥ ५ ॥

शरपुंखमूलकल्कःपीतस्त्रेणनाशयत्यचिरात् ॥

चिरतरकालसमुत्थंप्लीहानंरूढमवगाहम् ॥ ६ ॥

अर्थ-कूठ दन्ती जवाखार पाठा संधानोंन कालानोंन सं;

चरनोन वच जीरा अजवायन हींग सज्जीखार चव्य चीता और सोंठ यह महीन पीस गरम जलके साथ पीनेसे वातो-
दर रोग दूर करता है हींग सोंठ मिर्च पीपल कूठ जवा-
खार सेंधा इनका चूर्ण विजौरेनींबूके साथ सेवन करनेसे
प्लीहा और शूलरोग दूर होता है यह बहुत दिनोंके प्लीहाको
भी दूर करता है शरफोंकाकी जड़का कल्क छाछके साथ
सेवन करनेसे बहुत पुरानीभी तापातिछी दूर होती है ४-६॥

सौवर्चलंयवक्षारं सामुद्रं काचसैन्धवम् ॥

टंकणं स्वर्जिकाक्षीरं तुल्यमेकत्र चूर्णयेत् ॥ ७ ॥

अर्थ-सोंचरलोन, जवाखार, समुद्रलोन, कचलोन, सैन्धव
सुहागा, सज्जी, इन सबको बराबर ले चूर्ण कर ॥ ७ ॥

अर्कदुग्धैः स्नुहीदुग्धैर्भावयेदातपेन्यहम् ॥

ऊर्ध्वाधःस्थैः क्रमात्तस्य तत्तुल्यैरर्कपल्लवैः ॥ ८ ॥

भाण्डे संस्थाप्य मृच्छितेरुद्धागजपुटे पचेत् ।

स्वांगशीतं तु संचूर्ण्य चूर्णमेपांतु मेलयेत् ॥ ९ ॥

द्यूपणं सविडंगं च राजिकां त्रिफलामपि ॥

चव्यं च हिं गुसंभृष्टं त्रेणाद्याद्यथाफलम् ॥ १० ॥

वज्रक्षाराभिधं चूर्णमुदराणि विनाशयेत् ॥

शोथं गुल्मतथाष्ठीलां मन्दाग्निमरुचिं तथा ।

प्लीहान्तं यकृद्गत्याग्न्यामुदरं च विशेषतः ॥ ११ ॥

अर्थ-मन्दारके दूधकी तीन भावना देकर धूपमें सुखावै
इसी प्रकार सेहुँडके दूधकी तीन भावना दे फिर चूर्णकी बरा-
बर मंदारके पत्ते लेकर थोड़े एक हाँडीमें रखकर उसपर वह
चूर्ण धरे फिर पत्ते फिर चूर्ण इस प्रकार जमायकर हंडियाका

मुख बंद करके कपरोटी करे और सुखाकर गजपुट दे जब स्वयं ठंडा होजाय तब उसे निकालकर आगे कहीं औषधियोंका चूण डाले सोंठ मिर्च पीपल वायविडंग राइ हरड आमला बेहडा चवक भूनी हुई हींग इन सबका चूर्ण कर क्षारके साथ मिलावै इस वज्रक्षारको शक्तिके अनुसार मट्टेके साथ पिये तो सब उदररोग गुल्म अष्टीला मन्दाग्नि अरुचि प्लीहा यकृतदाल्युदरादि रोगा का नाश करता है॥८-११॥

अथ मूत्रकृच्छ्रम् ।

पृथक्समस्तैस्तैःशुकवेगरोधातिघाततः ।

अश्मर्याश्चाष्टधेतिस्यान्मूत्रकृच्छ्रो रुजाकरः ॥ १२ ॥

अर्थ-पृथक् पृथक् निदानोंसे कुपित हुए वातादि दोष वा सर्वदोष एक साथ कुपित हुए मूत्राशयमें प्राप्त होके मूत्रके मार्गको पीडित करते हैं तब मनुष्य बड़े कष्टसे मूत्र करता है ॥ १२ ॥

मूत्रकृच्छ्रःसयःकृद्भ्रान्मृयत्रेद्रस्तिरोधकृत् ।

काथोगोक्षुरबीजानांयवक्षारयुतः सदा ॥ १३ ॥

मूत्रकृच्छ्रंसकृज्जातंसद्यःपीतोनिवारयेत् ॥ १३ ॥

अर्थ-जबकि इसका वस्तिस्थान रुद्ध होजाता है तब यह बड़े कष्टसे मूत्र करता है इसी कारण इसको मूत्रकृच्छ्र कहते हैं अथ औषधी लिखते हैं गोखरुका काढ़ा जवा-खार युक्त पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नत्काल दूर होता है ॥ १३ ॥

एलाश्मभेदकशिलाजतुपिप्पलीनां

चूर्णानितंडुलजलैर्ललितानिपीत्वा ।

द्रव्याद्गुडेनसहितान्यवलोढ्यधीमा-

नासन्नमृत्युरपिजीवतिमूत्रकृच्छ्री ॥ १४ ॥

अर्थ-इलायची पाषाणभेद शिलाजीत पीपल इनका चूर्ण कर चावलके जलसे पान करे अथवा गुडके साथ मिलाकर दे जो निकट मृत्यु आई हो तो भी मूत्रकृच्छ्रवाला जी सकता है ॥ १४ ॥

सितातुल्योयवक्षारःसवकृच्छ्रविनाशनः ।

गुडेनमिश्रितंदुग्धंकटूष्णकामतःपिवेत् ।

मूत्रकृच्छ्रेपुसर्वेषुशर्करावातरोगजित् ॥ १५ ॥

अर्थ-मिश्रीयुक्त जवाखारके खानेसे सबप्रकारके मूत्रकृच्छ्रोंका नाश होता है गुडके साथ दूध मिलाकर कुछ गरम कर इच्छा पूर्वक पिये तो सम्पूर्ण मूत्रकृच्छ्र और वातरोग दूर होते हैं ॥ १५ ॥

गोकंटकसदलमूलफलंगृहीत्वा

संकुटयतंपलशतंकथितःकपायः ।

पादस्थितेनचजलेनपलानिदत्त्वा ॥

पंचाशतंपरिपचेदपिशर्करायाः ॥ १६ ॥

अर्थ-गोखरू दल मूल और फलके सहित ग्रहण करके और कूटकर सौ पलका काढा करे जब चौथाई रहजाय तब ५० पल शर्कराकी चासनीमें इसको ओटावे ॥ १६ ॥

तस्मिन्धनत्वमुपगच्छतिचूर्णितानि

दद्यात्पलद्वयमितानिसुभेषजानि

शुण्ठीकणात्रुटियवागजकेसराणि

जातीफलंचककुभत्रपुसीफलानि ॥ १७ ॥

वंशंपलाष्टकमितिप्रणिधायनित्यं
लिह्यात्सुसिद्धममृतं पलसंमितं तत् ।

हन्यात्तु मूत्रपरिदाहविवंधकृच्छ्रं

मूत्राश्मरीरुधिरमेहमधुप्रमेहान् ॥ १८ ॥

अर्थ—जब यह गाढ़ा होजाय तो आगे लिखी औषधि दो पल चूर्ण कर डाले सोंठ पीपल छोटी इलायची इन्द्रजौ नाग-केशर जायफल कोहवृक्षकी छाल इन्द्रफला यह सम्पूर्ण औषधि मिलाकर वंशपलाष्टक है इसको सेवन करनेसे अमृतकी समान फल होता है एक पल इसको लेना चाहिये इससे मूत्ररोध परिदाह मूत्रकृच्छ्र मूत्राश्मरी रुधिरविकार प्रमेह मधुप्रमेहादि रोग दूर होते हैं ॥ १७ ॥ १८ ॥

कुशःकाशःशरोदर्भइक्षुश्चेतितृणोद्भवः ।

पित्तकृच्छ्रहरंपंचमूलंवस्तिविशोधनम् ।

एतत्सिद्धंपयःपीतंमेदोहंचातिशोणितम् ॥ १९ ॥

अर्थ—कुशा और काशकी जड़ रामशर डाम ईख इन पांचों का काढ़ा कर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र रुधिरविकार दूर होता है ॥ १९ ॥

अथश्मरी ।

निरुध्यमूत्रमार्गयायातनांजनयेद्रुशम् ।

कटिवस्तिप्रदेशेषुसाश्मरीतिनिगद्यते ॥ १२० ॥

अर्थ—जो मूत्रमार्गको रोककर बहुत कष्ट देती है कटि और वस्तिप्रदेशमें पीड़ा देती है वह पथरीकी पीड़ा जाननी ॥ १२० ॥

पीत्वापापाणभित्काथंसशिलाजतुशर्करम् ।

पित्ताश्मरींनिहन्त्याशुवृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥ २१ ॥

अर्थ—पापाणभेदका काय शिलाजीत और शर्करा डा-

लकर पीये तौ पित्तकी अश्मरी (पथरी) दूर होती है
जैसे वृक्षको वज्र नष्ट करता है ॥ २१ ॥

यवक्षारगुडोन्मिश्रसंपुष्पफलोद्धवम् ।

पिवेन्मूत्रविवंधघ्नशर्कराश्मरिनाशनम् ॥ २२ ॥

अर्थ-जवाखार और गुड मिलाकर नारियलके रससे
संयुक्त कर पिये तौ मूत्रविवंध शर्करा अश्मरी नाश
होती है ॥ २२ ॥

पाषाणभिद्वरुणगोक्षुरकोरुवृक-

क्षुद्राद्वयंक्षुरकमूलकृतःकषायः ।

दध्रायुतोजयतिमूत्रविवंधमुग्र-

मुग्राश्मरीमपिसशर्करयासमेताम् ॥ २३ ॥

अर्थ-पाषाणभेद वरुणा वसना गोखरू अण्डकी जड़
भटकटैया दोनों तालमखाना इनको बारीक पीसकर दही-
के साथ पान करनेसे मूत्रविवंध महाअश्मरि शर्करा-
दिरोग दूर होते हैं ॥ २३ ॥

यःपिवेद्रजनींसम्यक्सगुडांतुपवारिणा ।

तस्यागुचिरगूढापियात्यस्तमेद्रशर्करा ॥ २४ ॥

अर्थ-जो गुडसहित तुपके जल (कांजी) से हल्दीको
पिये उसकी चिरकालकी पथरीभी दूर होती है अर्थात्
चूर्ण होकर निकल जाती है ॥ २४ ॥

एतैरुपायैर्नोगच्छेदश्मरीयायमोपमा ।

तांस्थानाद्युक्तितोनीत्वाछेद्येस्थानेविचक्षणः ॥ २५ ॥

अर्थ-यदि, अश्मरी इतने उपायोंसे भी न जाय उस स्था-
नसे युक्तिपूर्वक लेजाकर छेदन करना चाहिये ॥ २५ ॥

शस्त्रवेत्तासमुच्छिद्यशस्त्रेणोक्तेनदेहिनः ।

निष्कासयेत्प्रयत्नेननिर्वातंरक्षितस्यच ॥

एवंप्रयातिदुःसाध्याश्मरीदेहक्षयंकरी ॥ २६ ॥

अर्थ—शस्त्रका जाननेवाला युक्तिसे इसको छेदन करे और यत्नपूर्वक उसको निकाले निर्वातस्थानमें रक्षित करे इस प्रकारसे देहकी क्षय करनेवाली पथरा दूर होती है ॥ २६ ॥

अथ प्रमेहः ।

दशषड्वापिचत्वारःकफपित्तसमीरजाः ।

साध्यायाप्याअसाध्यास्तेप्रमेहाःक्रमशोनृणाम् २७॥

अर्थ—कफसे जो दशप्रकारके प्रमेह होते हैं वे साध्य हैं कारण कि इनकी औषधिक्रिया सम है, छःप्रकारके कफक प्रमेह याप्य हैं, कारण कि इनमें औषधिक्रिया विषम हैं जैसे कि शीतोपचार पित्तक्षमनकारक और मांसादिकके बढ़ानेवाले हैं तथा चार प्रकारके वातप्रमेह असाध्य हैं कारण कि वायुविनाशकारक है जिस्से कि यह वायु मज्जादिक गंभीर धातुओंको आकर्षण करनेसे बहुव्याप्तिकारी और शीघ्रकारी है ॥ २७ ॥

चूर्णफलत्रिकभवंमधुनावलीढं

हन्तिप्रमेहगदमाशुचिरप्रभूतम् ॥ २८ ॥

अर्थ—त्रिकलेका चूर्ण मधुके साथ चाटैतो बहुत दिनोंका प्रमेहरोग दूर होता है ॥ २८ ॥

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थश्योनाकारग्वधासवम् ॥

आम्रकपित्त्यंजंबूचप्रियालंककुभंववम् ॥ २९

मधूकंमधुकंलोध्रंवरुणंपारिभद्रकम् ।

करंजत्रिफलाशक्रभल्लातकफलानिच ।

एतानिसमभागानिश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् ॥ ३० ॥

अर्थ—बडकी छाल गूलरकी छाल पीपलकी छाल सोना-
पाठा अमलतास आम कैथा और जामुनकी छाल, चिरोंजी
अर्जुनकी छाल नागरमोथा मधुयष्टी (मुलैठी) महुएकी
छाल लोधकी छाल बरनाकी छाल कूठ करंजुआ हरड बहेडा
आमला कुडा भिलावेके फल यह सब बराबर भाग
लेकर बारीक चूर्ण करे ॥ ३० ॥

न्यग्रोधाद्यमिदंचूर्णमधुनासहलेहयेत् ।

फलत्रयंचानुपिवेत्तेनमूत्रंविशुद्ध्यति ॥ ३१ ॥

अर्थ—यह न्यग्रोधादि चूर्ण है इसको मधुके साथ चाटै
पीछे त्रिफलेको पान करे इससे मूत्र शुद्ध होताहै ॥ ३१ ॥

एतेनविंशतिमेंहामूत्रकृच्छ्राणियानिच ।

प्रशमंयांतियोगेनपिडकाचनजायते ॥ ३२ ॥

अर्थ—इससे बीस प्रकारके प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र शान्त
होजाते हैं और पिडका भी नहीं होतीहै ॥ ३२ ॥

चूर्णनिशायामधुनासमेतंधात्रीफलानांस्वरसेनमिश्रम् ।

प्रलीढमल्पैर्दिवसैर्निहन्तिप्रमेहसंज्ञानखिलान्विकारान्

अर्थ—हल्दीका चूर्ण कर उसमें शहद डाल और उसीमें
आमलेका स्वरस मिलावै इसको चाटनेसे थोड़ेही दिनों
में प्रमेहके सब विकार दूर होजाते हैं ॥ ३३ ॥

पीत्वासक्षौद्रममृतारसंजयतिमानवः ।

प्रमेहंविंशतिविधंमृगेन्द्रइवदंतिनम् ॥ ३४ ॥

अर्थ—शहद और गिलोयका रस पान करनेसे बीस प्रकारके प्रमेह ऐसे दूर होजाते हैं जैसे मृगेन्द्र हस्तीको मारता-
है ॥ ३४ ॥

शाल्मलित्वग्रसःक्षौद्रजनीक्षौद्रसंयुतः ।

पीतोनिहन्तिनिखिलान्प्रमेहानल्पवासरैः ॥ ३५ ॥

अर्थ—सेमलकी छालका रस शहद और हल्दीके चूर्णके साथ खानेसे थोड़ेही दिनोंमें सब प्रमेहरोग दूर होतेहैं ॥ ३५ ॥

शाल्मलित्वग्रसोपेतंक्षौद्रजनीरजः ।

वंगभस्महरेन्मेहान्पंचाननइवद्विषान् ॥ ३६ ॥

अर्थ—सेमलकी छालके रसमें शहद और हल्दीका चूर्ण कर वंगकी भस्मकेसाथ सेवन करे तो सब प्रमेहऐसे दूर हो-
जाते हैं कि जैसे सिंहके सामने हाथी नहीं ठहरता ॥ ३६ ॥

निश्चन्द्रमाभ्रकंभस्मसवरारजनीरजः ॥

मधुनालीढमचिरात्प्रमेहान्विनिकृतति ॥ ३७ ॥

अर्थ—निश्चन्द्र अभ्रकभस्म त्रिफला और हल्दीके साथ शहदसे चाँट तो प्रमेहरोग दूर होतेहैं ॥ ३७ ॥

हेमांभोधरचदनंत्रिकटुकंधात्रीप्रियालाकुहू ।

मज्जानस्त्रिसुगंधिजीरकयुगंशृंगाटकवंशजम् ॥

जातीकोशलवंगंधान्यकयुतंप्रत्येककर्पद्वयम् ।

पूगस्याष्टपलंविचूर्ण्यचपयःप्रस्थत्रयेसर्पिषः ॥ ३८ ॥

अर्थ—नागरमोथा चंदन सोंठ मिरच पीपल आँवला
चिरोंजी बेरकी मींगी तज इलायची. तालीसपत्र काला

जीरा सफेदजीरा सिंघाडेकी गिरी वंशलोचन जायफल
लौंग धनियौ कपूर दालचीनी यह सब बराबर आठ २
टंक ले सबको कूट पीस कपडछान कर रख छोडे दक्षिणकी
चिकनी सुपारी १२८ टंक ले ॥ ३८ ॥

दद्याद्गोःकुडवंसितार्द्धकतुलांधात्रीवरीद्वयंजली ।

मन्दाग्नौविपचेद्विपक्वमुभदिनेसुस्निग्धभांडेक्षिपेत् ॥

यःखादेद्दिनशःप्रभातसमयेमेहांश्चजीर्णज्वरम् ।

पित्तसाम्लमसृक्क्षुतिंशुदृशोर्वक्राक्षिनासासुच ॥ ३९ ॥

अर्थ-गौका नवीन घृत ४८ टंक ले सफेद मिश्री ८०८ टंक
पीछे सुपारियोंको खरलमें डाल कूटकर कपडछान कर १२४
टंक दूधमें डालकर मावाकरे पीछे उस मावेको घृत मिला-
कर भूने पूर्वोक्त सुपारीपाककी विधिसे इसे बनाले अर्थात्
मन्दाग्निमें इसको पकाले और अच्छे दिनमें इसे सुन्दर वर्तन-
में रखछोडे जो इसे प्रातःकालको खाय उसको प्रमेह जीर्ण-
ज्वर पित्त अम्ल रुधिरविकार गुदरोग दृष्टिरोग मुखरोग
नेत्ररोग नासारोग दूर होते हैं ॥ ३९ ॥

मन्दाग्निंचविजित्यपुष्टिमतुलांकुर्याच्चशुक्रप्रदम् ।

पूगंगर्भकरंपरंगदहरंस्त्रीणामसृग्दोषजित् ॥ ४० ॥

अर्थ-यह मन्दाग्निको जीतकर महापुष्टिवीर्य देताहै यह
सुपारीपाकगर्भ करनेवाला रोगहारी तथा स्त्रियोंके रुधिर-
विकारको दूर करता है ॥ ४० ॥

एलांसकर्पूरसितांसधात्रीजातीफलांसक्षुरशाल्मलीकम् ।

सुताभ्रवंगायसभस्मचैतत्समर्द्धयेत्तुल्यलवंमनीषी ४१ ॥

अर्थ—छोटी इलायची भीमसेनकिपूर मिश्री आमलें जायफल गोखरू सेमलकी छाल पारा गंधक वंग लोहभस्म सबको समान भाग ले खूब खरल करै ॥ ४१ ॥

ततोभवत्येपरसःप्रमेहकुठारनामाविदितप्रभावः ।
निष्कार्द्धमात्रोमधुनावलीढोनिहंतिमेहानखिला-
नुदग्रान् ॥ ४२ ॥

अर्थ—तौ यह प्रमेहकुठाररस सिद्ध होवे इसमेंसे दो मासे शहदके साथ सेवन करे तो यह सम्पूर्ण प्रमेहरोगोंको दूर करै ॥ ४२ ॥

अथ मेदः ।

अव्यायामदिवास्वप्नश्लेष्मलाहारसेविनः ।
मधुरान्नरसात्प्रायःस्नेहान्मेदोविवर्द्धते ॥ ४३ ॥

अर्थ—कसरतआदि परिश्रमका न करना दिनको सोना कफकारक आहारोंका सेवन मधुर अन्नरस और स्निग्ध सेवनसे बहुधा मेद बढ़ता है ॥ ४३ ॥

मेदोमांसविवृद्धित्वात्स्थूलस्फिग्दरस्ततः ।
अपथोपचयोत्साहोनरोतिस्थूलउच्यते ॥ ४४ ॥

अर्थ—मेद और मांसके बढ़नेसे स्थूल स्फिक् उदर धातुओंके उपचय होनेसे अर्थात् सब धातुओंके बढ़नेसे मार्ग बंद होजाते हैं इस कारण धातु पुष्ट नहीं होते और मेद बढ़ता है इससे मनुष्य सब कामकाज करनेमें असमर्थ होजाता है ॥ ४४ ॥

मस्तुनासक्तवः पीता मेदोवृद्धिविनाशनाः ।

विल्वपत्ररसोवापिगात्रदौर्गन्ध्यनाशनः ॥ ४५ ॥

अर्थ-दहीके जलके साथ सत्तू पान करनेसे मेदवृद्धिरोग दूर होता है और विल्वपत्रका रस गात्रदौर्गन्ध्यको नाश करता है ॥ ४५ ॥

तिलसर्पपसठीभार्ङ्गीकुष्ठसमंगाभयाव्दजलैः ।

साम्रत्वग्भिर्लेपोमेदोदौर्गन्ध्यनाशनः पुंसाम् ४६ ॥

अर्थ-तिल सरसों सठी भारंगी कूट मंजीठ जंगीहरद नागरमोथा सुगंधवाला इनका आमकी छालसहित लेप करनेसे पुरुषोंका मेद रोग और दुर्गन्धि रोग दूर होता है ४६

अथ श्वयथुः ।

रक्तपित्तकफान्वायुःशिराःप्रावाहयेद्ब्रहिः ।

शोथंकरोतिनवधादीपक्ष्वेडाभिघाततः ॥ ४७ ॥

अर्थ-रक्तपित्त और कफको अपने कारणोंसे दूषित होकर वायु बाहरकी नसोंमें प्राप्त करती है वह नौ प्रकारका शोथ होता है वह दोष ताडन और घातसे होता है ॥ ४७ ॥

गुडपिप्पलिगुण्ठीनांचूर्णश्वयथुनाशनम् ।

आमजीर्णप्रशमनंशूलघ्नं वस्तिशोधनम् ॥ ४८ ॥

अर्थ-गुड पीपल सोंठ इनका चूर्ण शोथ रोगका नाश करता है तथा आम अजीर्णको दूर करता है शूलनाशक और वस्तिशोधक है ॥ ४८ ॥

गुडाद्रिकंवागुडनागरंवागुडाभयांवागुडपिप्पलींवा ।

कर्पाभिवृद्ध्यात्रिपलप्रमाणंखादेन्नरःपक्षमथापिमासम् ॥

अर्थ-गुड अद्रख वा गुड सोंठ वा गुड जंगीहरद वा गुड पीपली इनको समभाग मिलाकर दो तोले प्रथम दिन खाने-

से दूसरे दिन चार तीसरे दिन छै चौथे दिन आठ इस प्रकार दो दो तोले नित्य बढ़ाते जाय जब तीन पलकी मात्रा होजाय तबसे बीसदिन पर्यन्त उतनाही खाते रहना इस प्रकार एक मास पर्यन्त यह मात्रा पचजाय तब दूधभात अथवा यूसभात अथवा मांसरस खाय तब सब प्रकारका शोथ जाय ॥ ४९ ॥

शोफप्रतिश्यायगलास्यरोगान्
सश्वासकासारुचिपीनसादीन् ॥
जीर्णज्वराशोग्रहणीविकारान्
हन्यात्तथान्यान्कफवातरोगान् ॥ ५० ॥

अर्थ—सूजन जुखाम गलेके रोग श्वास कास अरुचि पीनस जीर्णज्वर बवासीर संग्रहणके विकार तथा दूसरे कफ वातरोगोंको भी दूर करता है ॥ ५० ॥

कृष्णाग्निविश्वधनजीरककंटकारी-
पाठानिशाकरिकणामगधाजटानाम् ॥
चूर्णकवोष्णसलिलेनविलोड्यपीतं
नातःपरंश्वयथुरोगहरंनराणाम् ॥ ५१ ॥

अर्थ—पीपल चित्रक सोंठ नागरमोथा जीरा भटकटैया पाठा हलदी गजपीपल पीपली जटामांसी इनका चूर्ण कर गरमजलके साथ मिलाकर पीनेसे इससे अधिक शोथ रोगको दूर करनेवाली और औषधि नहीं है ॥ ५१ ॥

अथ मुष्कवृद्धिः ।

अधोगतिर्वक्ष्यतोमुष्कौप्राप्यकरोतिहि ।
दोषास्त्रमेदोमूत्रांसेःसप्तधांडोन्नतिमरुत् ॥ ५२ ॥

अर्थ-अपने कारणोंसे कुपित हो नीचेको गमन करने-
वाले शोथ और शूलको करनेवाले जांघकी संधिमें प्राप्त
होकर अंडकोशकी चलानेवाली नाडीको पीडित कर उन
अंडकोशोंको बढाता है उसको अंडवृद्धि कहते हैं वह
वातादि दोषसे तीनप्रकार रक्तसे चौथी मेदसे पांचवीं
मूत्रसे छठी आंतोंसे सातवीं है ॥ ५२ ॥

चन्दनमधुकंपद्ममुशीरं नीलमुत्पलम् ।

क्षीरपिष्टैः प्रलेपः स्याद्दाहशोथं व्रणापहः ॥ ५३ ॥

अर्थ-लालचन्दन महुआ पद्माख खस नीलोफर इनको
ले दूधके साथ लेप करनेसे दाह और शोथ दूर होता है ॥ ५३ ॥

रास्नायपृथमृतैरंडबलागोक्षुरसाधितः ।

काथोत्रवृद्धिं हंत्याशुरुबुतैलेन मिश्रितैः ॥ ५४ ॥

अर्थ-रास्ना मुलैठी गिलोय एरण्ड खरेटी गोखरू इनका
काढा कर अण्डके तेलमें मिलाय अण्डोंके तेलके साथ
मलनेसे अंडवृद्धि दूर करता है ॥ ५४ ॥

अथ व्रधः ।

वंक्षणे दोषजः शोथो ब्रध इत्यभिधीयते ।

भृष्टश्चैरंडतैलेन कल्कः पथ्यासमुद्भवः ॥ ५५ ॥

कृष्णापैन्धवसंयुक्तो ब्रधरोगहरः परः ।

सद्यो मृतस्य काकस्य मलेन परिलेपनात् ॥ ५६ ॥

अर्थ-जांघकी संधिमें जो दोषोंसे शोथरोग होजाता है
उसे ब्रध कहते हैं हरडका कल्क कर अण्डके तेलमें भून-
ले ॥ ५५ ॥ उसमें पीपल और सेंधा डालकर लेप करनेसे
ब्रधरोग दूर होता है अथवा तत्काल मरे काककी बीटका
बदपर लेप करे ॥ ५६ ॥

ब्रध्नरोगःप्रयात्याशुरविणेवतमश्वयः ।

पक्वेन्नदारणंकृत्वाप्रकर्तव्याव्रणक्रिया ॥ ५७ ॥

अर्थ-तो तत्काल बदका नाश होजाता है जैसे सूर्यके सामने अंधकार दूर होजाता है और जो पक जाय तो उसे चीरकर व्रणक्रिया करे ॥ ५७ ॥

अथ गलगण्डः ।

निबद्धःश्वयथुर्यस्तुमुष्कवल्लम्बतेगले ।

महान्वायदिवाह्रस्वोगलगण्डंतमादिशेत् ॥ ५८ ॥

अर्थ-जो सूजन बढकर गलेमें अण्डकोशकी समान लटकती है वोह महान् वा ह्रस्व किसी प्रकारका हो उसे गलगण्ड कहते हैं ॥ ५८ ॥

अथ ग्रंथिः ।

वातादयोमांसमसृक्प्रदुष्टाः

प्रदूष्यमेदश्चतथाशिराश्च ॥

वृत्तोन्नतंग्रंथिमरुक्सशोफं

कुर्वन्त्यतोग्रंथिरितिप्रदिष्टः ॥ ५९ ॥

अर्थ-अतिशय दुष्ट हुए वातादिदोष मांस रक्त मेद और नसोंको दूषित करके गोल ऊंचा गांठसा बंधा हुआ शोथ उत्पन्न करते हैं वैद्य उसको ग्रंथि कहते हैं ॥ ५९ ॥

अथ गण्डमालाः ।

कर्कधुकोलामलकप्रमाणैःकक्षांसमन्यागलवंक्षणेपु ।

मेदःकफाभ्यांचिरमंदपाकैःस्याद्गण्डमालावहुभिस्तुगण्डैः

अर्थ-जो मेद और कफ काके कांख कंधे गरदन गला जंघा और कमरकी संधिमें बड़े धेर तथा छोटे धेरके प्रमाण-

वा आमले सरीखी बहुत दिनोंमें धीरेधीरे पकनेवालीं बहुतसी गांठें होतीहैं उनको गंडमाला कहतेहैं ॥ ६० ॥

सर्पपाञ्छणबीजानिशिशुबीजातसीयवान् ।

मूलकस्यचबीजानितकेणाम्लेनपेपयेत् ॥

गंडानिग्रंथयश्चैवगंडमालाःसुदारुणाः ।

प्रलेपनात्प्रशाम्यन्तिविलयंयान्तिचाचिरात् ॥ ६१ ॥

अर्थ-सरसों सहंजनेके बीज सनके बीज अलसी जब और मूलीके बीज इनको खट्टे मट्टेमें पीसकर लेप करें तौ गलगंड ग्रंथि गंडमाला शीघ्रही शान्त हो जाती है ॥ ६१ ॥

अथ श्लिपदः ।

श्लिपदःपादशोथःस्यान्मेदःकफसमुद्भवः ।

नासाकर्णाक्षिहस्तादावप्याहुःकेप्यमुंपुनः ॥ ६२ ॥

अर्थ-अपने २ चिह्नोंको प्रगट दिखानेवाले वातादिक दोषोंसे मेदमांसके आश्रित शोथ उत्पन्न होताहै वह चरणमें होनेसे श्लिपद कहाताहै कोई कहतेहैं कि यह नाक कान आंख और हाथमें भी होताहै ॥ ६२ ॥

धत्तूरैरंडवर्पाभूनिर्गुण्डीशिशुसर्पपैः ।

प्रलेपःश्लिपदंहन्तिचिरोत्थमपिदारुणम् ॥ ६३ ॥

अर्थ-धतूरा एरण्ड संभाल् पुनर्नवा और सहंजना इनकी जड़ और सरसोंका लेप दीर्घकालके हुए दारुण श्लिपदको दूर फरताहै ॥ ६३ ॥

अथ विद्रधिः ।

पृथग्दौपैःसमस्तैश्चक्षतेनक्षतजेनच ।

गुल्मवद्विद्रधिःप्रायःस्त्रीस्तनेरक्तविद्रधिः ॥ ६४ ॥

अर्थ-अपने कारणोंसे कुपित हुए वातादि त्वचा मांस मेदको दूषित कर वेदनायुक्त गोल अथवा लम्बी सूजन उत्पन्न करतेहैं वैद्य उसको विद्रधि कहतेहैं वह वात पित्त कफ सन्निपात क्षतज और रक्त भेदोंसे छःप्रकारकी है वह गुल्मवत् होतीहै प्रायः स्त्रीके स्तनमें रक्तविद्रधि होतीहै ॥ ६४ ॥

यवगोधूममुद्वैश्वस्विन्नैःपिष्टैःप्रलेपयेत् ।

विलीयतेक्षणेनैवमपक्वश्चैवविद्रधिः ॥ ६५ ॥

अर्थ-जो गेहूं मूंग इन्हें पीस गरम कर लेप करनेसे क्षण मात्रमें अपक्व विद्रधि नष्ट होजातीहै ॥ ६५ ॥

अथ व्रण ।

एकदेशोत्थितःशोथोव्रणानांपूर्वलक्षणम् ।

दोषैःपृथक्समस्तैश्चरक्तजागंतुजैश्चपट् ॥ ६६ ॥

अर्थ-जो शोथ देहके किसी अंगमें उत्पन्न होताहै वह व्रणोंका पूर्वस्व है वात पित्त कफ सन्निपात रक्तज और आगन्तुज इन भेदोंसे छःप्रकारका है ॥ ६६ ॥

न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थपृक्षवेतसवलकलैः ।

ससर्पिभिःप्रलेपःस्याच्छोथनिर्वापणःपरः ॥ ६७ ॥

अर्थ-जड़ गूलर पीपल पाखर और वेत इनकी छाल लेकर पानीमें पीस उसमें घृत मिलायकुछ गरम कर सुहाता-र लेप करे तो व्रण बैठ जायगा ॥ ६७ ॥

तैलेनसर्पिपावापिताभ्यांवासक्तुपिंडिका ।

सुखोष्णःशोथवान्कार्य उपनाहःप्रशस्यते ॥ ६८ ॥

अर्थ-अथवा सरसोंके तेलसे वा घृतसे या दोनोंसे सक्तुकी पिंडी बनाकर कुछ गरम कर लेप कर पसीना लेवे । व्रण दूर हो ॥ ६८ ॥

रसगंधकयोश्चूर्णतत्समंमूढशंखकम् ।

सर्वतुल्यंतुकंपिष्टंकिंचित्तुत्थसमन्वितम् ॥ ६९ ॥

अर्थ—अथवा पारे और गंधकका चूर्ण कर उसकी बराबर सुरदासंग ले इन सबकी बराबर कबीला ले उसमें कुछ तूतिया डाले ॥ ६९ ॥

सर्वसंमेलयेद्दत्त्वाघृतंसर्वचतुर्गुणम् ।

पिचुष्टुतंप्रदातव्यंदुष्टव्रणविशोधनम् ॥ ७० ॥

अर्थ—इन सबको मिलाकर इससे चौगुना घृत डालें और नीमके पत्ते डालकर यह सिद्ध करके घावपर लगानेसे ७० ॥

नाडीव्रणहरंचैवसर्वव्रणनिपूदनम् ।

येव्रणानप्रशाम्यन्तिभेषजानांशतेनच ॥

अनेनतेप्रशाम्यन्तिसर्पिपास्वलपकालतः ॥ ७१ ॥

अर्थ—यह नाडीव्रण हरता और सम्पूर्ण व्रण दूर करता है जो व्रण शत औषधियोंसेभी दूर नहीं होते इस घृतसे वह थोड़ेही कालमें शान्त होजाते हैं ॥ ७१ ॥

सद्योव्रणः ।

नानाधारामुखैःशस्त्रैर्नानास्थाननिपातितैः ।

भवन्तिनानाकृतयोव्रणास्तांस्तान्निबोधमे ॥ ७२ ॥

अर्थ—जो अनेकप्रकारके धारामुखशस्त्र शरीरके अनेक स्थानोंमें लगनेसे उनसे नाना प्रकारके व्रण होते हैं उनका वर्णन सुनो ॥ ७२ ॥

पट्टसूत्रेणसंपीड्यनिर्वातभवनेस्थितः ।

लोमिकांरचयित्वातममितायाःकञ्जोष्णाया ॥ ७३ ॥

अर्थ-तत्काल व्रण होनेपर पवन रहित स्थानमें स्थित हो उसे सूत्रसे पीडित कर अर्थात् रेशमसे लपेटकर किञ्चित् उष्ण आश्वातनादिक उपाय करे भेदाकी किञ्चित् गरम पुलाटिस कर उसपर रखे ॥ ७३ ॥

अथवादीप्यलवणपोटल्यास्वेदयेन्मुहुः ।

संततयाततलोहपात्रसंयोगतः क्रमात् ॥ ७४ ॥

अर्थ-अथवा अजवायन और लोहकी पोटली कर अग्नि-पर तपेहुए तवेपर उस पोटलीको तपाकर उस व्रणको शोधन करे ॥ ७४ ॥

मुहुर्मुहुर्यथादुःखं न प्राप्नोति व्रणी नरः ।

दूर्वास्वरससंसिद्धं तैलं कपिल्लकेन वा ॥ ७५ ॥

अर्थ-और बारंबार इस विधिसे सेकें जिससे व्रणी मनुष्यको दुःख न हो अथवा दूर्वाके रसमें सिद्ध किये तेलमें कबीला मिलाकर ॥ ७५ ॥

दार्वीत्वचश्चकल्केन प्रधानं व्रणरोपणम् ।

तिक्तासिक्यनिशायपीनक्ताह्वफलपल्लवैः ॥

पटोलमालतीनिवपत्रैर्व्रण्यं शृतं घृतम् ॥ ७६ ॥

अर्थ-अथवा दारुहलदी, तजके कल्कसे प्रधान व्रण रोपण होता अर्थात् भरजाता है अथवा कुटकी, मोम, दारुहलदी, मुलहठी, करंजके बीज और पत्ते पटोलपत्र चमेलीके पत्ते नीमके पत्ते इनसे तयार किया घृत व्रणको भर देता है ७६ ॥

अथ विदीर्णसंधो व्रणः ।

आदौ भग्नं विदित्वा तु सेचयेच्छीतवारिणा ।

पंकेनालेपनं कुर्याद्विधनं च कुशान्वितम् ॥ ७७ ॥

अर्थ-प्रथम व्रणको भग्नहुआ देखकर शीतल जलसे सेचन करे उसपर कीचका लेप करे और कुशका बंधन दे ॥ ७७ ॥

आलेपनार्थमंजिष्ठामधुकंचाम्लपेपितम् ।

शतधौतघृतोन्मिश्रंशालिपिष्टंचलेपनम् ॥ ७८ ॥

अर्थ-आलेपनके निमित्त मजीठ, मुलहठी, कांजीसे पीस लगावे अथवा सौबार धोया घृत शालीचावल पीस उसमें घृत मिलाय लेप करे ॥ ७८ ॥

अथग्निदग्धव्रणः ।

अग्निदग्धेव्रणेदेयंघातकीचूर्णमुत्तमम् ।

अतसीतैलसंमिश्रंवह्निदग्धव्रणापहम् ॥ ७९ ॥

अर्थ-अग्निदग्धव्रणपर धवका चूर्ण कर लगावे अथवा उसको अलसीके तेलमें मिलाकर लगावे तो अग्निदग्ध व्रण रोपण होजाय ॥ ७९ ॥

अंतर्धूमविदग्धत्रिफलाचूर्णविमिश्रितंतैलैः ।

क्षौमैःशीघ्रंशमयत्यग्निव्रणमाशुलेपेन ॥ ८० ॥

अर्थ-घरका धुआं और जलाकर त्रिफलेका चूर्ण कर तेलमें मिलाय और उसमें रेशम मिलाकर अग्निव्रणपर लेप करनेसे शीघ्र व्रण शान्त होता है ॥ ८० ॥

अथ भगंदरः ।

गुदस्यद्वयंगुलेक्षेत्रेपार्श्वतःपिडकार्त्तिकृत् ।

भिन्नोभगंदरो ज्ञेयः स च पंचविधो मतः ॥ ८१ ॥

अर्थ-गुदासे दो अंगुल एक बाजूपर पीढायुक्त फुडिया होती है वही फूटनेसे भगन्दर होताहै वह पांच प्रकारका है, यह रोग भगाकार विदीर्ण करता है इससे, भगन्दर कहतेहैं ॥ ८१ ॥

वटपत्रेष्टकाशुंठीगुडूच्यःसपुनर्नवाः ।

सुपिष्टाःपिडकोपस्थे लेपः शस्तो भगंदरे ॥ ८२ ॥

अर्थ—वरगदके कोमल पत्ते पुरानी ईंट, सोंठ, गुडूची और पुनर्नवा इनको बारीक पीस भगन्दरकी कच्ची फुनसीपर लेप करे ॥ ८२ ॥

तिलत्रिवृन्नागदन्तीमंजिष्ठाज्यैःससैन्धवैः ।

सर्क्षोद्वैश्चप्रलेपोयंभगंदरकुलांतकृत् ॥ ८३ ॥

अर्थ—तिल, निशोध, नागदन्ती, मंजीठ, घृत, सेंधव और शहद यह प्रलेप भगन्दरको नाश करता है ॥ ८३ ॥

करवीरनिशादंतीलांगलीलवणाग्निभिः ।

मातुलिंगार्कवत्साह्वैःपक्वतैलंभगन्दरे ॥ ८४ ॥

अर्थ—श्वेतकनेर हलदी दन्ती करिहारी संधानोंन चीता बीजपूर आक इन्द्रायण इनको तेलमें पकाकर भगन्दरपर लेप करे ॥ ८४ ॥

अथोपदंशः ।

हस्ताभिघातान्नखदंतपातादधावनाद्वात्थुपसेवनाच्च ।

योनिप्रदोपाच्चभवन्तिशिशने पंचोपदंशा विविधोपचारैः

अर्थ—उपदंशका लक्षण कहतेहैं कि हाथसे मथन करनेसे जो झटका लगा है उससे तथा नख और दांतके लगनेसे तथा अच्छी प्रकार न धोनेसे अतिमैथुन करनेसे और योनिदोषसे (गरमी प्रदर रोगवाली) रजस्वला ब्रह्मचारिणी प्रसंगसे तथा औरमी अनेक प्रकारके पांच प्रकारके उपदंश होतेहैं ॥ ८५ ॥

त्रिफलांमापसंयुक्तांसमांशामधुसंयुताम् ।

उपदंशेप्रलेपोयंसद्योरोपयतिव्रणम् ॥ ८६ ॥

अर्थ-त्रिफला उडद बराबर कढाईमें जलाय उसकी राख शहदमें मिलाकर लेप करनेसे उपदंशके व्रण भर जाते हैं ॥ ८६ ॥

करंजनिर्वाजुनशालजंबू-

वटादिभिःकल्ककपायसिद्धम् ॥

सर्पिर्निहन्यादुपदंशदोषं

सदाहपाकस्रुतिदाहयुक्तम् ॥ ८७ ॥

अर्थ-करंज नीम अर्जुन शाल जामुन वटादि वृक्षोंकी छालका कल्क कर काढा बनाय घृत डालकर सिद्ध करें इसके सेवनसे उपदंश दोष दाह पाक स्रुति दाह सब दूर होते हैं ॥ ८७ ॥

रसआकारकरभोलवंगंमरिचंतथा ।

विडंगंमस्तकीचैतत्प्रत्येकंत्रिलवंमतम् ॥ ८८ ॥

अर्थ-पारा और अकरकरा लौंग काली भिरच वाय-विडंग मस्तकी यह प्रत्येक ३ तीन भाग ले ॥ ८८ ॥

अरुष्कराणांदातव्याद्विगुणात्वेकविंशतिः ।

दीप्यस्यद्वादशलवागुडस्यापितथामताः ॥ ८९ ॥

अर्थ-और उससे दुगुने मिलावे इक्कीस ले अजवायन बारह भाग और इतनाही गुड ले ॥ ८९ ॥

युक्त्यासंमेल्यगुटिकांखादेत्कर्पद्वयोन्मिताम् ।

पथ्यंदुग्धौदनंरम्यंतांबूलंपरिशीलयेत् ॥

घसाणामेकविंशत्यामुच्यतेतूपदंशतः ॥ ९० ॥

अर्थ-इनकी युक्तिसे गुटिका बनाकर प्रतिदिन एकं कर्ष खाय दूध चावल भात इसमें पथ्यहै तथा ताम्बूल भी पथ्य है २१ इक्कीस दिन सेवनसे उपदंश रोग दूर होताहै ॥ ९० ॥

अथ विसर्पः ।

क्षुद्रपामाकृतिर्देहेपरितःपरिसर्पणात् ।

विसर्पोजायतेजंतोस्तोदस्त्रावरुजाकरः ॥ ९१ ॥

अर्थ-क्षुद्र पामारोगकी समान देहमें सर्वत्र फेलनेसे विसर्परोग कहलाता है इसमें सुई चुभनेकीसी पीड़ा और स्त्राव तथा पीड़ा होतीहै ॥ ९१ ॥

अग्निदग्धइवस्फोटादेहिनस्स्युर्ज्वराननाः ।

क्वचित्सर्वत्रदेहेषु रक्तपित्तसमुद्भवाः ॥ ९२ ॥

अर्थ-अग्निसे दग्ध हुएकी समान फोड़े शरीरमें होते हैं और ज्वरयुक्त रक्तपित्तसे उत्पन्न हुए कभी सबदेहमें होतेहैं ९२

विसर्पआदावुचितोस्त्रसेकोवमिर्विरेकश्चविरूक्षणंच ।

तथापतृप्तिर्नविसर्परोगेसंस्नेहनंशस्तमितिष्ठुवन्ति ९३

अर्थ-विसर्पकी आदिमें रक्तका सेक उचित है वमन विरेचन तथा स्नान शरीरमें लाना चाहिये यदि इस्से तृप्ति न हो तो स्नेहन क्रिया करनी उचित है ॥ ९३ ॥

प्रच्छर्दनंराटफलंकलिंपथ्यान्वितंसर्वविसर्पंहारि ।

शिरीषयष्टीनतचंदनैलामांसीहरिद्राद्रुमकुष्ठवालैः॥९४॥

लेपःससर्पिःप्रणुदत्यवश्यंविस्फोटदाहज्वरकान्विसर्पान्

अर्थ-वमन विसर्पको नाश करती है पटोल कुडा छोटी हरड सहित लेप करनेसे सब विसर्परोग दूर होते हैं शिर-

स मुलेठी तगरचन्दन इलायची बडी जटामांसी हल्दी
दारुहलदी कूठ सुगंधवाला इनको कूटकर लेप करनेसे
विस्फोटक दाहज्वर और विसर्प रोग दूर होता है ॥ ९४ ॥

अमृतवृषपटोलंमुस्तकंसप्तपर्ण

खदिरमतिसवेत्रंनिवपत्रंहरिद्र ।

शृतमितिसविसर्पकुष्ठविस्फोटकंङ्क-

रपनयतिमसूरींशीतपित्तज्वरंच ॥ ९५ ॥

अर्थ-आमला वासा पटोलपत्र नागरमोथा सप्तपर्ण
विजयसार खैर कालावेत नीमके पत्ते दोनों हल्दी इनका
चूर्ण कर घीमें सान लेप करे तो विसर्प कुष्ठ विस्फोटक
कण्डू मसूरिका शीत पित्तज्वरको दूर करता है ॥ ९५ ॥

अथ स्नायुः ।

शाखासुकुपितादोषाःशोथंकृत्वाविसर्पवत् ।

कुर्वुस्तंतुनिभान्कीटान्स्नायवस्तेनिरूपिताः ॥ ९६ ॥

अर्थ-शाखा (हाथ पैर) में कुपित हो वातादि दोष
विसर्पकी समान तन्तुके आकार कीटको उत्पन्न करते हैं
उनसे घ्रात्र होता है यह स्नायुरोग है ॥ ९६ ॥

वन्धूलबीजंगोमूत्रपिष्टंतिप्रलेपनात् ।

स्नायुकानिसमस्तानिसशोथसरुजानिच ॥ ९७ ॥

अर्थ-बधूलके बीज गोमूत्रमें पीसकर लेप करे तो सम्पूर्ण
स्नायु और शोथरोग दूर होता है ॥ ९७ ॥

गव्यंसर्पिभ्यहंपीत्वानिर्गुण्डीस्वरसंश्रयहम् ।

पिबन्स्नायुकान्प्राणंशंश्रयः ॥ ९८ ॥

अर्थ-तीन दिन गौका घी और निर्गुण्डीका स्वरस पान करनेसे अवश्य महास्नायुरोग दूर होता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ९८ ॥

अहिंस्त्रामूलकल्कस्यप्रलेपस्त्रायुकंजयेत् ।

पारावतपुरीपस्यमधुनाकल्कितस्यच ॥

गिलितागुटिकाहन्तिस्त्रायुकामयमुद्धतम् ॥ ९९ ॥

अर्थ-कलाजिके मूलका कल्क (पीसकर शीतल जलसे) लेपना स्नायुरोगको दूर करता है अथवा क्यूत-रकी विष्ठामें मधुका कल्क कर गुटिका सेवन करनेसे स्नायु रोग सर्वथा दूर होता है ॥ ९९ ॥

अथ मसूरिका ।

मसूराकृतिसंस्थानाःपिडकाःस्युर्मसूरिकाः ।

आसां पूर्व ज्वरःकंदूर्गात्रभंगोऽरतिभ्रमः ॥ १०० ॥

अर्थ-दुष्ट पवन और जल तथा क्रोधित ग्रहकी दृष्टिसे देहमें बड़े हुए दोष दुष्टरक्तसे मिलकर मसूरके आकार फफोलोंको उत्पन्न करते हैं उनको मसूरिका कहने हैं इनके होनेके समय ज्वर खुजली शरीरमें ऐंठन अरुचि भ्रम त्वचाम सूजन और भ्रम होता है ॥ १०० ॥

वानीरविल्वजनितंकथितंपयुपितमुत्तरेदिवसे ।

चैत्रस्यपापरोगो न भवतिपिबतांकचिन्नृणाम् १०१ ॥

अर्थ-वेत और वेलका काय कर उसे बासी कर दूसरे दिन पान करनेसे मनुष्यको कर्मा मसूरिका रोग नहीं होता ॥ १०१ ॥

चिंचाफलेनसहितारजनींप्रपेय्य

येशीतलेनसलिलेनसकृत्पिबन्ति ।

तेषांभवन्तिनहिशीतलिकाःशरीरे

कार्यत्विदंप्रथममेवतदुद्भवस्य ॥ २ ॥

अर्थ—वा चिन्वा (तिन्तिडी) के फलके साथ हल्दी पीसकर जो एकवारभी शीतल जलसे पान करते हैं उनके शरीरमें शीतला नहीं होती यह माता निकलनेसे पहले ही करना चाहिये ॥ २ ॥

स्तवपाठैःसिद्धमंत्रजपैर्ग्रहविधानतः ।

शीतलाराधनैश्चण्डीपाठैश्चैतामुपाचरेत् ।

अयमेवविधिःकार्यःकोद्रवाख्यामयेपिच ॥ ३ ॥

अर्थ—स्तुतिपाठ सिद्धमंत्रजप ग्रहके विधानसे शीतला आराधन तथा चण्डीपाठसे उपचार करना चाहिये यही विधि कोद्रव नामक रोगमें करे ॥ ३ ॥

अभ्यंगधौतांबरधारणानिशमश्रुक्रियामंगललेपकृत्यम् ।

वाद्यारवादीनिचतद्गदात्तंगेहेऽप्रशस्तानिवदन्ति संतः ॥ ४ ॥

अर्थ—तेल मलना धुएँ वस्त्र पहरना हजामत करानी मंगल लेपकृत्य चाजोंके शब्दादि करने इसमें अच्छे नहीं हैं ऐसा सन्त कहते हैं ॥ ४ ॥

अथाम्लपित्तम् ।

अविपाककुमकुदतित्ताम्लोद्गारगौरवैः ।

दाहोद्वेग्लयोश्चैवारुचिःस्यादम्लपित्तके ॥ ५ ॥

कूष्माण्डमथचानीयपक्वतत्खंडकानिच ।

निस्त्वचानिविधायाथरससेरमितैर्बुनि ॥ ६ ॥

पाचयित्वाततःकुर्यात्कसारंतस्यगोघृते ।

नालिकेरस्यमज्जानंप्रस्थमात्रंमहोज्ज्वलम् ॥

पिष्ट्वागोपयसातस्यकसारंगोघृतेचरेत् ॥ ७ ॥

वेदसेरमितेदुग्धेप्रस्थद्वयमितांसिताम् ।

निक्षिप्यपाकंकृत्वातुकसारौतत्रनिक्षिपेत् ।

शृंगाटकंशुटिंचोरंमुस्तंचतजपत्रजे ॥ ८ ॥

कसेरुपर्पटोशीरधान्यकंगोस्तनीमपि ।

श्रीखंडंचूर्णितंकृत्वापंचटकमितंपृथक् ॥ ९ ॥

तच्चूर्णनिक्षिपेत्पाकेखादेत्तंपलसम्मितम् ।

यदम्लपित्तनगतंयुतैर्नानाविधौषधैः ॥

असाध्यमपित्तचूर्णनश्यत्यस्यनिषेवणात् ॥ ११० ॥

अर्थ—मोजनका न पचना एकसाथ घबराहट होनी कड़वी और खट्टी डकारोंका आना देहमें गुरुता हृदय और कंठमें दाह अरुचि इन लक्षणोंसे अम्लपित्त जाने पेटमें ले उसे छीलकर छःसेर जलमें पकावै उसे पकाकर गौके घीमें उसका पाक करे फिर उसमें नारियलकी मींग (गोला) एक सेर डाले गौके दूधसे पसिकर उसका पाक गौके घीमें मिलादे फिर चार सेर गौके दूधको ले दोसेर मिश्री ले उसकी चासनी कर उस पाकको उसमें डालदे पीछे मिंघाडेके मींग छोटी इलायची काली सठी नागरमोथा तज पत्रज कसेरु पर्पटी खस दाख और चन्दनका चूरा यह सब औषधी पांच पांच टंक लेकर इस चूर्णको उस चासनीमें डाले एक पलः प्रतिदिन इसका सेवन करे जो अम्लपित्त अनेक प्रकारकी औषधियोंके करनेसे न गया हो वह इसके सेवनसे असाध्य अम्लपित्त भी नष्ट होजाता है ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

अभयापिप्पलीद्राक्षासिताधन्वयवासकम् ॥

मधुनाकंठहृदाहमूच्छालेप्माम्लपित्तनुत् ॥ ११ ॥

गुडकूष्माण्डकंचैवतथाखण्डामलक्यपि ॥

गुडक्षीरकणासिद्धंसपिरत्रप्रयोजयेत् ॥ १२ ॥

अर्थ-हरड पीपल दाख मिश्री जवासा यह शहदके साथ सेवन करनेसे कंठरोग हृदयरोग दाह मूर्छा श्लेष्म और पित्त-रोग दूर करता है गुड पेठा खांड आमलकी वा गुड दुग्ध और पीपलमें सिद्ध किया घृत इसमें प्रयोग करे ॥ ११ ॥ १२ ॥

अथोदईः ।

वरटीदंशवद्देहेकंडूलःशीतपित्तजः ।

उदईःसपृथक्प्रोक्तउत्कोठोभूरितोदवान् ॥ १३ ॥

अर्थ-शीतपित्तसे शरीरमें तत्तैयाके काटनेकी समान ददोरे चमड़ेके बाहर होजाते हैं उसमें खाज और सुईछेदनेकीसी पीडा होतीहै उदई ॥ १३ ॥

मेथिकांमरिचंरात्रियवातींकारवीमपि ।

अहित्थमेतान्यादायपृथक्पलमितानितु ॥ १४ ॥

वलिंपलद्वयमितंगोसर्पिःक्षीरशोधितम् ।

चूर्णविधायसर्वेपामार्द्रकस्यरसेनतु ॥ १५ ॥

विधायगुटिकामेकांप्राद्धटंकद्वयोन्मिताम् ।

प्रत्यहंप्रातरश्रीयादुदईदेर्विनाशिकाम् ॥ १६ ॥

अर्थ-मेथी, कालीमिर्च, हल्दी, अजवायन, कलौंजी, अहिफेन (अफीम) यह पृथक् पृथक् चार २ तोले ले गन्धक दो पल लेकर गौके दूध वा घीमें शोधकर इन सबकाचूर्ण कर अदरखके रसके साथ इसकी गुटिका बनाय ढाई टंक प्रतिदिन खांय तो उदईरोग दूर हो ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

यःसर्पिःसैधवाभ्यक्तदेहश्चारक्तकंवली ।

शयीततस्यशाम्यंतिशीतपित्तादयोगदाः ॥ १७ ॥

अर्थ-जो सैधा, घृत मिलाकर देहमें मल काला कम्बल ओढ शयन करे उसके शीतपित्तादि रोग शान्त होतंहैं १७॥

घृतगैरिकसिंधूत्थकुसुम्भकुसुमैःसमैः ।

उद्वर्त्तनंप्रशंसन्तिकोठोदर्दादिनाशनम् ॥ १८ ॥

अर्थ-घी, गेरू, सेंधानोन, कुसुम्भके फूल इनको बराबर ले इनका उद्वर्त्तन करनेसे कुष्ठ उदर्द आदि नाश होजातेहैं ॥१८॥

सगुडंदीप्यकंयस्तुकिंचित्कटुकतैलकम् ।

भक्षयेत्तस्यनश्यंतिसोदर्दाःकोठसंज्ञकाः ॥ १९ ॥

अर्थ-जो मनुष्य गुड, अजवायन, कुष्ठ कडवे तैलके साथ भक्षण करे उसके उदर्द कोठ आदि रोग दूर होने हैं ॥१९॥

अथ कुष्ठम् ।

अत्युग्रपातकाहारघर्मश्रमविरेकिनाम् ।

कुष्ठान्यष्टादशनृणांजायंतेचोग्रकर्मणाम् ॥ १२० ॥

अर्थ-उग्रपातक विरुद्धभोजन गरमी धूपमें रहनेसे श्रम और विरेचन अधिक करनेसे उग्रकर्मवाले मनुष्योंके शरीरमें अठारह प्रकारके कोष्ठ उत्पन्न होते हैं ॥ १२० ॥

पथ्याकरंजसिद्धार्थनिशावल्लुजसैन्धवेः ।

विडङ्गसहितैःपिष्टैर्लेपोमूत्रेणकुष्ठजित् ॥ २१ ॥

अर्थ-हरड, करंजुआ, सरसों, दारुहलदी, लालचंदन, सेंधव, वायाविडंग, इन सबको चूर्ण कर गोमूत्रके साथ लेपन करनेसे कोष्ठ दूर होतेहैं ॥ २१ ॥

एलाकुष्ठविडंगा निशताह्वाचित्रकोबला ।

दंतीरसांजनंचेतिलेपःकुष्ठविनाशनः ॥ २२ ॥

अर्थ-बड़ी इलायची, कुष्ठ, वायविडंग, सोंफ, चित्रक, खरंटी, देन्ती, रसात इनका लेप करनेसे कुष्ठ दूर होनाहै २२ ॥

भल्लातकसहस्रैकं त्रिफलावारिणाक्षिपेत् ।

द्रोणमात्रेपचेत्तावद्यावत्पादावशेषितम् ॥ २३ ॥

अर्थ-एक सहस्र मिलावे त्रिफलेके जलमें डालें और १०२४ तोले जलमें पकावें जब चौथाई शेष रहजाय ॥ २३ ॥

शर्करायादशपलान्येकत्राकुचिकापलम् ।

तथैवात्रचदेयानिपलानिदशगुग्गुलोः ॥ २४ ॥

अर्थ-तब उसमें ४० तोले मिश्री डालें ४ तोले सोमराजि ले और इसीप्रकार ४० तोले गुग्गुल डालें ॥ २४ ॥

खदिरारिष्टमंजिष्ठाबीजकंचेन्द्रवारुणी ।

चित्रकंद्वेहरिद्रेचदेवदारुर्हरीतकी ॥ २५ ॥

भाङ्गीचेतिचसर्वेषांप्रत्येकंचपलाद्धंकम् ।

प्रक्षिप्यगुटिकाकार्यानाम्नासर्वांगसुन्दरी ॥ २६ ॥

अर्थ-खैरसार नीमकी छाल मजीठ बिजौरा इन्द्रायन चीता दोनों हलदी हरड देवदारु भारंगी यह सब औषधी दो २ तोले ले उस चासनीमें डालकर सर्वांगसुन्दरी नामवाली यह गुटिका बनावें ॥ २५ ॥ २६ ॥

प्रत्यहंभक्षयेत्कुष्ठीत्वेतांबदरमात्रया ।

सर्वाण्येवोग्रकुष्ठानिशीघ्रमेवव्यपोहति ॥ २७ ॥

अर्थ-कुष्ठी बेर प्रमाण इसको प्रतिदिन खाय तो बहुत शीघ्र सब प्रकारके कुष्ठोंको दूर करतीहै ॥ २७ ॥

शरपुंखारणीकृष्णधत्तूरार्कमकोरिकाः ।

निर्गुण्डीहिंसिकाशम्यउरुबूकस्तथैवच ॥ २८ ॥

अर्थ-शरफोंका धमासा काली मिरचधतूरा आक मकोय सिन्दुवार जटामांसी अमलतास लाल एरण्ड ॥ २८ ॥

एपांत्वचःसमाश्छायाशुष्काःकृत्वाततोभिपक्व ।

तैलंपातालयन्त्रेणनिष्कास्यप्रत्यहंतुतत् ॥ २९ ॥

अर्थ-इनकी छाल लेकर छायामें सुखावें और इनका पातालयन्त्रसे तेल निकाल ले ॥ २९ ॥

खादेन्मापमितंकुष्ठीमंडलादिव्यकायवान् ।

शुद्धसूतसमोगंधोमृतायस्ताम्रगुग्गुलुः ॥ १३० ॥

त्रिफलाचमहानिवश्चित्रकश्चशिलाजतु ।

इत्येतच्चूर्णितंकुर्यात्प्रत्येकंपलसंमितम् ॥ ३१ ॥

चतुःपष्टिकरंजस्यबीजचूर्णफलानिवै ।

तावद्देयंमृतंताम्रमध्वाज्याभ्यांविलोडयेत् ॥ ३२ ॥

स्निग्धभांडेस्थितंखादेद्विनिष्कंसर्वकुष्ठनुत् ।

रसःकुष्ठकुठारोऽयंगलत्कुष्ठनिवारणः ॥ ३३ ॥

अर्थ-कुष्ठी मापभर इसको खाय तो मण्डलकुष्ठ दूर होकर दिव्यकाया होजातीहै । पारेकी भस्म गंधक लोह-भस्म ताम्रभस्म गुग्गुलु हरड बहेडा आमला वकायनकी छाल चीतेकी छाल शिलाजीत यह ग्यारह औषध सोलह २ शाण ले करंजेके बीज ६४ शाण सबका चारीक चूर्ण कर अन्नककी भस्म ६४ शाण लेकर चूर्णमें मिलादेवै, यह कुष्ठ-कुठार रस, गलित कुष्ठको दूर करता है ॥ १३०-३३ ॥

अथ कच्छुसिन्धुपामाददुहस्तिचमांदयः ।

निशासुधारग्वधकाकमाचीपत्रैःसदावींप्रपुनाटवीजैः ।

तकेणपिष्टैःकटुतैलमिश्रैःपामादिपृद्धर्तनमेतदिष्टम् ३४ ॥

अर्थ-हलदी मूर्वा अमलतास काकमाची देवदारु चक-
वडेके बीज इनको मट्टेके साथ पीस कड़वा तेल मिलाकर
लेप करनेसे पामा दहुरोग दूर होताहै ॥ ३४ ॥

व्योपमूलकबीजानिग्रपुत्राटफलानिच ।

एतान्यम्लप्रतिष्ठानिकुष्ठेपूद्घर्त्तनं परम् ॥ ३५ ॥

अर्थ-सोंठ मिरच पीपल मूलीके बीज चकवडेके फूल
यह कांजीके साथ कुष्ठरोगमें लेप करनेसे परम आरोग्यता
करते हैं ॥ ३५ ॥

सिध्मानांकिटिभानांचदद्रूणांचविशेषतः ।

अर्कपत्ररसेपक्वजनीकल्कसंयुतम् ॥

कटुतैलंहरेतूर्णमासात्कच्छूविचर्चिकाम् ॥ ३६ ॥

अर्थ-सिध्म किटिभ और दादरोगमें विशेषकर आकके
पत्रके रसमें हल्दीका कल्क कर कड़वे तेलमें पकाके लेप
करनेसे एक महीनेमें कच्छू और विचर्चिकारोग दूर होता-
है ॥ ३६ ॥

गुंजाचित्रकशंखभस्मरजनीदूर्वाभयालांगली-

सुक्सिन्धूत्थकुमारिकाजलधरार्कक्षीरधूमेशजैः ॥

दद्रुमैडगजाविडंगमरिचक्षौद्रैश्चखारीयुतै-

गोमूत्रैर्गजचर्मदद्रुरंकसाकण्डूघ्नमुद्घर्त्तनम् ॥ ३७ ॥

अर्थ-चोंटली चीता शंखकी भस्म हलदी दूर्वा हरद
करिहारी सेहुंड सेंधानोंन बडी इलायची धीकुवोर वा (मा-
लती) नागरमोथा आकका दूध चकवड (चक्रमर्दक) वा
(दादमर्दक) वायविडंग कालीमिर्च शहद खारिनो-

यह सब बराबर लेकर गोमूत्रमें सिद्ध कर लेप करेतौ- गज-
चर्म दड्डु रकस खुजली आदि रोगोंको दूर करता है ॥ ३७ ॥

मृदूनिताम्रपत्राणितैलाद्यैः शोधितानि च ।

तच्चतुर्गुणसिन्धूत्थचूर्णलिप्तानि कारयेत् ॥ ३८ ॥

उपर्यधो निधाया होरात्रमेकं भिषग्वरः ।

तैलं ताम्राद्विगुणितं निंबूरसविमर्दितम् ॥ ३९ ॥

निश्चन्द्रिकीकृतं तेन तानि पत्राणि लेपयेत् ।

स्थापयित्वा तानि वस्त्रे ततस्तेनैव वेष्टयेत् ॥ ४० ॥

अर्थ—कौमल ताम्रपत्र तैलादिमें शोधन करे उनसे चौ-
गुना सेंधा उनके ऊपर नीचे लगाकर एकरात्रितक रहने दे
फिर ताम्बेसे दूने तेल और नींबूके रसमें उसे खरल करे
जबतक कि तेलकी बूंदोंकी चन्द्रिका न मिटे तबतक नींबू
और तेलको खरल करे जब चन्द्रिका मिटजाय तब ताम्बेके
पत्रपर उसे लपेटे फिर उसके ऊपर कपरोटी देकर
फिर वह तेल उसपर लेपन करे ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

सप्तवारं तु मृच्छितवस्त्रैः संवेष्टयेत्ततः ।

विधाय गोलकं शुष्कं पक्कं गजपुटेन तत् ॥ ४१ ॥

स्वांगशीतं समुद्धृत्य गुंजाद्वयमितं नरः ।

सितयाशाणमितया चतुःपिप्पलियुक्तया ॥ ४२ ॥

युक्तं संभक्षयेत्प्रातः शाकाम्लरहिताशनः ।

मंडलं वातरक्तं वसभयं चोपदंशकम् ॥

दद्रुकं द्रुं विसर्पं च निश्चितं नाशयेद्भुतम् ॥ ४३ ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानंदमहाराजैरचितं वैद्यरत्नं तृतीयः प्रकाशः ॥ ३

अर्थ—फिर सात बार मृत्तिकाको लपेट फिर उसके ऊपर वस्त्र लपेटै इसप्रकार उसका गोला बनाय सुखाकर गज-पुटमें फूंकदे ठंढा होनेपर उसको निकालले उसको दो चोंटलीमात्र चारमासे मिश्रीके साथ खानेसे और पीपलके साथ सेवन करनेसे अर्थात् प्रातःकाल खानेसे शाक और अम्ल पदार्थका सेवन करनेसे मण्डल वातरक्त सभय उपदंश दाद खुजली विसर्प पिच्छी आदि रोग अवश्य और शीघ्रतासे नष्ट होतेहैं ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानन्दभिरचिते वैद्यरत्ने पण्डितज्वालाप्रसाद-

मिश्रवृत्तभाषाटीकाया तृतीयः प्रकाशः ॥ ३ ॥

अथ शिरोरोगः ।

अकालपलितं पीडाः सूर्यावर्त्तार्द्धभेदकाः ।

इत्यादयः शिरोरोगास्तान्यथादोषमाहरेत् ॥ १ ॥

अर्थ—अकालमें बालोंका सफेद होना शिरमें दर्द सूर्यावर्त्त आधाशीशी इत्यादि शिरके रोग होते हैं यथादोष उनको शोधन करना चाहिये ॥ १ ॥

कुष्ठमेरुण्डजं मूलं लेपात्कांजिकपेपितम् ।

शिरोर्तिनाशयत्याशुपुष्पं वामुचुकुन्दजम् ॥ २ ॥

अर्थ—कूठ अण्डकी जड़ कांजीके साथ पीसकर लेप करनेसे शीघ्र शिरकी पीडा नष्ट होतीहै अथवा मुचुकुन्दके फूल पीसकर लगावै ॥ २ ॥

सशर्करं कुंकुममाज्यभृष्टं नस्यं प्रदेयं पवनासृगुत्थे ॥

भ्रूकर्णनासाक्षिशिरोर्द्धशूलेदिनाभिवृद्धिप्रभवेऽपि रोगे ३

अर्थ—केशरको घृतसे भून उसमें कन्द मिलायकर नास देनेसे वातरक्तविकार भों, कान, नाक, आँखपीडा, आधा-शीशी दुपहरतक शिरका दर्द घटना फिर बढ़ना आदि अनेकपीडा शान्त होतीहैं ॥ ३ ॥

कृष्णाब्दशुंठीमधुकशताह्वोत्पलवातकैः ।

जलपिष्टैःशिरोलेपःसद्यःशूलनिवारणः ॥ ४ ॥

अर्थ—कालाजीरा नागरमोथा सोंठ मुलैठी सोंफ नील-कमल असनपर्णी इनको जलमें पीस लेप करनेसे बहुत शीघ्र शिरकी पीडा दूर होती है ॥ ४ ॥

मधुकमधूकविडंगैःसभृंगराजनागरैर्घृतंसिद्धम् ।

पङ्क्तिविंदुनस्यदानादेतच्छीर्षामयंहन्ति ॥ ५ ॥

अर्थ—महुआ मुलैठी वायविडंग भृंगराज सोंठ इनको घृतमें सिद्ध कर छः बूंद नासिकामें टपकानेसे शिररोग दूर होताहै ॥ ५ ॥

वृहतीफलरसपिष्टगुंजायाःफलमथापिवामूलम् ।

हेमनिघृष्टंलितंव्यपनयतिमहेन्द्रलुप्तारुच्यम् ॥

अर्द्धमूर्द्धव्यथाखिन्नःसितांशीतांबुनापिवेत् ॥ ६ ॥

अर्थ—कटेरीके फलोंका रस पीसकर उसमें चोंटलीके फल वा उसका मूल धतूरेके साथ पीसकर लेप करनेसे इन्द्रलुप्तरोग दूर होता है (जो शिरके बाल गिरजाते हैं वह इन्द्रलुप्त कहाता है) जो आधे शिरमें पीडा हो तो मिश्री डाल शीतलजल पिये ॥ ६ ॥

अथ नेत्ररोगः ।

वातात्पित्तात्कफाद्रक्तादभिष्यंदश्चतुर्विधः ।

प्रायेणजायतेघोरःसर्वनेत्रामयाकरः ॥ ७ ॥

अर्थ—वात पित्त कफ और रक्तसे चारप्रकारका नेत्राभि-
ष्यन्द होता है अर्थात् नेत्र दुखने आतेहैं यह नेत्रोंका
भयदायी घोर रोग कहा है ॥ ७ ॥

घृतभृष्टजलपिष्टं वस्त्रनिविष्टं तिरीटमपहरति ।

दार्वाकाथपरिभुतमाश्रयोत्तनतोक्षिकोपगदान् ॥ ८ ॥

अर्थ—घीमें भून जलमें पीस वस्त्रमें छानकर लोध नेत्रों-
पर लगानेसे सबप्रकारके रोग दूर करता है अथवा दारु-
हलदीका काथ कर आश्रयोत्तन करनेसे आंखें अच्छी हों ॥ ८ ॥

जात्याः पत्रैर्घृते भृष्टैश्चक्षुष्यमुपनाहनम् ।

अथवानिवपत्रैः स्यादुपनाहोक्षिरोगजित् ॥ ९ ॥

अर्थ—अथवा चमेलीके पत्ते घीमें भून नेत्रोंमें घुँद डालें
अथवा नीमके पत्तोंका लेप करना नेत्ररोग दूर करता है ॥ ९ ॥

यष्टीगैरिकसिन्धूत्थदार्वाताक्ष्यैः समांशकैः ।

जलपिष्टवहिलेपः सर्वनेत्ररुजापहः ॥ १० ॥

अर्थ—अथवा मुलैठी गेरू सेंधानोंन दारुहलदी रसोत्त
इनको बराबर ले जलमें पीस पलकोंपर लेप करनेसे सब
प्रकारका नेत्ररोग दूर होता है ॥ १० ॥

जातारोगाविनश्यंति न भवन्ति कदाचन ।

त्रिफलायाः कषायेण प्रातर्नयनधावनात् ॥ ११ ॥

अर्थ—सब रोग दूर होकर फिर कभी नहीं होते हैं अथवा
त्रिफलेके काढ़ेसे प्रातःकाल प्रतिदिन नेत्र धोवे ॥ ११ ॥

भुक्त्वा पाणितलं घृष्ट्वा चक्षुषोर्यदि दीयते ।

अचिरणवतद्वारिति मिराणि व्यपोहति ॥ १२ ॥

१ घोटकीफिटना । नेत्रोंको टप्पाटकर कंजंगुलके इन्तरसे नेत्रोंमें
दूध काढ़े आदिके घुँद डालनेको आश्रयोत्तन कहतेहैं ।

अर्थ-अथवा भोजन करके नेत्रोंको हथेलीसे अच्छीतरह प्रतिदिन मलनेसे वह जल बहुत शीघ्र तिमिररोगको दूर करता है आचमन कर हथेली घिसके नेत्रोंपर धरे ॥ १२ ॥

विगतघननिशीथेप्रातरुत्थायनित्यं

पिबतिखलुनरोयोघ्राणरंध्रेणवारि ।

सभवतिमतिपूर्णश्चक्षुपाताक्षर्यतुल्यो

वलिपलितविहीनःसर्वरोगैर्विमुक्तः ॥ १३ ॥

अर्थ-जब अर्द्धरात्रिके समय बादल न हों तब जो मनुष्य प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर नासिकाके द्वारसे जल पीताहै उसके नेत्र गरुडकी समान तीक्ष्ण होते हैं बुद्धि बढ़ती- है बालि और बालोंका पकना यह सब रोग दूर होते हैं ॥ १३ ॥
यस्त्रैफलंचूर्णमपथ्यवर्जीसायंसमश्रातिसमाक्षिकाज्यम् ।
समुच्यतेनेत्रगतैर्विकारैर्भृत्यैर्यथाक्षीणधनोमनुष्यः १४ ॥

अर्थ-जो अपथ्यको त्यागकर संध्यासमय घृत और शह-दके साथ त्रिफलेको खाता है उसके सब नेत्रविकार ऐसे छूट-जाते हैं जैसे क्षीण धनवाले मनुष्यको नौकर छोड़ जाते हैं ॥ १४ ॥

वटक्षीरेणसंयुक्तंश्लक्ष्णंकर्पूरजंजः ।

क्षिप्रमंजनतोहन्तिशुक्रंवापिघनोन्नतम् ॥ १५ ॥

अर्थ-बटके दूधके साथ कपूरको घिसकर नेत्रमें लगानेसे कठिन शुक्ररोग दूर होता है ॥ १५ ॥

पिप्पलीत्रिफलालाक्षालोध्रंसैन्धवसंयुतम् ।

भृंगराजरसेघृष्टंगुटिकांजनमिष्यते ॥ १६ ॥

अमंसतिमिरंकाचंकडूंशुक्रंतथार्जुनम् ।

अंजनंनेत्रजात्रोगान्निहंत्येतन्नसंशयः ॥ १७ ॥

अर्थ-पीपली त्रिफला लाख लोध सैधानमक इनको भांगरेके रसमें घिसकर गुटिका बनाय नेत्रोंमें लगावे तो अर्म तिमिर काच कंदू शुक्र फूला अर्जुन तथा अन्यभी नेत्रोंके रोगोंको यह अंजन दूर करता है इसमें संदेह नहीं है ॥ १६ ॥ १७ ॥

अथ कर्णरोगः ।

करोतिविगुणोवायुर्मलंसंगृह्यकर्णयोः ।

सकफःपाकवाधिर्यशूलस्रावाक्षिकान्गदान् ॥ १८ ॥

अर्थ-कुपित हुआ वायु कानमें प्राप्त हो कानोंका मल ग्रहण कर कफसे युक्त हो कर्णपाक बहरापन शूल स्राव तथा नेत्ररोगोंको करता है ॥ १८ ॥

अर्कस्यपत्रपरिणामपीतमाज्येनलिप्तंशिखिनाचतप्तम् ।

आपीड्यतोयंश्रवणेनिपित्तंनिहंतिशूलंवहुवेदनंच १९॥

अर्थ-जो जड़की ओरसे पीले होगये हों ऐसे आकके पत्तोंपर घी लगाकर आगके ऊपर सेके फिर उनको मसलकर वह अर्क कानम डालनेसे कानका शूल और वेदना नष्ट होती है ॥ १९ ॥

हिंयुतुम्बुरुगुंठीभिःसिद्धंतेलंतुसार्पपम् ।

कर्णशूलेप्रणादेचवाधिर्येपि हितंमतम् ॥ २० ॥

अर्थ-हिंगु, तुम्बुरु, सोंठ इनके साथ सरसोंका तेल सिद्धकर कानमें डालनेसे कानकी पीडा दूर होती है ॥ २० ॥

समुद्रे नवूर्णतुन्यस्तंश्रवसिसत्त्वे ।

पृथक्त्वावत्रणंसाद्रहन्तिध्वांतमिवांशुमान् ॥ २१ ॥

अर्थ-यदि कानसे राध बहती हो तो समुद्रकेनका चूर्ण कर कानमें डाले इससे कानका पकना और बहना ऐसे दूर होता है जैसे सूर्य अंधकारको दूर करता है ॥ २१ ॥

सूर्यावर्तेर्करसंरसंवासिंदुवारजम् ।

लांगलीमूलतोयंवात्रूपणंवापिचूर्णितम् ॥ २२ ॥

एतेयोगास्तुचत्वारः पूरणात्कृमिकर्णके ॥

कृमीन्निर्मूलयंत्याशुशतपद्यस्त्रपादिकान् ॥ २३ ॥

अर्थ—सूर्यावर्तमें आकका रस वा सिन्दुवारका रस वा कालिहारकी जड़का रस वा त्रिकुटा पीसकर यह चार प्रयोग कानोंमें कृमि पड़जाय तो करना चाहिये यह बहुत शीघ्र कानोंके कीड़े निर्मूल करता है तथा शतपदी अथ पादिक को दूर करता है ॥ २२ ॥ २३ ॥

अथ न सारोगः ।

अर्शासिपीनसम्बावः क्वचिच्छ्लेष्णिग्मूययोः ।

रोगानासोद्भवास्तेपांशयो न स्यादिभिर्भवेत् ॥ २४ ॥

अर्थ—अर्श पीनस राधका निकलना तथा रुधिरका निकलना यह ना रोग हैं नस्यादि देनेसे यह रोग नाशको प्राप्त होते हैं ॥ २४ ॥

गुडमरिचविमिश्रं पीतमाशुप्रकामं

हरतिदधिनराणां पीनसंदुर्निवारम् ।

यदितुसघृतमन्नं श्लक्ष्णगोधूमचूर्णैः

कृतमुपहरते सौतत्कुतो स्यावकाशः ॥ २५ ॥

अर्थ—गुड और कालीमिरच मिलाकर दही पीनेसे महाकठिन पीनसरोग दूर होता है और यदि घृतसहित गेहूंका चूर्ण प्रतिदिन सेवन किया जाय तो यह किसी प्रकार नहीं टहर सकती ॥ २५ ॥

पाठाद्विरजनीमृर्व्वापिप्पलीजातिपल्लवैः ।

दंत्यायत्तेलं संसिद्धं न स्यतः पीनसापहम् ॥ २६ ॥

अर्थ-पाठा दोनों हल्दी मूर्वा पीपल जाईके पत्ते दन्ती-
मूल, इनसे तेल तयार कर पके पीनसमें नास देनेसे पीन-
सरोग दूर होता है ॥ २६ ॥

नासाशोपेक्षीरपानंससितंचप्रशस्यते ।

सवचंचूर्णमाघ्रायवाससापोटलीकृतम् ॥

कारवीवस्त्रवद्धावाप्रतिश्यायमपोहति ॥ २७ ॥

अर्थ-नासाके शोषमें मिश्री डालकर क्षीरपान करे अथ-
वा वचका चूर्ण कर कपड़ेकी पोटलीमें रख सूँधे अथवा
करोँजी कपड़ेमें बांध सूँधनेसे जुखाम दूर होता है ॥ २७ ॥

अथ मुखरोगः ।

सरक्तःकुपितःश्लेष्माकरोत्यास्यगदान्वहून् ।

दौर्गन्ध्यपिडकापाकजिह्वादोपान्समासतः ॥ २८ ॥

अर्थ-रक्तसहित श्लेष्मा कुपित होकर, मुखमें अनेक
प्रकारके रोग उत्पन्न करता है जैसे दुर्गन्ध, पिडिका, मुखपाक,
जिह्वारोग यह संक्षेपसे कहे हैं ॥ २८ ॥

मुखरोगेषुसर्वेषुक्षिपेन्मूलंपुनर्नवा ।

तस्यमूलप्रपातेनमुखरोगःप्रशाम्यति ॥ २९ ॥

अर्थ-सब प्रकारके मुखरोगोंमें पुनर्नवाकी जड़ मुखमें डाल-
नी चाहिये इसके डालनेसे मुखरोग शान्त होते हैं ॥ २९ ॥

जातीपत्रामृताद्राक्षदेवदारुफलत्रिकैः ।

क्वाथःक्षौद्रयुतःशीतोगण्डूपोमुखपाकजित् ॥ ३० ॥

अर्थ-जाईके पत्ते, गिलोय, दास, देवदारु, त्रिकला
इनका काढ़ा कर शहदेके साथ ठंडा कर पिये तो मुख
पकना बंद हो ॥ ३० ॥

कांचनारत्वचःकाथःप्रातर्गंडूपकेधृतः ।

जिह्वादारणकंहन्तिस्फोटानपिरुजाकरान् ॥ ३१ ॥

अर्थ—श्वेतकचनारकी छालका काढा कर प्रातःकाल ठंडा कर कुछा करै तो जिह्वाका फटना फुनसी छाले जो मुखमें होवें सब दूर होते हैं ॥ ३१ ॥

एलामधूच्छिष्टगुडेनपक्वतेलंघृतंवाविनिहन्तिलेपात् ।
त्वग्भेदपारुष्यरुजोऽधरस्यपूयास्रसंस्नावमपिप्रसह्य ३२ ॥

अर्थ—इलायची मोम यह गुडमें पकाकर तेल वा घृतमिलाकर लेप करनेसे होठोंका फटना पीडा राधका निकलना रुधिरका निकलना आदि रोग दूर होते हैं ॥ ३२ ॥

भद्रमुस्ताभयाव्योपविडंगारिष्टपल्लवैः ।

गोमूत्रपिष्टांगुटिकांछायाशुष्कांप्रलेपयेत् ॥ ३३ ॥

अर्थ—और नागरमोथा, हरड, त्रिकुटा, वायविडंग, नीमके पत्ते इनको गोमूत्रसे पीस चटी कर छायामें सुखाले ३३

तांनिधायमुखेमुप्याच्चलदंतातुरोनरः ।

नातःपरतरंकिञ्चिच्चलदंतस्यभेजम् ॥ ३४ ॥

अर्थ—दांत हिलनेमें और दातोंकी पीडामें इसको मुखमें डाले और सोरहे इससे अधिक दांत हिलनेकी पीडा दूर करनेवाली कोई औषधी नहीं है ॥ ३४ ॥

जातीपत्रपुनर्नवागजकणाकोरंगकुष्ठंवचा-

शुंठीदीप्यहरीतकीसमकृतंचूर्णंमुखेधारितम् ।

वातघ्नंकृमिदन्तशूलशमनंदुर्गंधिदोषापहं

शैथिल्यक्षयकारिदंतपटुतावीजंचजात्यादिकम् ३५

अर्थ-जाईके पत्ते पुनर्नवा गजपीपल छोटी इलायची कूठ वच सोंठ अजवायन हरड इनको समान भाग ले चूर्ण कर मुखमें रखनेसे वात, कृमि, दन्तशूल, दुर्गन्धिदोष, शिथिलता अर्थात् दांतोंका हिलना आदि रोग दूर होते हैं तथा जाईके बीजभी दांतोंको दृढ करते हैं ॥ ३५ ॥

कृष्णजीरककुपेन्द्रयवघर्षणतरुयहात् ।

मुखपाकव्रणक्लेददौर्गन्ध्यमुपशाम्यति ॥ ३६ ॥

अर्थ-पीपल जीरा कूठ इन्द्रजौ इनके चबानेसे तीन दिनके मुखपाक मुखव्रण मुखका चिकटापन और दुर्गन्ध यह सब दूर होता है ॥ ३६ ॥

तेजोवतींदारुनिशांसकृष्णां

यवाग्रजंताक्षर्यगिरिचपाठाम् ।

क्षौद्रेणकुर्याद्गुटिकां मुखेन

तांधारयेत्सर्वगलामयघ्नीम् ॥ ३७ ॥

अर्थ-गजपीपल, दारुहलदी, हलदी, पीपल, जवाखार, रसौत, पाठा इनको पीस शहद मिलाकर गुटिका मुखमें रखनेसे सम्पूर्ण गलेके रोग दूर होते हैं ॥ ३७ ॥

तांवूलमध्यस्थितचूर्णकेनदग्धंमुखंयस्यभवेत्कथंचिद् ।

तैलेनगंडूपमसौविदध्यादाम्लारनालेनपुनःपुनर्वा ३८॥

अर्थ-जिसका मुख ताम्बूलमें चूना अधिक लगनेसे फट गया हो वह तेलसे कुछा करे अथवा इम्ली सिरकेसे बारंवार कुछा करे ॥ ३८ ॥

अथ स्त्रीरोगाः । तत्रादौ कुसुमजननविधिः ।

सद्युद्धस्थामतिलानांकाथःपीतःसुशीतलोनार्याः ।

जनयतिकुसुमंसहसागतमपिसुचिरंनिरातंकम् ॥ ३९ ॥

अर्थ—अब स्त्रीरोग कहते हैं यदि स्त्री रजोवती न होती हो तो गुडके साथ काले तिलोंका काढ़ा कर ठंडा करके पिये तो बहुतकालसे रजोवती न होनेवाली स्त्रीभी रजोवती होय ॥ ३९ ॥

अथ गर्भस्थितिः ।

विधिनामातुलंगस्यबीजानिसकलानितु ।

ऋत्वंतेदुग्धपिष्टानिपीत्वाप्रोत्यबलासुतम् ॥ ४० ॥

अर्थ—अब गर्भस्थिति कहते हैं बिजोंरे नींबूके बीज दूधमें पीसकर ऋतुके अनन्तर चौथेदिन पीनेसे स्त्रीके गर्भकी स्थिति होती है ॥ ४० ॥

नागकेशरमेकंतुपिष्टाक्षीरेणयावलाम् ।

पिवेत्सासुतमाप्नोतिऋत्वंतेचिरजीविनम् ॥ ४१ ॥

अर्थ—एक नागकेशरही अतिबलाके संग पीसकर दूधके साथ ऋतुके अन्नमें पीनेसे स्त्री चिरजीवी पुत्रको प्राप्त होतीहै इसमें संदेह नहीं ॥ ४१ ॥

पुष्पोद्धृतंलक्ष्मणायामूलंपिष्टंचकन्यया ।

ऋत्वंतेष्टदुग्धाभ्यांपीत्वाप्रोत्यबलासुतम् ॥ ४२ ॥

अर्थ—पुष्पनक्षत्रपर लक्ष्मणा (श्वेतमटकटेया कटेरी) इसके मूल कन्याके हाथसे उखाड़के लाकर पिसाये उसको ऋतुके अन्नमें घी और दूधके साथ पीनेसे अबला पुत्रको प्राप्त होतीहै ॥ ४२ ॥

काथेनहयगंधायाःसाधितंसघृतंपयः ।

प्रातःस्नात्वाबलापीत्वागर्भधत्तेनसंशयः ॥ ४३ ॥

अर्थ-असगंधके काढेके साथ गायिका दूध ओटाकर उसमें घी डाल ऋतुस्नान कर चौथे दिन स्त्री पानकर तो गर्भ धारण करती है इसमें संदेह नहीं है ॥ ४३ ॥

शिवलिंगीफलमेकमृत्वंतेयावलगिलति ।

बंध्यापिपुत्ररत्नलभेतसानात्रसंदेहः ॥ ४४ ॥

अर्थ-जो स्त्री ऋतुके अन्तमें एक शिवलिंगीके फलसे निगलले वह बंध्याभी पुत्रको उत्पन्न करे इसमें संदेह नहीं ॥ ४४ ॥

अथ गर्भसंरक्षणम् ।

पतंतंस्तंभयैद्गर्भकुलालकरमृत्तिकां ।

कंकतीमूलमाबद्धंकुमारीसूत्रकैटवम् ॥ ४५ ॥

अर्थ-जो कुम्हार बर्तन बनाते समय हाथ पोंछता जाता है उस मट्टीको पीनेसे गिरता हुआ गर्भ थम जाता है ॥ ४५ ॥

कटिदेशोनितंविन्यागर्भःस्तंभयतिध्रुवम् ।

कुशकाशोरुवृकाणामूलैर्गोक्षुरकस्यच ॥

शृतंदुग्धंसितायुक्तंगर्भिण्याःशूलनुत्परम् ॥ ४६ ॥

अर्थ-खरौंटीकी जड़ कौरी कन्याके कते सुवर्ण कमरमें बांधनेसे गिरता हुआ गर्भ थम जाता है कुश काश लाल एरण्डकी जड़ और गोखरू यह दूधमें ओटाकर भित्री डालकर निये तो गर्भिणीकी पीड़ा दूर हो ॥ ४६ ॥

ह्रीविरारलुरक्तचंदनबलाधान्याकवत्सादनी-

मुस्तोशीरयवासपर्पटविपाक्काथंपिवेद्गर्भिणी ।

नानाव्याधियुतातिसारगदकेत्वसस्तुर्वाज्वरे

योगोयंमनिभिःप्रानिगदितःशालामयेष्टुत्तमः ॥

अर्थ—ह्रीवैर सोनापाठा लाल चन्दन बरियारा धनिया गिलोय नागरमोथा खस जवासा पित्तपापडा और अतीस इनका काढा गर्भिणी पिये तो अनेक रंगकी पीडासहित अतिसार तथा रक्तप्रवाह ज्वर और मूतिकारोग नाश करनेमें यह उत्तम प्रयोग है ॥ ४७ ॥

अथ सुखप्रसवोपधम् ।

मातुलुंगस्यमूलानिमधुकंमधुसंयुतम् ।

घृतेनसहपातव्यंसुखंनारीप्रसूयते ॥ ४८ ॥

अर्थ—विजोरेकी जड़ मुलैठीका चूरन शहद घाँके साथ पियावे तो स्त्री सुखसे प्रसूति होगी ॥ ४८ ॥

गुंजामूलस्यखंडानिसप्तसप्तदलानिच ।

खंडितानिकटिस्थानिसुप्रसूतिंप्रकुर्वते ॥ ४९ ॥

अर्थ—चौंटलीकी जड़के साथ सात टुकड़े और सात पत्ते कमरमें बांधनेसे स्त्री सुखसे प्रसववती होगी ॥ ४९ ॥

बाणपुंखजटावाथविशल्यंकुरुतेंगनाम् ।

कलापक्षार्कऋतुदिङ्मन्वष्टाष्टादशांबुधीन् ॥ ५० ॥

विलिखेन्नवकोष्ठेषुत्रिंशाख्यंयंत्रमुत्तमम् ।

सुखंप्रसूयतेनारीदृष्ट्वावाचक्रवर्धनम् ॥ ५१ ॥

अर्थ—अथवा उभयतो तीसकां यंत्र लिखकर मिट्टीके शराबमें रखकर धूप देकर दियावे तो स्त्री सुखसे प्रसूति होगी उसका क्रम यह है कि क्रमसे नौ कोटोमें नीचे लिखे पत्रके अनुसार भरे तीसका यंत्र होगा इसीका आधा करनेसे पन्द्रहका यंत्र होगा जो नीचे दियावे वाचक्रवर्धनयंत्र लिखे ॥ ५०॥५१ ॥

४	१४	१३
१८	१०	३
८	६	१६

अथ अपरापालनविधिः ।

कचवेष्टितयांगुल्याघृष्टेकंठेसुखंपतत्यपरा ।

मूलेनलांगलक्यासंलिप्तेपाणिपादेवा ॥ ५२ ॥

अर्थ-बालोंसे वेष्टन कीहुई अंगुलीसे कंठमें घिसनै
अथवा कलिहारीकी जड़को पीस हाथ पैरोंमें लगानेसे
गर्भ मुक्त होताहै ॥ ५२ ॥

अथ सूतिकारोगः ।

अंगमर्दोज्वरःकंपःपिपासागुरुगात्रता ।

शोथःशूलातिसारीचसूतिकारोगलक्षणम् ॥ ५३ ॥

अर्थ-अंगमर्द ज्वर कंप पिपासा शरीरका भारीपन शोथ
शूल अतिसारका होना यह सूतिकारोगके लक्षण हैं ॥ ५३ ॥

दशमूलीशृतंतोयंकवोष्णंपिप्पलीयुतम् ।

पीतंतत्सूतिकारोगमुदग्रमपिकृंतति ॥ ५४ ॥

अर्थ-दशमूलका काढा कर उसमें पीपल डाल कुछ गरम
कर पीनेसे बड़ा हुआभी सूतिकारोग शान्त हो जाताहै ५४ ॥

नागरस्यपलान्यष्टौघृतस्यपलविंशतिः ।

क्षीराढकेनसंयुक्तंखंडस्यार्द्धतुलांपचेत् ॥ ५५ ॥

अर्थ-सोंठ आठ पल घी बीस पल दूध एक आठक २५६
तोले लेकर इसमें आधी तुला (२०० तोले) बूरा डालकर
पकावे ॥ ५५ ॥

शतात्वाचीरुद्वंज्योपंजिसुगंधिपयत्तिका ।

कारवीमसिचव्याग्निमुस्तानांचपलंपलम् ॥ ५६ ॥

शुद्धाभ्रकायंसंयोज्यंत्रिपलंचपृथक्पृथक् ।

स्वर्णतारंततोयोज्यंयथाचाग्निबलंभवत् ॥ ५७ ॥

लेहीभूतमिदंसिद्धं घृतभाण्डे निधापयेत् ।

तद्यथाग्निबलं खादेत्सूतिका तु विशेषतः ॥ ५८ ॥

वर्णवर्ण्य तथा युष्यं वली पलितनाशनम् ।

वयसः स्थापनं हृद्यं मन्दाग्निदीपनं परम् ॥ ५९ ॥

आमवातप्रशमनं सौभाग्यकरमुत्तमम् ।

मक्कलशूलशमनं सूतिकारोगनाशनम् ॥ ६० ॥

अर्थ—सौंफ जीरा त्रिकुटा तज पत्रज इलायची अजवा-
यन चिरींजी निगुण्डी चव्य चीता नागरमोथा यह सब
एकएक पल ले और शुद्ध अभ्रक ले पृथक् २ तीनतीन
पल ले यह सब वस्तु उसमें डालदे और जब यह लेहीभूत
अर्थात् चाटनेकी समान होजाय तब इसको घृतके पात्रमें
रखले इसको सूतिका अपने अग्नि बलके अनुसार खाय तो
बल वर्ण बढ़े आयुकी वृद्धि और वली तथा पलित रोगका
नाश होता है यह अवस्थाका स्थापन करनेवाला दिव्य हृदयको
आनंद बल देनेवाला मन्दाग्निको दीप्त करनेवाला आम-
वातका दूर करनेवाला सौभाग्य करनेवाला उत्तम मक्कल-
शूलशान्त करनेवाला और सूतिकारोगनाशक है ॥ ५८-६० ॥

आर्द्रहेमफलं पिप्पलाकटुतेलं चतुर्गुणम् ।

विपचेद्द्रटिकायुग्मतैलं हेमसुन्दरम् ॥

दुष्टप्रस्वेदशमनं सूतिकारोगनाशनम् ॥ ६१ ॥

अर्थ—गीले धतूरेके फल पीसकर उसमें चौगुना कड़वा
ल डालकर पकावे इसप्रकार दोघडीमें यह हेमसुन्दर
तेल बनजायगा यह दुष्ट प्रस्वेद (पसीने) का शान्त करने-
वाला तथा सूतिकारोगको दूर करता है ॥ ६१ ॥

अथ क्षीरविघर्जनम् ।

शतावरीक्षीरपिष्टापीतास्तन्यविवर्द्धिनी ।

कवोष्णंकर्णयापीतंक्षीरंक्षीरविवर्द्धनम् ॥ ६२ ॥

विदारीकंदस्वरसंपिबेद्रास्तन्यवर्द्धनम् ।

सहारिद्रंकुमार्यास्तुमूलंपानीयपेपितम् ॥

स्तनरोगंहन्तिलेपात्किंवाककौंटिकाजटा ॥ ६३ ॥

अर्थ—दूधके बढानेको शतावरीको दूधमें पीसकर पिये अथवा गरम दूधके साथ पीपलका चूर्ण पिये अथवा भुल-भुलाकर सुई कुम्हडा पिये अथवा विदारीकंदका स्वरस पिये हलदीके सहित घीकुवँरकी जड़ पीस स्ननपर लेप करनेसे स्तनरोग दूर होतेहैं ककौंटक जटामांसीका लेप करे तो क्या कहना है ? ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

अथ प्रदरः ।

अतिमार्गातिगमनप्रभूतसुरतादिभिः ।

प्रदरोजायतेस्त्रीणांयोनिरक्तक्षुतिःपृथुः ॥ ६४ ॥

अर्थ—अतिमार्गमें चलनेसे बहुत मैथु । करनेसे स्त्रियोंके प्रदररोग होताहै इसमें योनिमार्गसे रक्त बहताहै ॥ ६४ ॥

रक्तपूगीफलंमाजुफलंचैवरसांजनम् ।

धात्रीपुष्पंमोचरसंतंदुलामूलगौरिके ॥ ६५ ॥

एतेपांसमभागानांपलार्द्धमितिचूर्णकम् ।

प्रदरार्त्तापिवेत्रारीप्रत्यहंतंदुलांघुना ॥ ६६ ॥

अर्थ—लालपूगीफल माजुफल रसौत धायके फूल मोचरस चौराईकी जड़ गेरू इनको बराबर लेकर इनका चूर्ण

करले चावलके जलके साथ आधेपल प्रतिदिन प्रदररोग-
वाली स्त्रीको पिलावै तौ रोग शान्त हो ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

तडुलीयकमूलंहितंडुलांबुप्रपेपितम् ।

सताक्षर्यशैलंसक्षौद्रंप्रीतंप्रदरंजयेत् ॥ ६७ ॥

अर्थ—चौलाईकी जड़को चावलोंके पानीके साथ पीस-
कर उसमें रसोत और शहद डालकर पिये तो प्रदर दूर हो ६७

पिष्टंतंडुलतोयेनकुशमूलंससारघम् ।

सरसांजनमापीयप्रदरंत्रिदिनाजयेत् ॥ ६८ ॥

अर्थ—चावलके धोवनके जलसे कुशाका मूल पान कर-
नेसे तीन दिनमें प्रदररोग दूर हो ॥ ६८ ॥

जीरकप्रस्थमेकंतुक्षीरंद्व्याढकमेवच ।

प्रस्थाद्धलोध्रघृतयोःपचेन्मंदेनवह्निना ॥ ६९ ॥

लेहीभूतेथशीतेत्रसिताप्रस्थंविनिक्षिपेत् ।

चातुर्जात्कणाविश्वमजाजीमुस्तवालकम् ॥ ७० ॥

दाडिमंसंजंधान्यरजनीपटवासकम् ।

वंशजंचतवक्षीरीप्रत्येकंशुक्तिसम्मितम् ॥ ७१ ॥

जीरकस्यावलेहोयंप्रदरापहरःपरः ।

ज्वरावल्यारुचिश्वासतृष्णादाहक्षयापहः ॥ ७२ ॥

भूम्यामलकमूलंतुपीतंतंडुलवारिणा ।

द्वित्रैरेवंदिनेनार्याःप्रदरंदुस्तरंजयेत् ॥ ७३ ॥

अर्थ—जीरा सफेद १ प्रस्थ (१ सेर) दूध गायका २
आढक (८ सेर) आधे प्रस्थ गौका धी और लोध इसको
पानीसे पकावै ७३ यह गाढ़ा हो जाय तब इसमें सेरमर

मिश्री ढाले पीछे तज पत्रज इलायची नागकेशर पीपल
सोंठ कालाजीरा नागरमोथा सुगन्धवाला दाडिमीका
रस काकजंधा हलदी चिरोंजी अडूसा वंशलोचन तवा-
खीर यह प्रत्येक एकएक शुक्ति (४ तोले) ले यह जीरक
अवलेह प्रदररोगका हरनेवाला है ज्वर नैर्बल्य अरुचि श्वास
तृष्णा दाह क्षयका दूर करनेवाला है तथा भुईंआमलेकी
जड़ चावलोंके धोवनकेसाथ पीनेसे दोतीन दिनमेंही प्रदर-
रोग दूर होजायगा ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

तालीसगैरिकेपीतेविडालपदमात्रकैः ।

शीतांबुनाचतुर्थेह्लिवंध्यांस्त्रींकुरुतेभृशम् ॥ ७४ ॥

अर्थ-तालीसके पत्ते गेरू यह दोनों दो तोले शीतल
जलके साथ चार दिन पीनेसे स्त्री बाझ होतीहै ॥ ७४ ॥

पालाशबीजमध्वाज्यलेपात्सामर्थ्ययोगतः ।

योनिमध्येऋतौगर्भधत्तेस्त्रीनकदाचन ॥ ७५ ॥

अर्थ-ढाकके बीज शहद घृत यह तीनों वस्तु ऋतुके
समय स्त्री योनिमें रक्खे तो फिर कभी गर्भ न रहै ॥ ७५ ॥

धतूरमूलिकापुण्येगृहीताकटिसंस्थिता ।

गर्भनिवारयत्येवरंडावेश्यादियोपिताम् ॥ ७६ ॥

अर्थ-धतूरेकी मूली पुण्यनक्षत्रपर लेकर कमरमें बांध-
नेसे रंडावेश्यादि स्त्रियोंका गर्भ निवारण होताहै ॥ ७६ ॥

गृज्जनस्यचबीजानितिलकारविके अपि ।

गुडेनभुक्तमेतच्चगर्भपातयतिध्रुवम् ॥ ७७ ॥

अर्थ-गाजरके बीज तिल चिरोंजी यह गुडके साथ
खानेसे अवश्य गर्भका पात करताहै ॥ ७७ ॥

अथ स्तनदृढीकरणम् ।

श्रीपर्णीरसकल्काभ्यांतैलंसिद्धंतिलोद्भवम् ।

तत्तैलंतूलकेनैवस्तनस्योपरिदापयेत् ।

पतिताबुत्थितौस्यातामंगनायाःपयोधरौ ॥ ७८ ॥

अर्थ—विजौरेके रस और कल्केके रसके संग उसमें तिलोंका तेल सिद्ध कर रूई उस तेलमें भिजोकर स्तनोंके ऊपर लगावे तो गिरेहुए स्तन उठिआतेहैं ॥ ७८ ॥

अथ योनिसंकोचीकरणम् ।

भंगापोटलिकांदत्त्वाप्रहरंकाममंदिरे ।

शतवारंप्रसूतापिपुनर्भवतिकन्यका ॥ ७९ ॥

अर्थ—भंगकी पोटली बनाकर योनिमें एक प्रहरतक धरे सौवारकी प्रसूता स्त्रीकी योनि कन्याकी समान हो जाय ॥ ७९ ॥

मोचरससूक्ष्मचूर्णक्षिप्तंयोनीस्थितंप्रहरम् ।

शतवारंप्रसूतायाअपियोनिःसूक्ष्मरंध्रास्यात् ॥ ८० ॥

अर्थ—मोचरसका चूर्ण कर योनिमें प्रहरतक लगा रखनेसे सौवार प्रसूता हुई स्त्रीकी योनिभी संकुचिन होजाती है ॥ ८० ॥

अथ योनिनिष्ठोमीकरणम् ।

कर्पूरभल्लातकशंखचूर्णक्षारोयवांनीमजमौदकंच ।

तलंविपक्रंहरितालमिश्रंलोमानिनिर्मूलप्रतिक्षणेन ८१ ॥

अर्थ—योनि निलोम करनेकी विधि कर्पूर भिलाचा शंखका चूर्ण सजीखार अजवायन अजमोद इनको तेलमें पकाकर हरिताल मिलाय सिद्ध कर तो क्षण मात्रमें लगा-नेसे लोम निर्मूल होजाते हैं ॥ ८१ ॥

अथ बालकरोगः ।

त्रिविधः कथितो बालः क्षीरान्नोभयवर्त्तकः ।

स्वास्थ्यंताभ्यामदुष्टाभ्यांदुष्टाभ्यांरोगसंभवः ॥ ८२ ॥

अर्थ-बालक तीन प्रकारके होतेहैं एक तो केवल दूध पीनेवाले दूसरे दूध और अन्न खानेवाले तीसरे केवल अन्न खानेवाले जो अन्न और दूध शुद्ध हुए तो स्वस्थता होतीहै बालक नीरोगी रहताहै और दूषित होनेसे रोगी होताहै ॥ ८२ ॥

भैषज्यपूर्वमुद्दिष्टमहतायज्ज्वरादिषु ।

देयंतदेवबालेपिमात्राकिंतुकनीयसा ॥ ८३ ॥

अर्थ-ज्वरादिकोंमें जो हमने पहले औषधी कही है वही देनी चाहिये परन्तु बालकोंको थोड़ी मात्राकी औषधी देनी ॥ ८३ ॥

विडंगफलमात्रंतुज्ञातमात्रस्यभेषजम् ।

मासेमासेप्रयोक्तव्यंविडंगानांविवर्द्धनम् ॥ ८४ ॥

अर्थ-तुरतके उत्पन्न हुए बालकको विडंगके फलकी बराबर औषधी देनी चाहिये और जितनी जितनी महीनेकी अवस्था उसकी बढ़ती जाय उतनीही मात्रा बढ़ानी चाहिये अर्थात् दूसरे महीनेमें दो बायविडङ्ग फलके बराबर दे ॥ ८४ ॥

अव्दादूर्ध्वकुमाराणांदद्यात्कोलास्थिमात्रकम् ।

क्षीरादस्यौषधंघात्र्यांक्षीरान्नादस्यचोभयोः ॥ ८५ ॥

सर्वनिवार्यतेबालेनस्तन्यंवार्यतेकचित् ।

नाभिपाकेनिशालोध्रप्रियंगुमधुकैःशृतम् ।

तेलमभ्यंजनेशस्तमेभिर्वाप्यवचूर्णनम् ॥ ८६ ॥

वालोयोचिरजातःस्तन्यंगृह्णातिनोतदातस्य ॥
 सैन्धवधात्रीमधुघृतपथ्याकल्केनघर्षयेज्जिह्वाम् ८७
 पीतंपीतंवमतियःस्तन्यंतन्मधुसर्पिषा ॥
 द्विवार्त्ताकीफलरसंपंचकोलंचलेहयेत् ॥ ८८ ॥
 सक्षौद्रशर्करातिक्तालीढाबालज्वरंजयेत् ॥ ८९ ॥

अर्थ—एक वर्षकी अवस्थासे जिसकी अधिक अवस्था
 हो उसे बेरकी मींगीके परिमाण औषधि देनी चाहिये-जो
 केवल दूध पीता हो तो इसकी धायकोभी औषधी देनी
 चाहिये बालकको दूधमें औषधी दे अन्न खाता हो तो अन्न
 हीके साथ औषधी दे पथ्यमें सर्ववस्तु वर्जित हैं परन्तु माता-
 का दूध वर्जित नहीं है नाभि पकी होय तो हलदी लोधप्रियंगु
 मुलैठा इनसे सिद्ध किया तेल उसपर लगाना अथवा इनका
 चूरन बुरकाना चाहिये जो अल्प कालका उत्पन्न हुआ बालक
 माताका दूध न पीता होय उसकी जीभपर सेंधा धवईके
 फूल शहद घी और हरद पीसकर शनैः उंगलीसे लगावे जो
 बालक माताका दूध पीकर बारंबार वमन करे उसको भटक-
 टेया और बनभाटेका रस पीपल पीपलामूल चव्य चित्रक
 और सोंठका चूरन शहद और घीके साथ चटावे शहद
 बुरा यह पाठ संग मिलाकर चाटनेसे वातज्वरको दूर कर-
 ताहै ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

शृंग्यन्दकृष्णातिविपांविचूर्ण्य
 लेहंविदध्यान्मधुनाशिशूनाम् ।
 कासज्वरच्छर्दिभिरर्दितानां
 समाक्षिकांवातिविषामथैकाम् ॥ ९० ॥

अर्थ-काकडासींगी नागरमोथा पीपल अतीस इनका चूर्ण कर शहदके साथ चोटे अथवा एक अतीसहीका चूरन शहदके साथ चटानेसे बालककी खांसी ज्वर और वांति दूर होती है ॥ ९० ॥

नागरातिविषामुस्तावालकेंद्रयवैःशृतम् ।

कुमारं पाययेत्प्रातःसर्वातीसारनाशनम् ॥ ९१ ॥

अर्थ-सोंठ अतीस नागरमोथा सुगंधवाला इन्द्रजौ इनका काढा कर प्रातःकाल बालकको पिलावे तो सम्पूर्ण अतिसाररोग दूर होते हैं ॥ ९१ ॥

घनकृष्णारुणाशृंगीचूर्णक्षौद्रेणयोजितम् ।

शिशोर्ज्वरातिसारघ्नकासश्वासवमीहरम् ॥ ९२ ॥

अर्थ-नागरमोथा पीपल अतीस और काकडासींगी इनका चूरन शहदके साथ बालकको चटावे तो बालकका ज्वर अतिसार कास श्वास और वमन दूर होती है ॥ ९२ ॥

पुष्करातिविषायासकणाशृंगीरजोलिहेत् ।

मधुनामुच्यतेवालः कासैःपंचभिरुच्छ्रितैः ॥ ९३ ॥

तुगाचक्षौद्रसंलीढाकासश्वासौशिशोर्जयेत् ।

चूर्णकटुकरोहिण्यामधुनासहयोजितम् ॥ ९४ ॥

हिकांप्रशमयेत्क्षिप्रंशिशोश्छर्दिचदुस्तराम् ।

कणोपणसिताक्षौद्रसूक्ष्मैलासेववैःकृतः ॥ ९५ ॥

मूत्रग्रहेप्रदातव्योवालांनालेहउत्तमः ।

मुखपाकस्यतुश्रेष्ठोलेपस्त्वश्वत्थकल्कजः ॥ ९६ ॥

अर्थ-पुष्करमूल अतीस काकडासींगी पीपल और धमासेका चूरन शहदसे चोटे तो बालककी पांच प्रकारकी

खांसी दूर हो कुटकी वंशलोचन शहदके साथ चाटनेसे
 बालककी खांसी और श्वासरोग दूर होता है अथवा कुटकी;
 का चूर्ण कर शहदके साथ चाटनेसे बालककी हिचकी और
 कठिन छर्दि दूर होती है पीपल भिरच मिश्री शहद छोटी
 इलायची और सेंधा इनका भवलेह करके देनेसे बालकका
 मूत्रावरोध दूर होता है बालकके मुखपाकपर पीपलकी छाल
 पीसकर लेप करें ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

मुखपाकेतुवालानामाग्रसारमयोरजः ।

छुच्छुन्दरीमलोमापोहरिद्राविल्वपत्रकम् ॥ ९७ ॥

सगुग्गुलुंयवंचैवधूपनंयःप्रयोजयेत् ।

निहन्तिरोदनंरात्रौबालकसंघनसंशयः ॥ ९८ ॥

अर्थ-अथवा आमका रस वा गोंद उत्तम है छच्छुन्दरकी
 बीट उरद हलदी बेलपत्र गुग्गुल इनकी देनेसे जो
 बालक रातमें रोवे उसका रोना बंद हो ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

अथ ग्रहग्रस्तबालकोपचारः ।

क्षणादुद्विजतेबालःक्षणाद्वमतिरोदिति ।

नखैर्दन्तैर्दारयतिधात्रीमात्मानमेवच ॥ ९९ ॥

ऊर्ध्वनिरीक्षतेदन्तान्वादेत्कूजतिजृम्भते ।

क्षामांगोनिशिजागर्त्तिशून्यांगोभिन्नविड्ज्वरः १००

अर्थ-जो बालक क्षणमें डरनेलगे क्षणमें रोनेलगे नाखून
 और दातोंसे कभी माताको और कभी अपनेको बिदीर्ण
 करनेलगे ऊपरको देखे दातोंको बजावे रोवे बारंबार
 जंभाई ले डुबला होजाय रातको जागे शून्य शरीर भिन्न
 विट ज्वरसे व्याकुल हो ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

सामान्यग्रहजुष्टानांलक्षणंसमुदाहृतम् ।

सभेदकूलद्वयमृत्तिकायामूर्तिविधायैककरप्रमाणाम् ॥

त्रिलोचनांशूलकपालपाणिजटाधरांरुद्रतनुंदधानाम् ।

भुजंगभूषांभसितोज्ज्वलांगीमंगीकृताशेषललामलीलां

अर्थ-यह सामान्य ग्रहग्रस्त बालकोंके लक्षण हैं (उपचार) नदीके दोनों किनारेकी मृत्तिका लावे उसकी एकहाथ प्रमाण मूर्ति बनावे । तीन नेत्र शूल आर कपाल हाथमें लिये जटाजूटयुक्त रुद्र शरीर धारण किये भुजंगसे भूषित भस्म लगाये सम्पूर्ण मनोहर लीलाको अंगीकार किये ॥ १ ॥

अत्रमूर्त्तौसमावाह्यरुद्रंसर्वग्रहाधिपम् ।

नंदादिपूतनायुक्तंपूजयेच्चंदनादिभिः ॥ २ ॥

विरच्यतण्डुलैश्चूर्णैश्चतुरसंकरोन्मितम् ।

तत्रसंस्थाप्यपूर्वस्यांतांतदर्चाविधिंचरेत् ॥

तत्तन्मंत्रैर्विचित्रैश्चनानोपकरणादिभिः ॥ ३ ॥

अर्थ-इसमूर्तिमें ग्रहपति रुद्रका आवाहन करे नंद आदि पूतनासे युक्त चंदनादिसे पूजन करे चावलोंका चूर्ण करे चौकोन मंडल एक हाथके प्रमाणमें बनावे वहां पूर्वकी और मूर्तिको स्थापित कर उसकी पूजा करे वह वह विधानके मंत्र पढ़कर अनेक सामग्रीसे पूजन करे उसका क्रम कहते हैं ॥ १०२ ॥ १०३ ॥

अथ क्रमः ।

गोमयोपलिप्तायांभूर्मातण्डुलचूर्णेनयथोक्तं चतु-
रसंकृत्वातन्मध्येयथोक्तांमूर्तिसंस्थाप्यओमद्या-

मुकनामोवालस्यसर्वग्रहशान्त्यर्थं सर्वग्रहवलिं
 करिष्ये ॥ तस्यांसर्वग्रहानावाह्यसर्वग्रहाधिपतये
 हुँफट्स्वाहेति मंत्रेणगंधादिकोपचारैःसम्पूज्यनै-
 वेद्यसप्तपताकासप्तदीपान्गुडोदकमत्स्यमांस-
 सुरास्त्रिन्नगोधूमवटकादिकं बृहद्वंशपात्रेसंस्था-
 प्य ततस्तस्यामग्रेपरिवेप्य ओंनमोभगवते
 रुद्रायत्र्यंबकायसत्यसुवसत्यसुबहुंफट्स्वाहेति
 मंत्रमुक्त्वावालकमुष्टिमात्रमन्नंग्राह्यपूर्वपरिवेपि-
 तेन्नेत्याजयेत् ॥ ततोन्वमुष्टिमात्रमन्नंगृहीत्वाओं
 फट्स्वेनतेयायनमः ॥ ततोन्वदपिह्नींहीक्षः इति
 वारद्वयंबलिंदत्त्वावालप्रमाणांगुष्पमालां गृही-
 त्वावालोपरित्रिःपरिभ्राम्य ओंकारिणिसुस्थाप-
 यइतिपूर्वस्यांदिशि तांस्थापयित्वाऽपश्यन्नेवगृ-
 हमागच्छेत् । ततोधूपेनवालंबूपयेत् ॥ १०४ ॥

अर्थ—चार हाथ भूमिको मोपरमे लीप पावलके चूर्णकी
 वेदी बनाय वसपर यथोक्तमूर्तिको स्थापन कर नामगे प्रका
 वच्चारण कर कहे में अमुरु चालप्रदक्षान्तिके अर्थ प्रदयलि
 करता हूं टनमें सम्पूर्ण ग्रहोंका आरादन कर सम्पूर्ण प्रदाक
 अधिपतिको हुँफट्स्वाहा पदकर गंधादि उपचारन पूजन
 कर नैवेद्य सान पनाका सान दीप गुड उदक मत्स्यमांस
 सुरास्त्रिन्नगेहं वटकादि यह चडे चांसके पात्रकी टोफकी
 वसके आगे रखकर ओंनमोभगवत गरुदाय त्र्यम्बकाय

सत्यसुव सत्यसुव हुंफट्स्वाहा यह मंत्र पढ़कर बालकके मुष्टिमात्र अन्नको ग्रहण कर ओंफट् वैनतेयायनमः तथा ह्रीं ह्रीं क्षः यह दोवार पढ़ बालि दे बालककी बराबर लम्बी मूला-मालाको ग्रहण कर बालकके ऊपर तीनवार घुमाकर ओं कारिणी सुस्थापय इसप्रकार पूर्वकी ओर बाहर स्थापन कर फिर उसे न देखताहुआ घरमें आवे फिर धूपसे बाल-कको धूपित करे ॥ १०४ ॥

धूपविधिः ।

कार्पासास्थिमयूरपिच्छवृहतीनिर्माल्यपिंडीतक-
त्वङ्मांसीवृषदंशविड्बुसकणाकेशादिनिर्मोककैः ।
गोशृंगद्विपदंतर्दिगुमरिचैस्तुल्यैः कृतं धूपनं
कृत्योन्मादपिशाचराक्षससुरावेशग्रहघ्नमतम् १०५ ॥
एवंदिनत्रयंकृत्वा चतुर्थदिने चतुरो ब्राह्मणान्
भोजयेदेवं शुभं भवति ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानंदभट्टविंशति

वैद्यरत्ने चतुर्थः प्रकाशः ॥ ४ ॥

अर्थ—कपासके बीज मोरका पंख भट्कटैया शिवनिर्माल्य
मैनफल दालचीनी वंशलोचन बिलारकी बिष्टा धानकी
भूसी वच मनुष्यके बाल साँपकी केंचली गायकी सींग
हाथीदांत हींग और मिरच इनको बराबर भाग लेकर
धूप देनेसे उन्माद पिशाच राक्षस देवताओंका आवेश
और ग्रह दूर होते हैं इस प्रकार तीनदिन करके चौथेदिन
चारब्राह्मणोंको भोजन करानेसे मंगल होता है ॥ १०५ ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानंदभट्टविंशति वैद्यरत्ने पण्डितज्वालाप्रसाद-

मिश्रकृतभाषाटीकाया चतुर्थः प्रकाशः ॥ ४ ॥

अथ वाजीवरणम् ।

गोक्षुरकःक्षुरकःशतमूलीवानरिनागबलातिवलाश्च ॥
चूर्णमिदंपयसानिशिपेयंस्यगृहेप्रमदाशतमस्ति ॥ १ ॥

अर्थ-गोखरू तालमखाने शतावर (कोंचके बीज)
गगेरनकी छाल सहदेईकी जड इनका चूर्ण कर रात्रिको
दूधके साथ पिये तो सौ स्त्रियोंके साथ भोग करनेकी
सामर्थ्य हो ॥ १ ॥

पलंगोक्षुरबीजस्यद्विपलंकपिकच्छुरम् ।

पलंगागबलाबीजंपलमेकंशतावरी ॥ २ ॥

विदारीकन्दचूर्णस्यपलद्वयमथापरम् ।

द्विपलंत्रपुसीबीजंवाजिगंधापलत्रयम् ॥ ३ ॥

वासाचतालमूलीचगुडूचीरक्तचंदनम् ।

त्रिसुगंधिकणाधात्रीलवंगनागकेशरम् ॥ ४ ॥

एतानिकर्पमात्राणिमूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ।

बालशाल्मलिमूलंचभावयेदेकविंशतिः ॥ ५ ॥

कुशकाशीशफासतशर्करासमयोजितम् ।

दुष्टशुक्रवीर्यहानिंमूत्रकृच्छ्राणियानिच ॥ ६ ॥

मूत्रावातंमूत्रदोषंजयेच्छुक्रविवर्द्धनम् ।

शतंगच्छतिचस्त्रीणांहयतुल्यपराक्रमः ॥ ७ ॥

बंध्यापुत्रमवाप्नोतिभुक्त्वाचूर्णमिदंकमात् ।

कामदेवाभिधंचूर्णैधन्वन्तर्गिनिहपितम् ॥ ८ ॥

अर्थ-गोखरूके बीज एकपल कोंचके बीज दो पल गगेर-
नके बीज एकपल शतावरी १ पल विदारीकंदका चूर्ण २

पल ककडीके बीज २ पल इन्द्रवारुणीके बीज २ पल अश्व-
गंधा ३ पल अडूसा तालमूली गुडूची लालचन्दन इलाय-
ची दालचीनी, तेजपात पीपल आमला लोंग नागकेशर
यह सब एक २ कर्ष ले फिर इनका चूर्ण करे इसमें कोमल
सेमलके पत्तोंके रसकी इक्कीस भावना दे कुश और कास-
के रसकी सात भावना दे फिर बराबर बूरा मिला ले सेवन
करनेसे यह दुष्टशुक्र वीर्यक्षय मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात मूत्रदोष
रोगोंको दूर करता है यह शुक्रका बढ़ानेहारा है इसके सेव-
नसे सौ स्त्रियोंके भोगनेकी सामर्थ्य होती है घोड़ेकी तुल्य
पराक्रम होता है इसके सेवन करनेसे बंध्याके भी पुत्र हो-
ता है यह धन्वन्तरिका कहा कामदेवचूर्ण है ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥
॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

चूर्णविदार्याःसुकृतंस्वरसेनैवभावितम् ।

सर्पिःक्षौद्रयुतंलीङ्गादशगच्छेत्ररंगनाः ॥ ९ ॥

अर्थ-विदारीकंदका चूर्ण कर उसीके रसकी उसमें
भावना दे घृत और शहदके साथ उसे चाटे तो
दश स्त्रियोंके संग गमन कर सकता है परन्तु घृत शहद
बराबर न हो ॥ ९ ॥

एवमामलकंचूर्णस्वरसेनैवभावितम् ।

शर्करामधुसर्पिभ्यांयुक्तंलीङ्गापयःपिवेत् ॥ १० ॥

एतेनाशीतिवर्षांपियुवेवपरिहृष्यति ।

कर्पमधूकचूर्णस्यघृतक्षौद्रसमन्वितम् ॥ ११ ॥

पयोनुपानंयोलिङ्गात्सगच्छेद्दशचांगनाः ॥ १२ ॥

अर्थ-अथवा एक आमलेहीका चूर्ण लेकर उसमें आमलेके
स्वरसकी भावना दे फिर उसे कन्द मधु घृतके साथ मिला-

कर चाटै पीछे दूध पिये ॥ १० ॥ इस प्रयोगसे अस्सी वर्षका पुरुषभी युवाके समान प्रसन्न होता है । मुलेठीका चूर्ण एक तोला, घी एक तोला, शहद एक तोलासे कुछ कमती ॥ ११ ॥ इन सबको मिलाकर चाटै ऊपरसे दूध पिये तो दश स्त्रियोंके पास जानेकी शक्ति हो ॥ १२ ॥

प्रस्थंगोक्षुरसूक्ष्मचूर्णमुदितंदुग्धाढकेपाचितं
जायत्रीसलवंगलोहमारिचंकपूरमामल्लकम् ।
अब्दंशोषमजाजियुग्मरजनीधात्रीकणाकेशरं
जातीकोशफलेसदीप्यनलदंशुंठीकुवेराक्षजम् ॥ १३ ॥
तुल्यंशर्करयातदर्द्धविजयंप्रस्थार्द्धकंगोघृतं
युक्त्यावैद्यवरेणनिर्मितमिदं प्रौढांगनादर्पनुत् ॥
वीर्यस्तंभनतुष्टिपुष्टिजननं वार्जीकरं कामिना-
मुक्तोगोक्षुरपाकएपहरिणीनेत्राविलासास्पदम् १४ ॥

अर्थ—छोटे गोखरुका चूर्ण १ सेर एक आठक १०२४ टंक दूधमें पकाये खैरसार लवंग लोहसार काली भिर्च कपर मीमसेनी अहूसा समुद्रशोष कालाजीरा श्वेतजीरा दारु-हलदी आमला पीपल नागकेशर जायफल अजवायन खस सोंठ करंजुआ यह सब बराबर ले इन सबकी बरा-बर दूरा और उरसे आधी भाग ले और आधे सेर गोका घृत ले उसको वैद्य युक्तिसे निर्माण करे यह सेवन करनेसे प्रौढ स्त्रीका दर्प चूर्ण करनेवाला तुष्टिपुष्टिका करनेवाला कामीजनोंको रतिमें प्रवृत्त करनेवाला यह गोखरुपाक आनंद देनेवाला है ॥ १३ ॥ १४ ॥

कूष्माण्डस्यतुलांविधायविधिवत्स्विन्नांप्रविष्टांपुन-
 र्युक्तांकर्पमितःसुचर्णिततमैव्योपालजीराजिभिः ॥
 चातुर्जातवराबलात्रयवलीकर्पूरमेथीत्रिवृ-
 दन्तीवारणपिप्पलीक्षुरतिलद्राक्षात्रिकंटाम्बुदेः १५॥
 चव्याश्वामयचारवानरिसटीयष्टीतुगापिप्पली-
 मूलाज्यैःसलवंगशाल्मलिजयाकंकोलजातीफलैः ।
 जातीकोशविदारिसिंधुमुशलीशृंगाटकैःसर्पिपः
 प्रस्थेनाम्रपलेनचापिसितयासार्द्धतुलामानया १६॥
 युक्तयासाधुविपाच्यभाजनगतंकृत्वायथाग्निप्रगे
 कूष्माण्डस्थरसांजनंसुललितंशुद्धोत्तरःशीलयत् ।
 वृष्यंवर्यमथाग्निदीपनकरंयक्ष्माम्लपित्तापहं
 पांडुश्वासजिदस्रपित्तशमनंमोहादिरोगप्रणुत् १७ ॥

अर्थ-पेठा आठसौ तोले ले अर्थात् उसको छीलकर
 उसके बीज निकाल उसे जोश दे उसमें एकएक कर्ष
 सोंठ, मिरच, पीपल, लज्जावन्ती, राई, दालचीनी, इला-
 यची, तेजपात, नागकेशर, पाठा खरेटी सोमराजी कपूर
 मेथी निसोथ गजपीपल तालमखाना तिल दाख गोखरू
 नागरमोथा चव्य असगंध कूठ चिरींजी कोंचके बीज
 कचूर मुलहठी तज पीपल शतावर भेड़ासिंगी लवंग
 सेमल, शीतलचीनी, जायफल, जायफलकी छाल
 विदारीकंद, समुद्रशोष, मुशली, सिंघाड़े यह सब बरा-
 बर ले अथवा एक पल ले, और घृत एक सेर आधी
 तुला श्वेत वृषा ले इसकी चासनी कर युक्तिसे अग्निपर

यह सब वस्तु ढालकर पकावै और पेठका शुद्ध रस रसोत भी उसमें ढालदे इसे पाककी समान करले यह बलकारक व्रणशोधक अत्रिका प्रदीति करनेवाला यक्ष्मा अम्लपित्तको दूर करनेवाला पाण्डु श्वासनाशक रक्तपित्त और प्रमेहको दूर करता है ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

एतेनातिवलीवलीविरहितःसीणांयुवेवव्रजे-

द्वंद्ववृद्धतरोनरोतिललितःप्रज्ञाप्रभापूजितः ॥ १८ ॥

अर्थ-इससे बली दूर होतीहैं बल बढ़ताहै स्त्रियोंमें युवाकी समान इसको खानेवाला प्रवृत्त होताहै वृद्ध मनुष्य भी बली होकर कान्ति बुद्धिसे पूजित होता है ॥ १८ ॥

प्रस्थंस्वगुप्तबीजानांमूक्ष्मंचूर्णीकृताभिपक्व ।

पचेत्पंचाढकेदुग्धेमृत्पात्रेमृदुवह्निना ॥ १९ ॥

प्रस्थाद्धगोघृतंदत्त्वाद्विप्रस्थांशर्करामपि ।

जातीफलंजातिपत्रंकंकोलंनागकेशरम् ॥ २० ॥

लवंगंदीप्यमाकलमन्विधशोपत्रिकद्वयः ।

त्रिजातंहेमजीरंचप्रियंगुंगजपिप्पलीम् ॥ २१ ॥

प्रत्येकंकर्पमादायभक्षयेत्पलमात्रया ।

प्रमेहक्षण्यकृच्छ्राश्मगुल्मशूलानिलामये ॥ २२ ॥

शस्तोयंस्त्रीपुगभार्थिपंडानांशुक्रवृद्धये ।

प्रसूतानांहितोरक्तविकारविनिवारकः ॥ २३ ॥

पुंसांवाजीकरोवल्यश्चक्षुष्यःकामवर्द्धनः ।

कामिनीदर्पविध्वंसकर्त्तानिधुवनेनृणाम् ॥ २४ ॥

अर्थ-कौंचके बीज एक आठक लेकर उन्हें अच्छी प्रकार चूर्ण कर पांच आठक गाँके दूधमें मिट्टीके पात्रमें

रखकर पकावें उसमें आधे प्रस्थ गौका घी और दो प्रस्थ शर्करा डालें इसकी चासनी कर पीछे इसमें जाय-फल, जातीपत्र कंकोल, नागकेशर, लवंग, अजवायन अकरकरा, समुद्रशोष, सोंठ, मिरच, पीपल, दालचीनी, इलायची, तेजपात, श्वेतजीरा, प्रियंगु, गजपीपल, यह प्रत्येक वस्तु एक एक कर्ष लेकर इसमें डालदे सिद्ध होने पर उतारले एक पलकी मात्रासे इसको भक्षण करे तो प्रमेह क्षीणता कृच्छ्र, अश्म, गुल्म, शूल, वातरोग दूर हों इसके सेवनसे स्त्रीको गर्भ रहता है नपुंसकोंका वीर्य बढ़ता है प्रसूतियोंको हितकारक रक्तविकारका निवारण करनेवाला पुरुषोंको वाजीकर बलदाता चक्षुओंको हितकारक कामवर्द्धक रतिमें स्त्रियोंका दर्प नाश करनेवाला है ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

नास्त्यनेनसमोयोगोदसाभ्यानिर्मितःशुभः ।

कपिकच्छूबीजपाकोदीपनःपाचनःपरः ॥ २५ ॥

अर्थ-इसकी समान और योग नहीं है यह अश्विनीकुमारनिर्मित है यह कौंचबीजपाक परमदीपन और पाचन है २५॥

प्रस्थंपिप्पलिमादायपचेत्क्षीरेचतुर्गुणे ।

अर्द्धाढकंघृतंगव्यंशुद्धखंडाढकंतथा ॥ २६ ॥

लोहेपचेद्घृतेतावद्यावत्पाकंसुपाचितम् ।

ततोद्रव्याणिचैतानिश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् ॥ २७ ॥

एलात्वक्पत्रकंचैवलवंगंनलदंतथा ।

नागरंपिप्पलीमुस्ताश्रीखंडमारिचंनतम् ॥ २८ ॥

कर्पूरंजातिपत्रंचकुंकुमंमधुकंतिलम् ।

वंगलोहरजश्चाथपलमानंसमांशकम् ॥ २९ ॥

मधुनाकुडवंदस्वाखादेदग्निबलंयथ ।

वृष्यपुष्टिकरंरुच्यंचक्षुष्यंवयवर्द्धनम् ॥ ३० ॥

बलवीर्यकरंचैवच्छर्दिमूर्च्छाभ्रमापहम् ।

दाहवृण्णाप्रशमनमोजःश्लकविवर्द्धनम् ॥ ३१ ॥

अर्थ—एक प्रस्थ छोटी पीपल लेकर ४ चार प्रस्थ गौके दूधमें पकावे इसमें आधे आठक गौका घी और एक आठक शुद्ध घूरा डाले यह सब लोहपात्रमें डालकर पकावे जब पाक होजाय तब नीचे लिखे द्रव्य चूर्ण कर उसमें डाले इलायची, तज, पत्रज, लोंग, खस, सोंठ, पीपल, नागरमोथा, लालचन्द, कालीमिरच, तगर, भीमसेनी कपूर, जायफल, केशर, सुलहटी, तिल, बंग, लोहसार यह सब बराबर एक एक पल ले एक कुडव (१६ तोले) मधु डालकर इनको सिद्ध करे अग्निके बलके अनुसार इसको खाय यह बल पुष्टि करनेवाला रुचिकारक चक्षुओंको हितकारी वयका बढ़ानेवाला है, बलवीर्य करता, छर्दि, मूर्च्छा, भ्रम हरनेवाला, बल और वीर्यका बढ़ानेवाला है ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

बोधनंचेंद्रियाणांचप्रमेहान्हन्तिविंशतिम् ।

वातान्तककरंहृद्यमपृज्वरविनाशनम् ॥ ३२ ॥

अर्थ—इंद्रियोंका बोधक और बीस प्रमेहोंका दूर करनेवाला है वातका अन्त करनेवाला हृदयको हितकारक आठ प्रकारका ज्वरनाशक है ॥ ३२ ॥

अष्टादशचकुष्ठानांविध्यानांपुत्रदंपरम् ।

पिप्पलीखंडमेतद्विवालयानांमुहृतिंपरम् ॥ ३३ ॥

धात्रीफलानिशुष्काणिप्रस्थमात्राणिनिक्षिपेत् ।

चतुःप्रस्थेगवांदुग्धेस्निग्धभांडेततःपरम् ॥ ३४ ॥
 त्रिवारंदापयेद्दुग्धंक्षीरंपर्युपितंत्यजेत् ।
 तानिसर्वाणिसंपेप्यशिलायांतुभिषग्वरः ॥ ३५ ॥
 तन्मध्येतुचतुःप्रस्थंगोक्षुरंचविनिःक्षिपेत् ।
 दृढहस्तेनतत्सर्ववस्त्रपूतंसमाचरेत् ॥ ३६ ॥
 मृद्राण्डेपाचयेद्ब्रह्मौयावद्दाढत्वमाप्नुयात् ।
 सिताचतुर्गुणंयोज्याऔषधानिततःक्षिपेत् ॥ ३७ ॥
 चातुर्जातिलवंगंचजातीपत्रफलेतथा ।
 मांसीधान्यंतुगाशीतंतगरंजीरकद्वयम् ॥ ३८ ॥

अर्थ—अठारह प्रकारके कोठदूर करनेवाला और बंध्याको पुत्र देनेवाला है यह पिप्पलीखण्ड बालकोंको हित करने-वाला है एक प्रस्थ सूखे हुए आमले लेकर चार प्रस्थ गौके दूधमें डाले यह चिकने बरतनमें धरदे और एक दिनके उपरान्त निकालकर वह दूध अलग कर उनमें उतनाही दूध और डालदे ऐसा तीनवार करे फिर उन आमलोंको पथरपर पीसकर उसमें चार प्रस्थ गौका दूध मिलावै, फिर यह सब दृढवस्त्रसे छानेले और अग्निपर मिट्टीके बरतनमें रखकर पकावै, जबतक गाढा होजाय इससे चौगुनी मिश्री डाले और नीचे लिखी औषधी डाले दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागदोशर, लोंग, जातीपत्र, जायफल, जटामांसी, धनियाँ, तज, तगर, दौनों जीरे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

वीजंपुष्करजंयष्टिकवावंकुकुमंधनम् ।
 प्रत्येकंकर्पयुग्मञ्चतूर्णीकृत्वाथमेलयेत् ॥ ३९ ॥

अभ्रकंवंगसंज्ञंचकर्पमात्रं पुनः क्षिपेत् ।

सुगंधार्थंचकर्पूरंकस्तूरींचावरंक्षिपेत् ॥ ४० ॥

पलमात्रांमुटींकृत्वास्थापयेद्भ्राजनेशुभे ।

नोशदारुइतिख्यातांभिपजानांतुसंमताम् ॥ ४१ ॥

गुणान्वच्चिमयथादृष्टान्वलकृद्दीर्यवर्द्धनी ।

चत्वारिंशत्पित्तरोगाअष्टाबुदरजास्तथा ॥ ४२ ॥

नश्यंत्यनेनसर्वेदिकामवीर्यविवाद्धनी ॥ ४३ ॥

अर्थ—कमलगट्टे, मुलहटी, कवावचीनी, केशर, नागर-
मोथा यह प्रत्येक दोदो कर्प ले इनका चूर्ण कर इसमें
मिलावे अभ्रक और वंग यह एक एक कर्प डाले सुगंधिके
निमित्त कपूर कस्तूरी और अम्बर डाले एक पलमात्रकी
गुटिका करके अच्छे बरतनमें रखछोड़े यह नोशदारु
वैद्यलोगोंको सम्मत है यह सब गुणवाली बल और वीर्य
बढानेवाली है चालीस पित्तरोग आठ उदरके रोग इससे
दूरहोतेहैं काम और वीर्य बढताहै यह गुण देखे हुए हैं
॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

अथ लक्ष्मीविलासरसः ।

पलंकृष्णाचचूर्णस्यतदद्धैरसगंधके ।

कर्पूरस्यतदद्धैतुजातीकोशफलेतथा ॥ ४४ ॥

बृद्धदारुकबीजंचबीजमुन्मत्तकस्यच ।

त्रैलोक्यविजयाबीजंविदारीकंदमेवच ॥ ४५ ॥

नारायणीतथावागवलाचातिबलातथा ।

बीजंगोक्षुरकस्यापिजलधेर्बीजमेवच ॥ ४६ ॥

एतेपांकार्पिकंचूर्णगृहीत्वावारिणापुनः ।

निष्पिप्यवटिकाःकार्यास्त्रिगुंजाफलमानतः ॥ ४७ ॥

निहन्ति सन्निपातोत्थान्गदान्धोरान्सुदारुणान् ।

वातोत्थान्पैत्तिकांश्चातिनास्त्यत्रनियमः क्वचित् ४८

कुष्ठमष्टादशाख्यंच प्रमेहान्विशतितथा ।

नाडीव्रणंव्रणंधोरंगुदामयभगन्दरम् ॥ ४९ ॥

श्लीपदंकफवातोत्थंचिरजंकुलसम्भवम् ।

गलशोपंचात्रवृद्धिमतिसारंसुदारुणम् ॥ ५० ॥

कासपीनसयक्ष्मार्शःस्थूल्यदौर्बल्यमेवच ।

आमवातंसर्वरूपंजिह्वास्तंभगलग्रहम् ॥ ५१ ॥

उदरंकर्णनासाक्षिमुखवैजात्यमेवच ।

सर्वशूलंशिरःशूलंस्त्रीणांगदनिपूदनम् ॥ ५२ ॥

अर्थ—काले अभ्रककी भस्म ४ तोले पारा गन्धक दोनों २ तोल भीमसेनी कपूर १ तोले जायफल, जावित्री, विधायरेके बीज, धतूरेके बीज, भांगके बीज, विदारीकंद शतावर गुलसकरी गंगेरन गोखरू समुद्रफल इन औषधियोंको समानभाग ले सबको पानके रसमें खरल करे वा जलसे पीसकर तीनतीन रत्तीकी गोलियां बनावे यह गोली सन्निपातके घोर रोग वातके रोग पित्तके रोगोंको दूर करेहै इस रसपर किसी आहार विहारका नियम नहीं है अठारह प्रकारके कुष्ठ बीस प्रकारके प्रमेह नाडीव्रण घोर गुदाके रोग भगन्दर कफ वातके रोग श्लीपदके रोग गलेकी सूजन आंतोंकी वृद्धि अतिसार खांसी पीनस क्षयी बवासीर स्थूलता देहमें दुर्गन्धिका आना आमवातके रोग जिह्वा-

स्तंभ गलग्रह अर्दितरोग गलगंड वातरक्त उदररोग कान
नाक नेत्र मुखकी प्रिसता सब देहके शूल मस्तकशूल
स्त्रियोंके रोग यह सब दूर करताहै ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥
॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

वटिकांप्रातरैकैकांखादेन्नित्यंयथाबलम् ।

अनुपानमिदंप्रोक्तमांसमिष्टंपयोदधि ॥ ५३ ॥

वारितक्रंसुधासीधुसेवनात्कामरूपधृक् ।

वृद्धोऽपितरुणस्पर्धीनचशुक्रस्यसंक्षयः ॥ ५४ ॥

नचलिंगस्यशैथिल्यंनकेशायांतिपक्वताम् ।

नित्यंशतंस्त्रियोगच्छेन्मत्तवारणविक्रमः ॥ ५५ ॥

द्विलक्षयोजनीदृष्टिर्जायतेपौष्टिकःपरः ।

प्रोक्तःप्रयोगराजोयंनारदेनमहात्मना ॥ ५६ ॥

नामालक्ष्मीविलासस्तुजगन्नाथेजगद्गुरौ ।

अस्यसंसेवनात्कृष्णोलक्षनारीपुवल्लभः ॥ ५७ ॥

अर्थ-इसरसकी गोली नियमानुसार भक्षण करें इसपर
मांस मिष्टान्न दूध दही जलमूत्रसे बने पदार्थ मद्य सीधुमद्य
यह सेवन करना पथ्य है. उसके खानेसे कामदेवके सह-
श हो वृद्धभी तरुण होजाता है वीर्यका क्षय नहीं होता
न लिंग शिथिल होनाहै न बाल श्वेत होतेंहैं मत्तहाथीकी
समान पुरुषको सौ स्त्रियोंसे रमणकी शक्ति होजातीहै,
दो लाख योजनकी दृष्टि हो, पुष्ट हो यह प्रयोग महात्मा
नारदजीने श्रीकृष्णसे कहाया जिसके अभ्याससे श्रीकृष्ण
लाख गोपियोंके प्रियहुए यह लक्ष्मीविलास रस है ॥ ५३ ॥
॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

अथ चन्द्रोदयरसक्रिया ।

पलमृदुस्वर्णदलंरसेन्द्रात्पलाष्टकंपोडशगंधकस्य ॥
 शोणैस्तुकार्पासभवैःप्रसूनैःसर्वविमर्द्याथकुमारिकाद्भिः
 तत्काचकूपेनिहितंयथावद्वृद्धेसुमृत्कर्पटवीतगात्रे ।
 पचेत्क्रमान्नौसिकृताख्ययंत्रेदिनत्रयंतत्तुसुधीःसुगुप्तम् ॥
 तत्स्वांगशीतंचसमुद्धरेतततोरसःपल्लवरागरागः ।
 निगृह्यचैतंस्यपलंपलानिचत्वारिकर्पूररजस्तथैव ॥६०॥
 जातीफलंसोपणमिंद्रपुष्पंकस्तूरिकायाइहशाणएकः ।
 चंद्रोदयोऽयंकथितोस्यमापोभुक्तोहिवल्लीदलमध्यवर्ती ।
 मदनोन्मदानांप्रमदाशतानांगर्वाधिकत्वंश्लथयत्यकांडे ॥

अर्थ-सोनेके बर्क ४ तोले शुद्धपारा ३२ तोले शुद्धगंधक ६४ तोले तीनोंको खरलमें डालकर कजली करे फिर नरम कपासके फूलोंके रसमें सबको खरल करे फिर घीकुबोरके रसमें खरल करके फिर सुखाके एक बड़ी आतशी शीशीमें भरकर ऊपर उसके सात कपडमिट्टी करवालुकायंत्रमें रखकर नीचे अग्नि जलावै जब शीशीमेंसे धुआं निकलजाय तब ईंटके टुकड़ेसे शीशीक मुखको बंद करदे और क्रमसे मंद मध्यमे तीन दिनरात्रिकी अग्नि देवे अर्थात् २४ पहरकी अग्नि देवे जब चन्द्रोदय सिद्ध होजाता है तब शीशीकी नाली काले स्याह रंगकी होजातीहै यह सिद्ध असिद्ध होनेकी परीक्षा है सिद्धचन्द्रोदयका रंग नवीन पत्तेकी ललाईके समान लाल रंग होता है यह सिद्ध रंगका चन्द्रोदय सकलरोगनाशक है इसे सब रोगोंपर देना चन्द्रोदय ४ तोले

भीमसेनी कपूर १६ तोले जायफल काली मिरच लोंग यह १६ तोले ले कस्तूरी ४ मासे सबको खरल कर बारीक एक मासे नागरबेलके पानमें रखकर खाय तो मदमाती सैकड़ों स्त्रियोंके मदको दूर करे ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

स्थावरंजंगमंविषं विषमंविषवारिवा ।

नविकारायभवतिसाधकेंद्रस्यवत्सरात् ॥ ६२ ॥

अर्थ—स्थावर जंगम विष अथवा जलका विष इसके एक वर्ष सेवनसे मनुष्यको नहीं व्यापताहै ॥ ६२ ॥

मृत्युंजयोयथाभ्यासान्मृत्युंजयतिदेहिनाम् ।

तथायंसाधकेंद्रस्यजरामरणनाशनः ॥ ६३ ॥

अर्थ—जैसे अभ्यास करनेसे मृत्युंजय देहधारियोंकी मृत्युको जीतताहै इसी प्रकार यह साधकके जरामरणका नाश करताहै ॥ ६३ ॥

अथ सर्पदंशस्योपधम् ।

कार्यासद्यःसर्पदंशेमणिमंत्रोपधक्रिया ।

अचिन्त्योद्दिप्रभावोस्तिमणिमंत्रोपधस्ययत् ॥ ६४ ॥

अर्थ—सर्पके काटेकी बहुत शीघ्र मणिमंत्र ओपधी क्रिया करनी चाहिये कारण कि, मणि मंत्र और ओपधियोंका प्रभाव अचिन्त्य है ॥ ६४ ॥

वृषराशिस्थेसवितरिशिरीपतरुवीजमेकमश्नुवते ।

सनरःखगपतितुल्योनदश्यतेसर्पसंचयैःसर्वैः ॥ ६५ ॥

अर्थ—जिस समय वृषराशिके सूर्य हों उस समय शिर-सका एकवीज खानेसे वह मनुष्य गरुडकी तुल्य होकर सर्प-समूहसे नहीं काटा जाताहै ॥ ६५ ॥

कुलिकामूलनस्येनकालदष्टोपिजीवति ।

तंडुलीयकमूलंहिपिपृतण्डुलवारिणा ॥

सव्योपंपीतमात्रंतुनिर्विषंकुरुतेनरम् ॥ ६६ ॥

अर्थ—काकादिनीकी जड़का नास लेनेसे कालका काटा-
हुआभी जीजाताहै चौलाईकी जड़ चावलके जलसे पीस-
कर पान करे तो मनुष्य तत्काल निर्विष होता है ॥ ६६ ॥

घृतमधुनवनीतंपिप्पलीशृङ्गवेरं

मरिचमपिचदद्यात्सप्तमं सैन्धवं च ॥

यदिभवतिसरोपंतक्षकेनापिदष्टो

गदमिहखलुपीत्वानिर्विषस्तत्क्षणेन ॥ ६७ ॥

अर्थ—घी शहद मक्खन पीपली अदरख मिरच काली
और सैन्धा यह सात औषधि बारीक कर पान करनेसे क्रोधसे
तक्षकका काटाभी अच्छा हो जाताहै ॥ ६७ ॥

जयपालस्यमज्जानंभावयेन्निबुकद्रवैः ।

एकविंशतिवारांस्तुततोवर्तिप्रकल्पयेत् ॥ ६८ ॥

मनुष्यलालयाघृष्टाततोनेत्रेतयांजयेत् ।

सर्पदष्टविपंजित्वासाजीवयतिमानवम् ॥ ६९ ॥

अर्थ—जयपाल (जमालगोटे) की मींगीको, नीमके
रसकी भावना दे, ऐसे २१ वार भावनाकी कल्पना करे
और मनुष्यकी लारसे घिसकर नेत्रोंमें अंजन लगानेसे
सर्पद्विष दूर होकर मनुष्य जीवित होताहै ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

अथ वृश्चिकदंष्ट्रः ।

आरक्तवृत्तापामार्गपत्रंभुक्तंतदैवहि ।

वृश्चिकेननरंविद्धंकुरुतेसुखिनंभृशम् ॥ ७० ॥

पानीयपिष्टजैपालकल्लेपेन सर्वथा ।

विपंवृश्चिकविद्धस्य भस्मीभवतिसर्वथा ॥ ७१ ॥

अर्थ-लाल गोल लडजीरेके पत्ते खानेसे तत्काल विच्छूके काटेका विष उतर जाता है और मनुष्य सुखी होता है तथा जमालगोटको पानीमें पीसकर लेप करनेसे विच्छूका विष उतर जाता है ॥ ७० ॥ ७१ ॥

अथ घस्टीदंशः ।

मरिचंनागरोपेतंसिन्धुसौवर्चलान्वितम् ।

फणिवल्लीरसैर्लेपाद्धंतितद्वरटीविषम् ॥ ७२ ॥

अर्थ-काली मिरच सोंठ सैंधानोन सोंचरनोन इनको नागरवेलपानरसके साथ लेप करे तो ततैयाका विष दूर हो ॥ ७२ ॥

अथ शतपदीदंशः ।

लेपः प्रदीपतैलस्य खर्जूरविषनाशनः ।

हरिद्राद्वयलेपो वासगैरिकमनःशिलः ॥ ७३ ॥

अर्थ-दीपकके तेलका लेप करनेसे कानखजरेका विष दूर होता है वा दोनों हलिदियोंका लेप वा गेरू और मनःशिलका लेप करनेसे विष दूर होता है ॥ ७३ ॥

अथ श्वदशः ।

जलवेतसपत्रंतुमूलंकुष्ठंपचेजलैः ।

सक्वाथः शीतलः पेयः परमश्वविपापहः ॥ ७४ ॥

अर्थ-जलवेत पत्ते सहित लेकर उसका मूल और कूट यह औषधि लेकर काढ़ा बनाय शीतल कर पीनेसे परम श्वविषको दूर करता है ॥ ७४ ॥

असनजटाजलपिष्टं यः खादति मातुलुंगफलमेकम् ।

उन्मत्तसारमेयप्रभवं विषमस्य नाशयति ॥ ७५ ॥

अर्थ-विजयसार जटामांसी, जलमें पीस इनके साथ जो एक मातुलंगका फल खाता है उसका उन्मत्तस्थानका विष उतर जाता है ॥ ७५ ॥

अथ लूताविषदूरीकरणम् ।

रजनीद्वयमंजिष्टापतंगगजकेशरैः ।

शीतांबुपिष्टैरालेपः सर्वलूताविषापहः ॥ ७६ ॥

अर्थ-हल्दी दारुहल्दी मजीठ पतंग गजकेशर इनको ठंडे पानीसे पीस लेप करनेसे मकरीका विष उतर जाता है ७६॥

अथ भक्षितस्य विषस्य निराकरणम् ।

शीतोपचारावासेकाः शीताः शीतस्थलस्थितिः ।

विषार्त्तविषवेगानां शांत्यैस्थुरमृतं यथा ॥ ७७ ॥

अर्थ-इसमें शीतल उपचार शीतल सेक शीतल स्थानमें स्थिति करनी तब विषार्त्तके विषवेग शान्त होजातेहैं इसमें संदेह नहीं ॥ ७७ ॥

भूनागताम्रशिखिपिच्छताम्रं

जहद्विपंवाफणिभृन्मणिंवा ॥

प्रक्षाल्यतद्धारिनिपीयचात्तो

विपंजयेत्स्थावरजंगमाख्यम् ॥ ७८ ॥

अर्थ-तसिता ताम्र और मोरपंखका तांबा सेवन करनेसे विष दूर होता है वा सर्पकी मणिको जलसे धोकर वह जल पीनेसे स्थावर जंगम दोनों प्रकारका विष दूर होता है ॥ ७८ ॥

मरिचानवपत्राणिसैन्धवं मधुसर्पिणी ।

निवेगेन विपंस्थावरजंगमम् ॥ ७९ ॥

गरंविषं कणमृषणंचतुर्थं समांशं कुरुदेवदाल्याः ।

रसेन पिष्टो विषवज्रपातो रसो भवेत्सर्वविषैकहन्ता ८० ॥

निष्कास्य संजीवितिसंप्रयुक्तो नृमूत्रयोगेन च सर्वथैव ।

जटाविषेणाकुलितं तथान्यैर्द्रव्यैर्विषैर्वर्णितमातुरं च ८१

अर्थ—काली मिरच नीमके पत्ते सेंधा शहद घी इनके पानिसे स्थावर जंगम दोनों प्रकारका विष नाश होजाता है वच्छनाग विष सुहागा कालीमिरच नीलाथोथा इन सबको समान भाग ले इनको बन्दालके रसमें खरल कर चार चार माषेकी गोली बनावे यह वज्रपातरस सब प्रकारके विषका नाश करता है यह मनुष्यके मूत्र वा गोमूत्रके साथ सेवन करनेसे घोर सर्पका डसाभी अच्छा होता है कन्दादिके विषकी पीडा तथा अन्यविषकी पीडा इसके सेवनसे शान्त होती है ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥

अथ क्षुद्ररोगः ।

[तत्रादी यौवनपिटिकाः ।

शार्वमलीकंटकप्रख्याः कफमारुतरक्तजाः ।

यौवनेपिटिकायूनां विज्ञेया मुखद्वयिकाः ॥ ८२ ॥

अर्थ—सेमलके कांटेकी समान कफ वातसे तथा रक्तसे युवा पुरुषोंके मुखपर फुन्सी होजाती हैं वे मुखद्वयिका सुहासे कहलाती हैं ॥ ८२ ॥

वरुणस्य कपायंणमुखमाक्षाल्य लेपयेत् ।

जातीफलचंदनंच मरिचंसहपेषितम् ॥

मुखलेपेन हन्त्याशुपिटिकां यौवनोद्भवाम् ॥ ८३ ॥

अर्थ-वरनाका काथ कर मुखपर लेप करे अर्थात् जायफल लालचन्दन काली मिर्चके साथ पीसकर मुखपर लेप करने से मुहांसे दूर होजाते हैं ॥ ८३ ॥

अथ कक्षादोषः ।

बाहुपार्श्वसंकक्षामुकृष्णस्फोटसंवेदनाम् ।

पित्तप्रकोपात्संभूतांकक्षामिति विदिशेत् ॥ ८४ ॥

सुरदारुशिलाकुष्ठैः स्वेदयित्वा प्रलेपयेत् ।

कफमारुतसंभूतंकक्षादोषं सुदारुणम् ॥ ८५ ॥

अर्थ-बाहुके पार्श्व अर्थात् बगलमें महाकष्टदायक व्रण निकलता है उसे कंखहारी कहते हैं वह पित्तकोपसे होती है देवदारु मनशिल कूठ इनका लेप कंखिहारीपर स्वेदित करके करे तो कफशतसे उत्पन्न दारुण कक्षादोष दूर होता है ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

अथ पाददारी ।

मधुच्छिद्रपुवसामजाघृतसर्जैर्विमिश्रितैः ।

सैहस्वेदोपपन्नौ तु पादौ चालेपयेन्मुहुः ॥ ८६ ॥

सर्जाह्वसिंधूद्रवयोश्चूर्णमधुघृताप्लुतम् ।

निर्मथ्य कटुतैलाक्तं हितं पादप्रमार्जनम् ॥ ८७ ॥

अर्थ-शहद चरबी हाडके भीतरका मगज घृत रालका चूरन इनको मिलाकर पहले तेल मल और स्वेदित कर पैरोंको चालन कर राल सेंधे नौनका चूर्ण मधु और घृतमें मिलाय कड़वे तेलमें मथन करे यह पैरमें मलनेसे हितकारक है ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

अथ गुदध्रंशोपधम् ।

गुदं च गव्यपयसाम्प्रक्षयेदविशंकितम् ।

दुग्धप्रवेश्यो गुदध्रंशो विशत्याशुनसंशयः ॥ ८८ ॥

मृपिकाणां वसाभिर्वागुदेसम्यक्प्रलेपनम् ।

चांगेरीकोलदध्यम्लनागरक्षारसंयुतम् ॥ ८९ ॥

घृतमुत्कथितं पेयं गुदभ्रंशरुजापहम् ॥ ९० ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानन्दभट्टविरचिते वैद्यरत्ने

पंचमः प्रकाशः ॥ ९ ॥

अर्थ—गुदभ्रंश (काँचका निकलना) रोगमें गौके दूधसे मर्दन करे तो अत्यन्त बाहर आई हुई काँचभी भीतर प्रवेश कर सकती है इसमें सन्देह नहीं अथवा चूहेकी चरबीसे काँचपर लेप करनेसे फिर बाहर नहीं आती है अम्लोण्याका रस घेरोंका काढा खट्टा इनमें सोंठ और जवाखारके साथ घृत सिद्ध कर पीनेको देना गुदभ्रंशरोग दूर होगा ८८-९०

इति श्रीगोस्वामिशिवानन्दभट्टविरचिते वैद्यरत्ने भाषाटीकाया पंचम प्रकाशः ॥ ५ ॥

अथ त्रिफला ।

एकाहरीतकीयोज्याद्रौतुयोज्यौविभीतकौ ।

चत्वार्यामलकान्याहुःसितात्रद्विगुणाभवेत् ॥ १ ॥

त्रिफलामेहशोथघ्नीकुष्ठहर्त्रारसायनी ।

सर्पिर्मधुभ्यांसंयुक्तासैवनेत्रामयापहा ॥ २ ॥

अर्थ—एक हरड दो बहेडे चार आमले दुगुनी मिश्री लेकर सेवन करे यह त्रिफला प्रमेह शोथ कुष्ठको दूर करनेवाला रसायन है घृत मधुके साथ सेवन करनेसे नेत्ररोगका दूर करनेवाला है ॥ १ ॥ २ ॥

अथ हरीतकीयोगः ।

चर्वितावर्द्धयत्यग्निपेपितामलशोधिनी ।

स्विन्नासंग्रहणीप्रोक्ताभृष्टापथ्यात्रिदोषनुत् ॥ ३ ॥

अर्थ—चर्वण करनेसे हरड आग्निकी बटाती है पीसकर

खानेसे मल शोधन करती है स्वेदन कीहुई दस्तावर है
और भुनीहुई त्रिदोषको दूर करती है ॥ ३ ॥

ग्रीष्मेतुल्यगुडांसुसैधवयुतांमेघावनद्धेम्बरे
तुल्यांशर्करयाशरदमलयाशुंठ्यातुपारागमे ॥

पिप्पल्याशिशिरेवसंतसमयेक्षौद्रैणसंयोजितां

राजन्प्राप्यहरीतकीमिवरुजोनश्यंतुतेशत्रवः ॥ ४ ॥

अर्थ-ग्रीष्म ऋतुमें हरीतकीका सेवन बराबर गुड मिला-
कर करे वर्षा ऋतुमें सैधानमकके साथ प्रतिदिन दो हरडका
सेवन करे शरदऋतुमें तुल्य शर्करा (मिश्री) मिलाकर
खाय हिमऋतुमें सोंठके साथ मिलाकर खाय शिशिर,
वसन्तमें शहदके साथ सेवन करे हे राजन् ! इसप्रकार
हरडके सेवन करनेसे रोगोंकी समान तुम्हारे शत्रु नष्ट
हों ॥ ४ ॥

अथ चिकटु ।

पिप्पलीमरिचंशुंठीत्रिभिर्यूपणमुच्यते ।

दीपनंश्लेष्मदोषघ्नकुष्ठपीनसनाशनम् ॥ ५ ॥

अर्थ-पीपली काला मिरच सोंठ इन तीनोंको व्यूषण
कहते हैं यह सेवन करनेसे दीपन है श्लेष्माका दोष दूर
करनेवाला तथा कुष्ठ और पीनसरोग दूर करता है ॥ ५ ॥

अथ पट्टकटु ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यनागरचित्रकैः ।

पंचकोलंकफानाहगुल्मशूलारुचीर्जयेत् ॥ ६ ॥

पंचकोलंसमरिचंपट्टकपणमुदीर्यते ।

पंचकोलगुणंतनुविशेषाद्ब्रह्मवर्द्धनम् ॥ ७ ॥

अर्थ-पीपल पीपालामूल चव्य सोंठ चीता यह पंचकोल
कहलाता है यह कफ आनाह गुल्म शूल अरुचिको

दूर करता है और इसीमें काली मिरच मिलानेसे यह षडूषण कहलाता है पंचकोलसे इसमें आग्निवर्द्धनका गुण अधिक है ॥ ६ ॥ ७ ॥

अथ शुंठीयोगः ।

साभृष्टासैधवोपेतात्रिदोषघ्न्यामतत्परम् ।

गुडेनाशोविबन्धघ्नीशोफवातविकारजित् ॥ ८ ॥

तक्रेणामपाचयतिपयसारेचयत्यमुम् ॥ ९ ॥

अर्थ—भूनीहुई संधेके साथ सोंठका सेवन करे तो यह त्रिदोषको दूर करती है गुडके साथ सेवन करनेसे अर्शरोग विबन्धको दूर करती तथा शोफ और वातविकार दूर करती है मट्टेके साथ आमको पचाती और दूधसे रेचन करती है ॥ ८ ॥ ९ ॥

अथ चातुर्जातम् ।

त्रिगन्धमेलात्वक्पत्रैश्चातुर्जातंसकेशरम्

त्रिगन्धचचतुर्जातरूक्षोष्णलघुपित्तकृत् ॥

वर्ण्यरुचिकरंतीक्ष्णविपश्लेष्मामयापहम् ॥ १० ॥

अर्थ—इलायची दालचीनी तेजपात यह त्रिगुग्गुलु कहलाता है इसमें नागकेशर मिलानेसे चातुर्जात होता है त्रिगुग्गुलु और चातुर्जात रुखा है ठण्ण है हलका है पित्तकारक है वर्ण्य रुचिकारक तीक्ष्ण विष श्लेष्मा रोगका दूर करनेवाला है ॥ १० ॥

अथ पंचक्षीरीवृक्षाः ।

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थपारिसप्तक्षपादपाः ।

पंचैतेक्षीरिणःप्रोक्तास्तेपांत्वक्पंचवल्कलम् ॥ ११ ॥

अर्थ—बड, गूलर, पीपल, पारसपीपल, पाखर यह पांच वृक्ष क्षीरी कहाते हैं इनकी छाल पंचवल्कल कहलाती है ॥ ११ ॥

कैचित्तुपारिसस्थानेशिरीपंवेतसंपरे ।

त्वक्पंचकंहिमं ग्राहियोनिदोषव्रणापहम् ॥ १२ ॥

अर्थ—कोई पारिसके स्थानमें शिरस कोई वेतको कहते-
हैं इन पांचोंकी छाल ठंडी, ग्राही और योनिदोष तथा
व्रणको दूर करती है ॥ १२ ॥

अथ दशमूली ।

शालिपर्णीपृश्निपर्णीवृहतीद्वयगोक्षुरैः ।

बिल्वाग्निमंथश्योनाकपाटलाकाशमरीयुतैः ।

दशमूलमिदं ख्यातं कथितं तज्जलं पिबेत् ॥ १३ ॥

अर्थ—शालिपर्णी पृश्निपर्णी अर्थात् शरिबन, पिठवन,
छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, मोखरू, बेल, अरणी, सोना-
पाठा, पाटल, कंभारी यह दशमूल कहाता है, काथ करके
इनका जल पिया जाता है ॥ १३ ॥

अथ पंचलवणम् ।

सिन्धुसौवर्चलंचैव विडं सामुद्रिकंगडम्

एकं द्वित्रिचतुष्पंचलवणानि क्रमाद्विदुः ॥ १४ ॥

अर्थ—सैधानोन, विरियासौचरलोन, विडलोन, समुद्र-
लोन, कालानोन क्रमसे एक, दो, तीन, चार, पांच
लवण तक जानना ॥ १४ ॥

अथ क्षारी ।

स्वर्जिकायावशूकश्चक्षारयुग्ममुदाहृतम् ॥ १५ ॥

अर्थ—सज्जीखार, जवाखार यह दो खार हैं ॥ १५ ॥

अथ युक्तायुक्तकथनम् ।

नवान्येव हियोज्यानि द्रव्याण्यखिलकर्मसु ।

विनाविडंगकृष्णाभ्यांगुडधान्याज्यमाक्षिकैः ॥ १६ ॥

अर्थ—सब कर्मके नवीनही द्रव्य प्रयोग करने चाहिये परन्तु वायविदङ्ग, पीपल, गुड, धान्य, घृत और शहद, यह पुराने काममें लावे ॥ १६ ॥

गुडूचीकुटजोवासाकूष्मांडंचशतावरी ।

अश्वगंधासहचरःशतपुष्पाप्रसारिणी ॥ १७ ॥

अर्थ—गिलोय कुडा अडूसा पेठा शतावर असगंध पीली-कटसरैया सोंफ पसरन ॥ १७ ॥

प्रयोक्तव्यासदैवार्द्राद्विगुणांचैवकारयेत् ।

शुष्कंनवीनंद्रव्यंचयोज्यंसकलकर्मसु ॥ १८ ॥

अर्थ—यह औषधि सदा गीली प्रयोग करनी चाहिये और यह दुगुनी प्रयोग करे नवीन द्रव्य सब कर्मोंमें शुष्क प्रयोग करना चाहिये ॥ १८ ॥

आर्द्रचद्विगुणंयोज्यमेपसर्वत्रनिश्चयः ।

कालेनुक्तेप्रभातंस्यादंगेनुक्तेजटाभवेत् ॥ १९ ॥

अर्थ—परन्तु गीला द्रव्य दूना प्रयोग करना चाहिये यह सर्वत्र निश्चय है, जिसमें काल नहीं कहा है वहां प्रातःकाल जानना चाहिये, जहां अंग नहीं कहा है वहां जटा जाननी ॥ १९ ॥

भागेनुक्तेचसाम्यंहिपात्रेनुक्तेतुमृन्मयम् ॥

एवमप्यौषधंयोगेयस्मिन्यत्पुनरुच्यते ॥ २० ॥

मानतोद्विगुणंप्रोक्तंतद्रव्यंतत्त्वदर्शिभिः ।

गुणहीनंभवेद्दर्पाद्धृतद्रूपमौषधम् ॥ २१ ॥

मासद्वयंतथाचूर्णहीनवीर्यत्वमाप्नुयात् ।

हीनत्वंगुटिकालेहौलभेतेवत्सरात्परम् ॥ २२ ॥

अर्थ—जहां भाग नहीं कहा वहां समान जानना, जहां पात्र नहीं कहा वहां मिट्टीका पात्र जानना और जो एकही औषधि किसी प्रयोगमें दो बार कही हो उसे दूनी लेना, यह तत्त्व-दर्शियोंका निश्चय है. १ वर्ष बीतनेसे औषधी गुणहीन हो-जाती है, दो महीनोंमें चूर्ण हीनवीर्य हो जाता है, एकवर्षमें गुटिका और लेह हीनवीर्य होजाते हैं ॥२०॥ २१ ॥ २२ ॥

हीनाःस्युर्घृततैलाद्याश्चतुर्मासाधिकास्तथा ।

औषध्योलघुपाकाःस्युर्निर्वीर्यावत्सरात्परम् ॥२३॥

अर्थ—घृत और तेल चारमहीनेमें हीनवीर्य हो जाते हैं, वर्षसे अधिक औषधी हीनवीर्य, लघुपाकवाली हो जाती-हैं ॥ २३ ॥

पुराणाःस्युर्गुणैर्युक्ताआसवाधातवोरसाः ।

व्याधियुक्तंतुयद्रव्यंगणोक्तमपितत्त्यजेत् ॥ २४ ॥

अर्थ—आसव और धातुरस पुराने होकर गुणयुक्त हो-जाते हैं, जो द्रव्य व्याधियुक्त हो वह गणमें कहा हो तो भी त्यागदे ॥ २४ ॥

अनुक्तमपियद्युक्तंयोजयेत्तत्रतद्बुधः ।

भल्लातकासाभावेतुप्रदेयंरक्तचंदनम् ॥ २५ ॥

अर्थ—जो द्रव्य कथन नहीं किया है और वह हितकारी हो तो उसको उसमें डालना चाहिये भिलावे और कासके अभावमें लालचन्दन देना चाहिये ॥ २५ ॥

तुगाभावेप्रदातव्यात्वक्क्षीरीतद्वणानुधैः ।

अंतस्संमार्जनेऽमोदास्थानेयोज्यायवानिका ॥ २६ ॥

वहिःसंमार्जनेऽमोदाह्यजमोदैवगृह्यते ।

कृष्णजीरकयोगोनकर्तव्योभक्ष्यभेषजे ॥ २७ ॥

अर्थ-तजके अभावमें वंशलोचन देना चाहिये. अन्तः शुद्धिमें अजमोदके स्थानमें अजवायन लेनी और वही संमार्जन अजमोदाके स्थानमें अजमोदही लेनी, भक्ष्य औषधीमें काले जीरेका योग न करना चाहिये ॥ २६ ॥ २७ ॥

तस्यस्थानेविधातव्योजीरकः कुशलैः सदा ।

अंतःसंमार्जनेयोज्यंवचास्थानेकुलिंजनम् ॥ २८ ॥

अर्थ-उसके स्थानमें चतुर पुरुषोंको सदा सफेदजीरा प्रयोगकरना चाहिये, अंतःसंमार्जनमें वचक स्थानमें कुलिंजनका प्रयोग करना चाहिये ॥ २८ ॥

सारस्तुखदिरादीनान्निवादीनांत्वचःस्मृताः ।

फलंचदाडिमादीनांपटोलादेर्दलंमतम् ॥ २९ ॥

अर्थ-सारोंमें खैरसारादि छालके स्थानमें नीमकी छाल लेनी, दाडिमादि फलके स्थानमें उसका फल और पटोलादिके दल लेने चाहिये ॥ २९ ॥

मुक्ताभावेक्षिपेन्नूनमुक्ताशुक्तिचतद्वणाम् ।

अभावेमधुनोयोज्योगुडोजीर्णश्चतद्वणः ॥ ३० ॥

अर्थ-मोतीके अभावमें मुक्तासीपी उतनीही ढालनी चाहिये मधुके अभावमें पुराना गुड प्रयोग करना चाहिये ३०

सिताभावेभवेत्खंडंशाल्यभावेचपट्टिकाः ।

असंभवेतुद्राक्षायाःप्रदेयंकाश्मरीफलम् ॥ ३१ ॥

अर्थ-मिश्रीके अभावमें खांड, शालिक अभावमें षष्टिक
धान्य और दाखके अभावमें खंभारीका फल देना चाहिये ३१

वृक्षाम्लं न भवेद्यत्र दाडिमाम्लं प्रयोजयेत् ।

वेतसाम्लस्य चाभावे हरिमंथाम्लमादिशेत् ॥

अभावे चंदनस्यापि मेलयेद्रक्तचंदनम् ॥ ३२ ॥

अर्थ-जब इमली न मिले तो खट्टे दाडिमका प्रयोग
करना, अमलवेतके अभावमें चणक अम्ल (चूका) प्रयोग करे,
श्वेत चन्दनके अभावमें लालचन्दन डालना चाहिये ॥ ३२ ॥

अथ विरुद्धाहारकथनम् ।

विरुद्धमपि चाहारं विद्याद्गुरुविषोपमम् ।

तद्बोधाय भिषक्स्थाप्यो भोजनं वसरे नृपैः ॥ ३३ ॥

अर्थ-विरुद्धभोजन गुरु विषकी समान होजाताहै, इस-
के ज्ञानार्थ राजाओंको भोजनके समय स्थापन करना
चाहिये ॥ ३३ ॥

कालक्रमेण सद्यो वा विरुद्धाहारसेवनम् ।

निहंति मानवंतस्माद्विरुद्धमशनं त्यजेत् ॥ ३४ ॥

अर्थ-कालक्रमस वा तत्काल विरुद्ध आहारका सेवन
करना मनुष्यको मार डालताहै इसकारण विरुद्धभोजन
त्यागदे ॥ ३४ ॥

व्याधिर्मिन्द्रियदौर्बल्यं मरणं वा प्रयच्छति ।

विरुद्धमशनं तत्स्याद्वर्जयेदात्मवान्नरः ॥ ३५ ॥

अर्थ-व्याध, इन्द्रियदुर्बलता वा मरण इससे होताहै इस
कारण विरुद्धभोजनको सदा त्याग देना चाहिये ॥ ३५ ॥

दुग्धशाककुलत्थमीनमदिरावल्लीफलक्षारव-

दम्लैर्मासकवीरजां वदधिक्षौद्रैः पृथग्वापृथक् ॥

दुष्टस्यादधितूष्णलाकुचपयस्तैलासवांश्चायुधै-

स्तालेनाप्यथतक्रमाज्यकदलीधानापयःसक्तुभिः ३६

अर्थ-शाक कुलथीके साथ दूध विरुद्ध भोजन है, मछली-
के संग मदिरा अजमोद मैनफल और क्षार विरुद्ध है अम्ल-
वेतके संग मांस कांजी जम्बूफल दधि शहद पृथक् भोजन
करना विरुद्ध है और दही प्याज बड़हरका फल दूध तेल
आसव यह परस्पर विरुद्ध हैं ताड़के फलके साथ मट्ठा घृत
केलकी फली, भूने जी और सतुओंके साथ दूध विरुद्ध है ३६

मुहूर्तपंचकादूर्ध्वक्षीरं भजति विक्रियाम् ।

तदेव द्विगुणे काले विषवद्वन्तिमानवम् ॥ ३७ ॥

अर्थ-दूध पांच मुहूर्ततक बैसेही धरा रहे तो विकारी
हो जाता है और दश मुहूर्ततक धरा रहनेसे मनुष्यको विष
घटानेवाला होता है ॥ ३७ ॥

अकथितं दशघटिकाः कथितं द्विगुणञ्च तत्पयः पथ्यम् ।

अथ वामधुररसाढ्यं यावत्तावत्पयः पथ्यम् ॥ ३८ ॥

अर्थ-बिना ओटाया हुआ दशघडीतक, ओटाया हुआ
बीस घडीतक दूध पथ्य है और मीठा मिलाया हुआ जव-
तक इच्छा हो रहने दे ॥ ३८ ॥

मत्स्यमांसगुडमुद्गमूलकैः कुष्ठमावहति सेवितं पयः ।

शाकजांघवसुरासवैः पुनर्मरियत्यबुधमाशुसर्पवत् ३९ ॥

अर्थ-मच्छीका मांस गुड मृग मूलाके साथ सेवन कर-
नेसे कुष्ठ करता है शाक जम्बूफल आसवके साथ सेवन
करनेसे सर्पकी समान मूर्खको मार डालते हैं ॥ ३९ ॥

एणैर्मृगैर्मयूरैश्च तित्तिरैर्लावकादिभिः ।

सर्वे जांगलमांसेश्च क्षीरं प्रति निषिद्धयते ॥ ४० ॥

अर्थ—एण मृग मोर तीतर लावा और सब जांगल मांसोंके साथ दूध पीमा वजित है ॥ ४० ॥

अम्लेष्वा मलकंशस्तंलवणेषु च सैन्धवम् ।

कपायेष्वभयाशस्ता कटुवर्गेषु नागरम् ॥ ४१ ॥

अर्थ—अम्ल पदार्थोंमें आमला, लवणमें सेंधा, कषायोंमें हरड, कटुवर्गमें सोंठ ॥ ४१ ॥

पटोलं तिक्तवर्गेषु मधुरेषु च शर्करा ।

एतैः सह हितं दुग्धमेतदन्यैर्विकारकृत् ॥ ४२ ॥

अर्थ—तिक्त वर्गोंमें पटोल मधुरमें शर्करा इनके साथ दूध पीनेसे विकार नहीं करता इनसे अन्योके साथ विकार करता है ॥ ४२ ॥

उष्णेन दिव्यसलिलेन वराहगोधा-

मांसेन याति विकृतिं मधुमूलकैश्च ।

तत्रेण चोष्णमपि तुल्यघृतं घृतं च

कांस्ये दशाहमुपितं च तथा घृतञ्च ॥ ४३ ॥

अर्थ—उष्ण दिव्यजल और वराह गोहके मांसके साथ मधु मूलके विकारको प्राप्त होते हैं और तत्रके साथ गरम घृत वा बेसाही घृत खाना वजित है और कांसीके वर्त्तनमें रक्खा हुआ घी दशादिनमें खानेके योग्य नहीं रहता है ४३

गोधाति तिरलावर्द्धिपल्लान्ये रंडते लाभिना

मत्स्याम्लैश्च वमाधवैरथ पृषदक्षामिपान्यासवैः ॥

तैलैः सर्पपजः कपोतपटलं सिद्धं विरुद्धं तथा

नानेकत्रतुपाचितानितरसाव्यापादयंत्यंगिनम् ४४॥

अर्थ-गोधा तीतर लावा मोर इनके मांस अण्डीके तेलके साथ विरुद्ध हैं, मच्छी इमली ऊख मधुके संग बिन्दुवाले मृगका मांस आसवसे विरुद्ध है तथा सरसोंके तेलसे कबूतरका मांस सिद्ध करनेसे विरुद्ध होजाता है, इनको एकत्र न पकावै ऐसा करनेसे यह भोजन करनेवालेको मारदेतेहैं ॥ ४४ ॥

हारीतस्यपलंहिदारुरजनीमूलेनविद्वानिशा

वह्नौपाचितमत्तिमानवपलंकौसुंभतैलैरविः ॥

प्रोतंकेनचिदेवभासपललंशूलेनदुष्टंमतं

वासिन्याविसकंटिकासहतथाकुलमापकैश्चाहिता ४५

अर्थ-हारीतका मांस हलदी दारुहलदीके साथ विरुद्ध है मूल (पुष्करमूल) कपूर और हलदी विरुद्ध है और अग्निमें पकाया हुआ नो मनुष्यका मांस कुसुमके तेलसे कुलथी और शूलपर रक्खा हुआ मांस पक्षीका मांस निकम्मा हो जाता है और सफेद कटसरेया वनककोडके साथ विरुद्ध है तथा कुलथीके साथभी विरुद्ध है ॥ ४५ ॥

दुष्टंपायसमन्वितंकृशरयाचंद्रस्तुनिंबूरसे-

स्तैलेःसार्द्धमफेनकंकिटिवसासिद्धोविरोधोवकः ॥

सर्पिःक्षौद्रवसांघृतैलमपृथक्तद्द्रिशोवात्रिशो

भिस्सापर्युषितातथामुद्गरुण्णोष्णीतथानोहिता ४६

अर्थ-दूधक वा खीरके साथ खिचड़ी विरुद्ध है कपूर निम्बूकेरसके साथ विरुद्ध है और तेलके साथमें फेनराहित शृङ्गरकी चरबी मिलानेसे विरुद्ध है घृत और शहद बराबर मिलानेसे विरुद्ध है वसा (चर्बी) जलतेल विरुद्ध हैं इसी प्रकार

दा वा तीन दिनका रक्खा वासी अत्र तथा बहुत अनुष्ण
तथा वारंवार गरम हितकारी नहीं है ॥ ४६ ॥

अत्युष्णं खलु वस्तु मूलकयुतं शूलामगुल्मप्रदं
दुष्टं लाकुचमाज्यदुग्धगुडदध्याज्यं समाष्टं पृथक् ४७
सक्तुर्भक्तपयःपलैः समथितैर्दुष्टः पृथग्वा पृथक्
तीक्ष्णक्षौद्रकणागुडैस्सहतथा स्यात्काकमाचीभृशम्
स्नेहं निस्तलनेन स्य तलिता किंचोपितायामिनीं
कंपिलस्तु सतत्र एवमहिमैर्भल्लातमन्नादिभिः ॥ ४८ ॥

अर्थ-अत्यन्त गरम वस्तु मूलीके सहित खानेसे शूल
आम और गुल्मरोग करती है और बडहरका फल घृत
दूध गुड दहीके साथ समांश वा पृथक् २ विरुद्ध है सक्तुओं-
के साथमें दूध मिलाकर वा मांसके साथ सक्तू मिलाकर
खाना विरुद्ध है जवाखार शहद पीपल विरुद्ध है गुडके
साथमें यह तथा काकमाची (मकोय कवैया) विरुद्ध है
जिस तेलमें मछली पकाई हो उसमें हलदी विरुद्ध है बासी
त्याज्य है कवीला तक्रके साथ और कपूरको छोड़
भिलावा अन्नादिके साथमें विरुद्ध है इस प्रकार विरुद्ध
जानें ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

रात्रौ क्षीरं न सेवेत यदि सेवेत न स्वपेत् ।

यदि स्वपेद्धरत्यायुस्तस्मात्पथ्यं दिवापयः ॥ ४९ ॥

अर्थ-रात्रिमें दुग्ध सेवन करना नहीं और जो सेवन करे
तो सोवे नहीं और जो दुग्ध पीकर तत्काल सोता है तो
आयु हरता है इसकारण दिनमें दूध पीना पथ्य है ॥ ४९ ॥

हेमन्तेशिशिरेचापिवर्षासुदधिशस्यते ।

शरद्रीष्मवसन्तेषु प्रायशस्तद्विगर्हितम् ॥ ५० ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानन्दभट्टविरचिते

वैद्यरत्ने पष्ठः प्रकाशः ॥ ६ ॥

अर्थ-हेमन्त शिशिर और वर्षा में दही का खाना उत्तम है, शरद ग्रीष्म और वसन्त में दही खाना वर्जित है ॥ ५० ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानन्दभट्टविरचिते वैद्यरत्ने पण्डितज्वालाप्रपाद-

मिश्रवृत्तभाषाटीकाया पष्ठः प्रकाशः ॥ ६ ॥

अथ काथविधिः ।

पानीयंपोडशगुणंक्षुण्णद्रव्याद्विनिःक्षिपेत् ।

मृत्पात्रेकथितं ग्राह्यमष्टमांशावशेषितम् ।

शृतःकाथःकपायश्चनिर्यूहश्चेतिनामभृत् ॥ १ ॥

अर्थ-काथकी विधि कहते हैं-एकपल औषधि चूर्ण और सोलह पल पानी के साथ मिट्टी के पात्र में ओटावै जब अष्ट-मांश शेष रह जाय तब छानले इसको शृत कपाय काथ, और निर्यूह भी कहते हैं ॥ १ ॥

अथावलंढिका ।

काथादेर्यत्पुनःपकाद्वनत्वंसारसक्रिया ।

सोवलेहश्चतन्मात्रास्यात्तथैवपलोन्मिता ॥ २ ॥

अर्थ-काथादि औषधों के जो फिर पकाने से गाढ़ा होता है उसको रसक्रिया और अवलेह कहते हैं इसकी मात्रा एक पल की है ॥ २ ॥

अथ चूर्णविधिः ।

अत्यन्तशुष्कं यद्रव्यं सुपिष्टं वस्त्रगालितम् ।

तत्स्याच्चूर्णं रजःक्षौद्रस्तन्मात्राकर्पसंमिता ॥

चूर्णे गुडः समो देयः शर्कराद्विगुणामता ॥ ३ ॥

अर्थ-जो अत्यन्त सूखी औषधी सुन्दर पीसिके बख्खसे छानी होय इसको चूर्णरज और क्षौद्र कहतेहैं, उसको खानेकी मात्रा एक कर्पकी है, जो चूर्णमें गुठ मिलाना होय तो चूर्णके समान शक्कर दूनी मिलावै, हींग भूनके मिलानी ॥ ३ ॥

अथ मंडविधिः ।

जलेचतुर्दशगुणेसिद्धोमण्डस्त्वसिक्थकः ॥

शुण्ठीसैधवसंयुक्तःपाचनोदीपनोलघुः ॥ ४ ॥

अर्थ-अच्छे चावलोंको चौदहगुणे जलमें सिद्ध करनेसे मण्ड सिद्ध होता है इसमें सोंठ और सैंधा मिला सेवन करनेसे दीपन पाचन और लघु होता है, चावलोंके सीजनपर मांड निकाल लेना इसको शुद्ध मण्ड कहते हैं ॥ ४ ॥

तण्डुलैरर्द्धमुद्रांशैःकिंचिद्धृष्टःसुपाचितः ।

धान्यत्रिकटुसिंधूत्थहिंशुतक्रेणयोजितः ॥ ५ ॥

ज्ञेयःसोष्टगुणोमंडोज्वरदोषव्रणापहः ।

रक्तक्षुध्रर्धनःप्राणप्रदोवस्तिविशोधनः ॥ ६ ॥

अर्थ-आधे चावल और मूंग मिलाकर कुछ भूनके इसमें धनियाँ सोंठ मिरच पीपल सैंधानिमक मूंग चावल हींग और तक्र यह इसमें मिलावै हींग भूनले चौदहगुणे पानीमें डालकर पकावै जब चावल सीजजाय तब उतारकर छानले इसको अष्टगुण मण्ड कहतेहैं, यह ज्वरदोष और व्रणदोषका दूर करनेवाला है रक्त और क्षुधाका बढ़ानेवाला प्राण देनेवाला वस्तिका शोधक है ॥ ५ ॥ ६ ॥

सुकण्डितैस्तथाभृष्टैर्वाट्यमंडोयवैर्भवेत् ।

कफपित्तहरःकंठचोरक्तपित्तप्रसादनः ॥ ७ ॥

अर्थ-श्रेष्ठ जौओंको उत्तम रीतिसे कूट फटक कर भूनै, फिर बिन फटककर उसमें चौदह गुना पानी चठाकर सिजावै फिर पानी छानकर सेवन करे इसे वाट्यमण्ड कहतेहैं इसके पीनेसे कफ पित्तका दोष दूर हो कंठको हितकारक और रक्त पित्तका कोष दूर करनेवाला है ॥ ७ ॥

लाजैर्वातंडुलैर्भृष्टैर्लाजामंडःप्रकीर्तितः ।

श्लेष्मपित्तहरोग्राहीपिपासाज्वरजिन्मतः ॥ ८ ॥

अर्थ-धानकी भूनी खील वा चावलोंको भूनकर उसमें चौदह गुना पानी डालकर ओंटावै फिर उसको पसाकर मांड निकालले इसे लाजामण्ड कहतेहैं यह श्लेष्म पित्त हर-नेवाला ग्राही प्यास और ज्वर दूर करताह ॥ ८ ॥

अथ यूपः ।

यूपःकृतोद्विदलानामष्टादशगुणेषुनि ।

मुद्गामलकयूपस्तुभेदनःकफपित्तजित् ॥

तृड्दाहशमनःशीतोमूर्च्छाभ्रममदापहः ॥ ९ ॥

अर्थ-यूपविधि द्विदलवाले द्रव्योंको अठारह गुणे जलमें डालकर गाढ़ा होजानेपर यूप कहलाताहै, मूंग और आम-लेका यूप भेदन और कफपित्तका जीतनेवाला है, यह तृषा दाहका शान्त करनेवाला ठंडा मूर्च्छाभ्रमको दूर करताहै ॥

अथ धातुशोधनमारणे ।

तत्रादौ हेमनः ।

सुवर्णमुत्तमंवह्नीविद्रुतंनिक्षिपेत्त्रिशः ।

कांचनारद्रवेशुद्धंकांचनंजायतेभृशम् ॥ १० ॥

शुद्धसूतंसमंस्वर्णखल्वेकृत्वातुगोलकम् ।

ऊर्ध्वाधोगंधकंदत्वासर्वतुल्यनिरुद्धयच ॥ ११ ॥

त्रिंशद्द्वयोपलैर्देयंपुटमेकंचतुर्दश ।

निरुद्धंहेमभस्मस्याद्गन्धोदेयःपुनःपुनः ॥ १२ ॥

अर्थ-उत्तम सुवर्णको अग्निम तीनवार तपावै जब बहं गरम होजाय तब कचनारके रसका पुट देता जाय तो सुवर्ण शुद्ध हो जाता है शुद्ध पारा और सोना बराबर लेकर खरल करे फिर उसका गोला काके उस गोलेके समान नीचे ऊपर गंधक रखकर शरावसंपुटमें तीस जंगली कंडोंकी आँच देना ऐसेही बारंवार मिला मिलाकर चौदह पुट देना तो निरुद्ध भस्म होगी ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

अथ रजतस्य ।

तैलेतक्रेगवांमूत्रेकांजिकेचकुलत्थके ।

त्रिफलाक्वाथमध्येतुसंशोध्याःसर्वधातवः ॥ १३ ॥

विधायपैष्टींसूतेनरजतस्याथमेलयेत् ।

तालंगंधंसमं पश्चान्मर्दयेन्निंबुकद्रवैः ॥

द्वित्रैःपुटैर्भवेद्भस्मयोज्यमेतद्रसादिपु ॥ १४ ॥

अर्थ-तेल तक्र गोमूत्र कांजी कुलथी और, त्रिफलेके काथमें सम्पूर्ण धातुओंको शोधना चाहिये चांदीके कंटकवेधी पत्र कर अग्निमें तपाकर तेल तक्र गोमूत्र और कुलथीके काठमें तीन तीन बेर बुझावै तो शुद्ध हो पारेके साथ खरल करके पारा और रजतको मिलावै और हरताल तथा गंधक बराबर लेकर नींबूका रस डालकर खरल करे दो तीन पुट देनेसे भस्म हो जाती है इसको रसादिकमें प्रयोग करे ॥ १३ ॥ १४ ॥

अथ ताम्रस्य

जंबीररससंपिष्टगंधकेनचलेपितम् ।

ताम्रपत्रंशरावस्थंत्रिपुटैर्यातिभस्मताम् ॥ १५ ॥

अर्थ-ताम्रके अतिसूक्ष्म पत्र करके उसे उपरोक्त औषधासे तीन बार बुझावे और जंबीरके रसमें पीसकर उसके ऊपर गंधक लगावे फिर सिकोरेमें रखकर फूंदके ऐसे तीन पुट देनेसे ताम्रकी भस्म हो जाती है ॥ १५ ॥

अथ रीतिकास्थयोः ।

ताम्रवन्मारणंचापितयोरुक्तंभिषग्वरैः ॥ १६ ॥

अर्थ-ताम्रकी समान पीतल और कांसीका शोधन करे १६

अथ लोहस्य ।

द्वादशांशेनदरदंतीक्ष्णचूर्णस्यमेलयेत् ।

कन्यानीरेणसंमर्द्ययामयुग्मतुतत्पुनः ॥ १७ ॥

शरावसंपुटेकृत्वापुटेद्गजपुटेनवै ।

सप्तधैवंकृतेलोहरजोवारितरंभवेत् ॥ १८ ॥

अर्थ-पोलादके चूर्णका बारहवां हिस्सा हिंगुल मिलाकर धीकुँवारके पट्टेके रसमें दो पहर खरल करे पश्चात् शराव-संपुटमें रखकर कपडमिट्टी कर गजपुटमें फूंदके ऐसे सात पुट देनेसे लोहकी भस्म पानीपर तैरने लगे ॥ १७ ॥ १८ ॥

अथ किट्टस्य ।

अक्षांगारेधमेत्किट्टमक्षपात्रस्थगोजले ।

निर्वापयेदष्टवारंततःसूक्ष्मंविचूर्णयेत् ॥ १९ ॥

अर्थ-बहेडेकी लकड़ीके कोयले कर उसमें पुरानी कीटकों को धमावे लाल होनेपर गोमूत्रमें बुझावे इसप्रकार आठ बार सूक्ष्म चूर्ण करे ॥ १९ ॥

अथ वंगस्य ।

शुद्धं सतालमर्कस्य पिष्ट्वा दुग्धेन तत्पुटेत् ।

शुष्काश्च तथैवैर्वलकैः सप्तधा भस्मतामियात् ॥ २० ॥

अर्थ—शुद्ध वंगकी समान हरताल लेकर उसे आकके दूधमें पीसकर रांगेपर लेप करे और सूखे पीपलकी छालको लेकर उससे सातवार दग्ध करनेसे वंगकी भस्म हो जाती है ॥ २० ॥

अथ जस्तदस्य ।

जस्तदंगिरिजंतस्य दोषाः शोधनमारणे ।

वंगस्येव हि बोद्धव्या गुणांस्तु गणयाम्यथ ॥ २१ ॥

जस्तदंतुवरंतिक्तं शीतलं कफपित्तहृत् ।

चक्षुष्यं परमं मेहाम्पाण्डुश्चासंचनाशयेत् ॥ २२ ॥

अर्थ—जस्त पर्वतसे उत्पन्न होनेवाली धातु है उसके दोष शोधन और मारणमें वंगकी समान जानने जस्तके पतले पत्र कर अग्निमें तपाय सात या तीन बार नींबूके रसमें बुझावे फिर उनकी समान गंधक ले आकके दूधमें खरल कर उन जस्तके पत्रोंपर लेपकर मिट्टीकी मूसामें रखकर दूसरी मूसामें उसका मुख बंद करदे कपरमिट्टी कर अग्निमें पलोमें धर फूंकदे इसप्रकार दो अग्निपुट देनेसे जस्तकी भस्म होजाय यह जस्त तीखा शीतल कफ और पित्तका जीतनेवाला है चक्षुको हितकारक प्रमेह पाण्डु और श्वास रोग दूर करता है ॥ २१ ॥ २२ ॥

अथ सीसरस्य ।

त्रिभिः कुंभीषु टेर्ना गोवासारसविमर्दितः ।

सशिलो भस्मतामेतितद्रजः सर्वमेहनुत् ॥ २३ ॥

अर्थ-शीशा वा मनसिलका चूर्ण अटूसेके रसमें खरल कर गजपुटमें फूंकदे तीन पुटमें शीशेकी उत्तम भस्म होती-
है यह सब प्रकारके प्रमेह दूर करतीहै ॥ २३ ॥

अथ उपधातवः ।

अभ्रकं माक्षिकं तालं शिला नीलांजनं तथा ।

तुत्थकं रसकंचैते प्रोक्ताः सप्तोपधातवः ॥ २४ ॥

अर्थ-अभ्रक सुवर्णमाक्षिक हरताल मनसिल नीलाथोथा
सुरमा रसकपूर यह सात उपधातु हैं ॥ २४ ॥

तत्रादौ अभ्रकस्य ।

कृष्णाभ्रकं धमेद्वह्नौ ततः क्षीरे विनिक्षिपेत् ।

भिन्नपत्रं तु तत्कृत्वा तण्डुलीयाभ्रयोर्द्रवैः ॥ २५ ॥

भावयेदष्टयामं तदेवमभ्रं विशुद्ध्यति ।

धान्याभ्रकस्य भागैकं द्वौ भागौ टंकणस्य च ॥ २६ ॥

पिष्ट्वा तदंधमूपायां रुद्ध्वा तीव्राग्निना पचेत् ।

स्वभावशीतलं चूर्णं सर्वरोगेषु योजयेत् ॥ २७ ॥

वरांशुगोष्ठं च अभ्रं कलापद्दिकसमांशकम् ।

मृद्वग्निना पचेत् स्त्रेह्यममृतीकरणं त्विदम् ॥ २८ ॥

अर्थ-काले अभ्रकको अग्निमें तपाकर दूधमें बुझावे फिर उसके पत्र अलग कर चौलाई और नींबूके रसमें दोनोंको एकत्र करके उनमें उन पत्रोंको आठ पहर पर्यन्त भिगोदे तो अभ्रक शुद्ध हो फिर उस रसमेंसे अभ्रकको निकालकर उसकी धान्याभ्रक (कनरी हुई अभ्रक को ले उसमें चतुर्थांश चावलाक धान मिलाकर उसे कम्यलमें पोटली बांध परातमें रखवे फिर उसपर जल डालता जाय उसे पोटलीको मर्दता जाय इसप्रकार करनेसे

उस कम्बलमें जितना अभ्रक होगा वह बहकर उस परातके पानीमें आजायगा जब जानै सब अभ्रक परातमें आगया तब परातका पानी निकालकर फेंदके और उस अभ्रकके चूरेको धूपमें सुखाले इसे धान्याभ्रक कहते हैं) कर उसके दो भाग और दो भाग सुहागा इनको पीसकर अंधमूषोंमें रखकर बंद कर तीव्र अग्नि देवे जब स्वांगशीतल होजाय तब निकाल पीसकर सब औषधियोंके योगमें दे त्रिफलेका जल १६ पल गौका घृत ८ पल मृतअभ्रक १० पल इनको एकत्रकर लोहिकी कढाईमें मृदुअग्निसे पचावै जब जल घी जल जाय केवल अभ्रक शेष रहै तब यह लेह्य अमृतीकरण नामवाला होता है इसे औषधियोंके साथ दे ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

अथ स्वर्णमाक्षिकस्य ।

माक्षिकस्यत्रयोभागाभागैकंसैधवस्य च ।

मातुलुंगद्रवैर्वाथजंवीरस्यद्रवैःपचेत् ॥ २९ ॥

चालयेल्लोहजेपात्रेयावत्पात्रंमुलोहितम् ।

भवेत्ततस्तुसंशुद्धिस्वर्णमाक्षिकमृच्छति ॥ ३० ॥

अर्थ—तीनपैसेभर सुवर्णमाक्षिक पैसेभर संधानिमक, दोनोंको पीस कडाहीमें डाल चूल्हेपर चढाय नीचे तेज आंच दे कडाहीमें बिजोरे अथवा जंभीरीका रस डालता जाय और छेलीसे चलाता जाय जब स्वर्णमाक्षिक और कडाही दोनोंका लाल रंग होजाय तब सुवर्णमाक्षिक शुद्ध हुआ जानना ॥ २९ ॥ ३० ॥

कर्कोटीमेपशृंग्युत्थैर्द्रवैर्जंवीरजैर्दिनम् ।

भावयेदातपेतीत्रेविमलंशुद्ध्यतिध्रुवम् ॥

स्वर्णमाक्षिकवज्जेयन्तारमाक्षिकमारणम् ॥ ३१ ॥

अर्थ-रूपा माखीको ककोडा मेढासींगी जंभीरी प्रत्ये-
कके रसमें सातसात बार धूपमें खरल रखकर घोटें तो
शुद्ध हो स्वर्णमाक्षिककी समान रूपामाखीका मारण है
॥ ३१ ॥

अथ हरितालस्य ।

तालस्यकणशःकृत्वातच्चूर्णकांजिकेक्षिपेत् ।

दोलायंत्रेणयामैकंपक्वंशुद्धयतितालकम् ॥ ३२ ॥

तिलतैलेपचेद्यामंयामंचत्रिफलाजल ।

चूर्णोदकेनयामैकंपक्वंशुद्धयतितालकम् ॥ ३३ ॥

सदलंतालकंशुद्धं पौनर्नवरसेनतु ।

खल्वेविमर्दयेदेकंदिनंपश्चाद्विशोपयेत् ॥ ३४ ॥

संशोष्यगोलकंतस्यकुर्व्यात्तच्चविशोपयेत् ।

ततःपुनर्नवाक्षरैःस्थाल्याअर्द्धंप्रपूरयेत् ॥ ३५ ॥

तत्रतद्गोलकंधृत्वापुनस्तेनैवपूरयेत् ।

आकंठपिठरंतस्यपिधानंधारयेन्मुखे ॥ ३६ ॥

स्थालींचुछींसमारोप्यक्रमाद्रह्निविवर्द्धयेत् ।

दिनान्यन्तरशून्यानिपंचवह्निःप्रदीयते ॥

एवंतन्म्रियतेतालंमात्रातस्यैकरत्निका ॥ ३७ ॥

अर्थ-हरतालके छोटें छोटें बारीक टुकड़े कर उनको कप-
डेकी पोटलीमें बांधकर दोलायंत्रद्वारा एक पहर कांजीमें
पचावै तो शुद्ध हो एक पहर तिलके तेलमें एक पहर त्रिफलेके
गं किये जलमें पकावै तो इस प्रकार करनेसे शुद्ध होता है
शुद्ध किये हरतालको पुनर्नवाके रसमें एक दिन घोटकर

गोला बनाकर सुखावै जब वह गोला सूखजाय फिर एक हांडीमें आधी हांडीतक पुनर्नवाका क्षार भरके उसपर वह गोला रखकर ऊपरसे वह क्षार सुखतक भरके हांडीका मुख बंद कर चूल्हेपर चढाय क्रमसे अग्नि बढाताजाय इसप्रकार बराबर पांच दिन अग्नि प्रदीप्त करे फिर उसको ठंडा करले अवश्य हरतालकी भस्म होजायगी इस मोरे हुए हरतालकी मात्रा एक रत्तीकी है ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

अथ मनःशिला ।

अगस्तिपत्रतोयेनभावितासप्तवारकम् ।

शृंगवेररसैर्वापिविशुद्ध्यतिमनःशिला ॥ ३८ ॥

अर्थ-मनशिलको अगस्तियाके पत्तोंके रस अथवा अदर-खके रसकी सात भावना दे तो मनसिल शुद्ध हो ॥ ३८ ॥

अथ खपरह्य ।

नृमूत्रवाथगोमूत्रेसप्ताहरसकंपचेत् ।

दोलायंत्रेणशुद्धंस्यात्ततःकार्येणुयोजयेत् ॥ ३९ ॥

अर्थ-खपरियाको मनुष्यके मूत्रमें और गोमूत्रमें दोला-यंत्रसे सात दिन पकावै तो शुद्ध हो ॥ ३९ ॥

अथ तुल्यम् ।

ओतोर्विष्टासमंतुत्थंसक्षौद्रं टंकणांघ्रियुक् ।

त्रिवेवंपुटितंशुद्धंवांतिभ्रांतिविवर्जितम् ॥ ४० ॥

अर्थ-बिल्लीकी विष्टाके समान नीलाथोथा ले उसमें शहद और सुहागा डालकर गरल करे फिर शरावसंपुटमें रख कपडमिट्टी का फूँके ऐसे तीन बार करनेसे नीलाथोथा वमन और भ्रांतिरहित शुद्ध होता है ॥ ४० ॥

अथ नीलांजनस्य ।

स्रोतोऽंजनंतुद्विविधं श्वेतकृष्णप्रभेदतः ।

त्रिफलावारिणिस्वेद्यंतद्वयंसिद्धिमृच्छति ॥ ४१ ॥

अर्थ—श्वेत और कृष्णके भेदसे सुरमा दो प्रकारका है यह त्रिफलेके जलकी पुट देनेसे दोनों प्रकारका शुद्ध होता है ॥ ४१ ॥

अथ पारदशोधनम् ।

तत्रशोधनबाहुल्यादथवादरदाकृष्टंस्विन्नम् ।

लवणांबुभाजिदोलायां रसमादाय यथेच्छं कर्त्त-
व्यस्तेन भेषजयोगइति वचनादस्य दरदाकृष्टि-
लिख्यते ।

निंबूरसेनसंपिष्टात्प्रहरंदरदाहृदम् ।

ऊर्ध्वपातनयन्त्रेण संग्राह्यो निर्मलोरसः ॥ ४२ ॥

अर्थ—पारेका शोधन बहुत प्रकारसे है अथवा शिंगरफ-
से निकाल अत्यन्त खट्टी कांजीमें उसका स्वेदन करना
चाहिये व लवणका जल भरे दोलायंत्रसे रस लेकर यथेच्छ
प्रयोग करे इसका औषधियाके साथ योग है, इस वचनसे
शिंगरफसे पारेके निकालनेकी विधि लिखते हैं । एक पहर-
तक शिंगरफको नींबूके रससे खरल करे और ऊर्ध्वपातन
यन्त्रके द्वारा पारा निकालले यह निर्मल होता है ॥ ४२ ॥

अथोपरसाः ।

तत्रादौ गंधकशोधनम् ।

सदुग्धभांडस्य पुटे स्थितो यं शुद्धो भवेत्कूर्मपुटेन गंधः ४३

अर्थ—एक हांडीमें सेरभर दूध भरकर बम्रसे उसका
मुख बांधदे और १६ तोले आमलासार गंधक पीसकर
घीमें गलावे गलनेपर उस बम्रपर डालदे तो गंधक उस कप-

ढेंमेंसे टपककर दूधमें जमजायगी उसे निकाल पानीसे धो
सुखा रक्खै ॥ ४३ ॥

अथ सिंदूरस्य ।

सिंदूरं निंबुकद्रावैः पिष्ट्वा धर्मै विशोपयेत् ।

ततस्तंडुलतोयेन तथा भूतं विशुद्ध्यति ॥ ४४ ॥

अर्थ—सिंदूरको नींबूके रसमें घोटकर धूपमें सुखावै पीछे
चावलोंक पानीमें घोटकर धूपमें सुखावै तौ शुद्ध हो ॥ ४४ ॥

अथ समुद्रफेनस्य ।

समुद्रफेनः संपिष्टो निंबूतोयेन शुद्ध्यति ॥ ४५ ॥

अर्थ—निंबूके अर्कके साथ खरल करनेसे समुद्रफेन शुद्ध
होताहै ॥ ४५ ॥

अथ दरदस्य ।

मेपीक्षीरेण दरदमम्लवर्गैश्च भावितम् ।

सप्तवारं प्रयत्नेन शुद्धिमायाति निश्चितम् ॥ ४६ ॥

अर्थ—भेड़ीके दूधमें और कोईसीभी खटाई नींबूके रस
आदिकी पृथक् पृथक् सात भावना देनेसे हिंशुल शुद्ध
होताहै ॥ ४६ ॥

अथ टंकणस्य ।

अतस्तं शोधयेदेवं वृक्षावुत्फुल्लितः शुचिः ॥ ४७ ॥

अर्थ—अग्निपर रखनेसे फूलकर सुहागा शुद्ध होजाताहै ४

अथ शिलाजतुनः ।

अथोष्णकालेरवितापयुक्ते व्यभ्रे निवाते समभूमिभागे ॥
चत्वारिपत्राण्यसितायसानिन्यस्यातपेदत्तमनोविधानः
शिलाजतुश्रेष्ठमवाप्य पात्रे प्रक्षिप्य तोयं द्विगुणं ततोऽस्मात्
उष्णं तदूर्द्ध्वं शृतमप्सु दत्त्वा विशोपयेत्तन्मृदितं यथावत् ॥

अर्थ-गरमीके दिनोंमें जब कहीं धूप निकले आकाशमें और वायुसे रहित हो उससमय समान भूमिमें चार लोह-पात्र स्थापन करे उनमेंसे प्रथम पात्रमें शिलाजीतके टुकड़े टुकड़े कर डालदे और शिलाजीतसे दूना जल ढाले और उससे आधा गरम जल ढाल उसे धीरे धीरे हाथसे मलकर बस्त्रमें छानले उस छने जलको पात्रमें भरकर धूपमें रखदे ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

ततस्तुयत्कृष्णमुपैतिचोर्द्धसंतानिकावद्रविरश्मियोगात्
पात्रात्तदन्यत्रततोनिदध्यात्तस्यांतरेकोणजलंनिधाय
ततश्चतस्मादपरत्रपात्रेतस्माच्चपात्रादपरत्रतत्र ॥

पुनस्ततोऽन्यत्रनिधायकृष्णंयत्संहृतं तत्पुनरादरेच्च ५१
यदापिशुद्धंजलमच्छमूर्द्धप्रसन्नभावान्मलमेत्यधस्तात्
तदात्यजेत्तत्सलिलंमलंचशिलाजतुस्याजलशुद्धमेवम्

अर्थ-जब उसपर मलाई जमजाय तब उसको उतारकर दूसरे पात्रमें रखता जाय जब मलाई जमना बंद होजाय तब दूसरे पात्रमें जो मलाई जमा की है उसमें गरम जल ढालकर धूपमें रखदे उसमें जो मलाई जमती जाय उसे निकाल निकालकर तीसरे पात्रमें रखता जाय इसी प्रकार चौथे पात्रमें भी करे जब इसमेंभी मलाई पड़ती जाय उससे निकाल कर प्रथम पात्रमें रखवे इसी प्रकार चार पांच बार करे जब पात्रमें ऊपर पानी स्वच्छ रहे तब जान कि शिलाजीत शुद्ध होगया उस जलको फेंकदे शिलाजीतको निकालले ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

वह्नौक्षिप्तंतुनिर्धूमंपक्त्वालिङ्गोपमंभवेत् ।

तृणाग्नेणाभसिक्षितमधोगलतितंतुवत् ॥

गोमूत्रगंधिमलिनं शुद्धं ज्ञेयं शिलाजतु ॥ ५३ ॥

अर्थ—जो शिलाजीत अग्निमें डालनेसे निर्धूम पक्क होकर लिंगक समान खड़ा होजाय और तिनके अग्रभाग पर रखकर जलमें डालनेसे तंतुओंके समान फैलकर नीचे बैठ गोमूत्रकीसी दुर्गन्धिदे और मलिन हो ऐसे शिलाजीतको शुद्ध जानना ॥ ५३ ॥

अथ विषाणि ।

खंडीकृत्य विपं वस्त्रपरिबद्धं तु दोलया ।

अजापयसि संस्विन्नं यामतः शुद्धिमाप्नुयात् ।

अजादुग्धाभावतस्तु गव्यक्षीरेण शोधयेत् ॥ ५४ ॥

अर्थ—बिषकी गांठको टुकड़ २ कर कपड़ेकी पोटलीमें बांध बकरीक मूत्रमें एक पहर स्वेदन करे तो शुद्ध हो बकरीके दूधके अभावमें गौके क्षीरमें शोधन कर ॥ ५४ ॥

अथोपविषाणि ।

अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं लांगलीकरवीरकम् ।

गुंजाहिफेनोधत्तूरः सप्तोपविषजातयः ॥ ५५ ॥

अर्थ—आकका दूध थूहरका दूध कलियारी, कनेर चोंटली अफीम धतूरा यह सात उपविष हैं ॥ ५५ ॥

अथ लांगलीशोधनम् ।

लांगलीशुद्धिमायातिदिनं गोमूत्रसंस्थिता ।

अर्थ—कलियारीक टुकड़ोंको एकदिन गोमूत्रमें भिजोवे तो शुद्ध हो ॥

अथ गुंजायाः ।

गुंजाकांजिकसंस्विन्नाप्रहरं शुद्धयति ध्रुवम् ॥ ५६ ॥

अर्थ—गुंजाको कांजीमें डाल एकपहर दोलायंत्रमें पचावे तो शुद्ध हो ॥ ५६ ॥

अथाद्विफनस्य ।

अहिफेनं शृङ्गवररसर्भाव्यं त्रिसप्तधा ।

शुद्धयत्युक्तेषु योगेषु योजयेत्तद्विधानतः ॥ ५७ ॥

अर्थ—अफीम अदरख के रस की २१ भावना देने से शुद्ध हो तदनन्तर योगों में डाल दे ॥ ५७ ॥

अथ धतूरस्य ।

धतूरबीजं गोमूत्रे चतुर्यामोपितं पुनः ।

कण्डितं निस्तुपं कृत्वा योगेषु विनियोजयेत् ॥ ५८ ॥

अर्थ—धतूरे के बीजों को चार पहर गोमूत्र में भिजोकर फिर निकाल सुखाकर भूसी दूर करे तो शुद्ध हो पीछे प्रयोगों में डाल दे ॥ ५८ ॥

अथ विषमुष्टिशोधनम् ।

किञ्चिदाज्येन संभृष्टो विषमुष्टिर्विशुद्ध्यति ॥ ५९ ॥

अर्थ—कुछ घी के साथ भूने से कुचला शुद्ध होता है वा कांजी के पानी में कुचले को दो पहर दोलायंत्र द्वारा स्वदन कर घृत में भूने तो शुद्ध हो ॥ ५९ ॥

अथ जैपालशुद्धिः ।

जैपालं रहितत्वं च कुरुरसज्ञाभिर्मलेमाहिषे

निक्षिप्तं त्र्यहमुष्णतोयविमलं खल्वेसवासोर्दितम्

लिप्तं नूतनखर्परेषु विगतस्नेहं रजः सन्निभं

निम्बूकांबुविभावितं च बहुशः शुद्धं गुणाढ्यं भवेत् ६०

अर्थ—जमाल गोट को तीन दिन में उसके गोबर में गाढ़ उसके बल्कल और जीम को दूर कर गरम पानी से धो वस्त्र से पीछे खरल में डाल मर्दन कर पीछे कोरे छिपटे पर लेप करे तो उसका तेल सूख जाय पीछे नींबू के रस में बहुत देर तक घाटे तो शुद्ध और गुणों में निर्मल हो ॥ ६० ॥

अथ वमनविधिः ।

शरत्काले वसन्ते च प्रावृट्काले च देहिनाम् ।

वमनं रेचनं चैव कारयेत्कुशलोभिपक् ॥ ६१ ॥

अर्थ-चतुर वैद्यको चाहिये कि शरत्काल वसन्त और
चौमासेमें वमन विरेचन करावे ॥ ६१ ॥

बलवंतं कफव्यातं हृल्लासादिनिपीडितम् ।

तथा वमनसात्म्यं च धीरचित्तं च वामयेत् ॥ ६२ ॥

अर्थ-बलवान्को कफसे व्याप्तको हृल्लासादिसे निपी-
डितको वमन करावे और धीर चित्तवालेको वमन करावे ६२

विषदोषेस्तन्यरोगे मन्दाग्निश्लीपदेऽर्बुदे ।

हृद्रोगकुष्ठवीसर्पमेहजीर्णभ्रमेऽपुच ॥ ६३ ॥

विदारिकापचीकासश्वासपीनसवृद्धिषु ।

अपस्मारेज्वरोन्मादेतथारक्तातिसारिषु ॥ ६४ ॥

नासाताल्वोष्ठपाके च कर्णस्रावेथ जिह्वके ।

गलशोथातिसारे च पित्तश्लेष्मगदे तथा ॥ ६५ ॥

मेदोगदेरुचौ चैव वमनं कारयेद्भिपक् ।

पटोलवासानि वैश्च पित्तं शीतजलं पिबेत् ॥ ६६ ॥

अर्थ-विषदोषमें स्तन्यरोगमें मन्दाग्नि श्लीपद अर्बुद-
रोगमें हृद्रोग कुष्ठ विसर्प मेह जीर्णज्वर भ्रम विदारिका
अपची श्वास कास पीनसवृद्धि अपस्मार ज्वरोन्माद रक्त-
अतिसार, नासा तालु ओष्ठ इनोका पाक, कर्णस्राव जिह्वा-
रोग गलशोथ अतिसार पित्तश्लेष्मरोग मेदरोग अरुचिरो-
गोंमें वैद्यको वमन कराना चाहिये, पित्त दोषमें पटोलपत्र
अडूसा और कटुनिम्बके पत्तोंका चूर्ण कर शीतल जल
मिलाकार पीवे तो वमनमें पित्त निकले ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

सश्लेष्मवातपीडायांसक्षीरमदनंपिवेत् ।

अजीर्णकोष्णपानीयंसिधुंपीत्वावमेत्सुधीः ॥ ६७ ॥

वमिनंपाययित्वातुजानुमात्रासनेस्थितम् ।

कंठमेरण्डनालेनस्पृशेत्तंवामयेद्विषक् ॥ ६८ ॥

अर्थ-तथा कफ वायुकी पीडा होय तो मैं नफलके चूर्णको दूधमें डालकर पीवै तो वमन होनेसे प्राणीका अजीर्ण दूर हो महृष्यको वमन कारक औषधी देकर घोटू ऊंचे आसनपर बैठावै और अंडकी नालको लेकर उसके मुखमें डालकर हलके हाथसे जैसे कफको स्पर्शकरे इसप्रकार कंठको सिरावै इसप्रकार भीतर बाहरसे कंठको सिराय वमन करावे ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

अथ वमनेऽनधिकारिणः ।

नवामनीयस्तिमिरीनगुल्मीनोदरीकृशः ।

नातिवृद्धो गर्भिणीचनस्थूलोनक्षतातुरः ॥ ६९ ॥

अर्थ-वमनके अयोग्य तिमिररोगी गुल्मरोगी उदररोगी कृश वृद्ध गर्भिणी स्थूल क्षत आतुरको वमन न करावे ६९ ॥

मदात्तो बालकोरुक्षः क्षुधितश्च निरुहितः ।

उदावर्त्यूर्ध्वरक्तीचदुश्छर्द्यः केवलानिली ॥ ७० ॥

एतेऽप्यजीर्णव्यथिता वाम्याये विपपीडिताः ।

कफव्याप्ताश्च ते वाम्यामधुकक्वाथपानतः ॥ ७१ ॥

अजीर्णपीतपानीयं व्यायामं मेथुनं तथा ।

स्नेहाभ्यंगान्प्रकोपंच दिनेकं वर्जयेत्सुधीः ॥ ७२ ॥

अर्थ-मदपीडित बालक रुक्ष भूखा निरुद्धबाहिनादिया दुग्धा उदावर्तरोगी जिसके नाक इत्यादिक ऊर्ध्वद्वारोंसे रक्त

निकलता होय केवल वातरोगी वा छर्द किये हुए वा अजीर्ण से व्यथित इनको वमन न करावे और जो यह कहें तौ अजीर्ण और विषपीडित मनुष्यको वमन करावे जो कफसे व्याप्त हैं उनको मधुकाथका पान कराकर वमन करावे अजीर्ण करने वाले भारी पदार्थ शीतलपानी दण्ड कसरत मैथुन देहमें भालिस करना तथा क्रोधकरना यह सब कर्म जिसदिन वमनकारी औषधि ले उसदिन त्यागदे ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

अथ विरेचनविधिः ।

स्निग्धंस्विन्नस्यवातस्यदद्यात्सम्यग्विरेचनम् ।

बहुपित्तोमृदुप्रोक्तोबहुश्लेष्माचमध्यमः ॥ ७३ ॥

बहुवातःक्रूरकोष्ठोदुर्विरेच्यःसकथ्यते ।

जीर्णज्वरोगरव्याप्तोवातरक्तीभगंदरी ॥ ७४ ॥

अर्शःपाण्डुरग्रंथिहृद्रोगारुचिपीडिताः ।

योनिरोगप्रमेहार्तगुल्मप्लीहव्रणार्दिताः ॥ ७५ ॥

विद्रधिच्छर्दिविस्फोटविमूचीकुष्ठसंयुताः ।

कर्णनासाशिरोवक्रगुदमेद्रामयान्विताः ॥ ७६ ॥

अर्थ-प्रथम स्नेहपानसे स्निग्ध और स्वेदनसे स्विन्न और वमनसे वातमनुष्यको रेचन देना, जो मनुष्य पित्ताधिक है वह मृदु (जिसका कोठा कोमल है) जो कफाधिक है सो मध्यकोष्ठ और जो वाताधिक है सो कठिनकोष्ठ है उसको कठिनतासे रेचन होता है. जीर्ण ज्वरसे व्याप्त विषसे व्याप्त वातरक्त भगन्दर रोगसे युक्त अर्शरोगी पाण्डुरोगी ग्रंथिरोगी हृद्रोग अरुचि योनिरोग प्रमेहसे व्याप्त गुल्म प्लीह व्रणसे युक्त विद्रधि छर्दि विस्फोटक विमूचिका कुष्ठ कर्ण नासिका शिरमुखगुद मेद रोगसेयुक्त ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

प्लीहशोथाक्षिरोगार्ताःकृमिक्षारानिलादिताः ।

शूलिनोमूत्रघातार्ताविरेकार्हा नरामताः ॥ ७७ ॥

अर्थ—प्लीह शोथ अक्षिरोगसे व्याकुल कृमि क्षार अनिल रोगसे अर्दित शूलवाले मूत्राघातरोगसे युक्त यह विरेचनके योग्य मनुष्यहैं ॥ ७७ ॥

मरिचंपिप्पलीशुण्ठीपथ्याधात्रीविभीतकम् ।

विडंगमुस्तकंचैलापत्रमेकैकटंककम् ॥ ७८ ॥

लवंगटंकदशकंस्वाविधटंकमितात्रिवृत् ।

एषांचूर्णेऽशीतिटंकमितांदद्यात्सितांसिताम् ॥ ७९ ॥

आख्ययाभिमतंचूर्णमितंप्रातस्तुभक्षयेत् ।

विरेचनमिदंश्रेष्ठमामशुद्धिकरंपरम् ॥ ८० ॥

अर्थ—काली मिरच पीपल, सोंठ हरड बहेडा आमला वायविडंग नागरमोथा इलायची पत्रज यह एकएक टंकले लोंग दशटंक और निसोत ७० टंक इनसब वस्तुओंका चूर्णकर उसमें अफ़सी टंक मिश्री मिलावे यह आख्यानामक चूर्ण जा प्रातःकाल भक्षणकरै तो इसके शीघ्र विरेचन होताहै और यह परमशुद्धि करनेवालाहै ७८॥७९॥८०॥

अभयामरिचंशुण्ठीविडंगामलकानिच ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलंत्वक्पत्रंमुस्तमेवच ॥ ८१ ॥

एतानिसमभागानिदन्तीचत्रिगुणाभवेत् ।

त्रिवृताष्टगुणाज्ञेयापद्मगुणाचसिताभवेत् ॥ ८२ ॥

मधुनामोदकान्कृत्वाकर्पमात्रान्प्रमाणतः ।

एकैकंभक्षयेत्प्रातःशीतंचानुपिवेज्जलम् ॥ ८३ ॥

अर्थ—हरड कालीमिरच सोंठ वायविडंग आमले पीपल पीपलामूल तज पत्रज मोथा यह सब बराबर भागले और

दन्तीमूल तीनभाग निसोत आठभाग मिश्रीं छःभाग इनके
शहदद्वारा एकएक तोलेके मोदक बनावे प्रातःकाल एकएक
भक्षणकरे और ऊपरसे ठंडा पानी पिये ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥

तावद्विरिच्यतेजंतुर्यावदुष्णंनसेवते ।

पानाहारविहारेषुभवेन्निर्यन्त्रितःसदा ॥ ८४ ॥

विषमज्वरमंदाग्निपांडुकासभगंदरान् ।

विदाहप्लीहमेहांश्चयक्ष्माणंनयनामयान् ॥ ८५ ॥

वातरोगांस्तथाध्मानंमूत्रकृच्छ्राणिचाश्मरीम् ।

पृष्ठपार्श्वोरुजघनंजानूदररुजंजयेत् ॥ ८६ ॥

सततंशीततादोषंपलितानिप्रणाशयेत् ।

अभयामोदकाद्येतेरसायनमनुत्तमम् ॥ ८७ ॥

अर्थ-तबतक विरचन होता रहेगा जबतक उष्ण जलका
पान न करे, पान आहार और विहारमें सदा नियन्त्रित रहे
विषमज्वर मन्दाग्नि पाण्डु कास भगन्दर विदाही प्लीहा प्रमेह
यक्ष्मारोग नेत्ररोग वातरोग आफरा मूत्रकृच्छ्र पथरी पृष्ठपार्श्व
ऊरु जंघा जानु उदररोग निरन्तर शीतता पलित इनको यह
अभयामोदक दूर करतेहैं यह उत्तम रसायन है ॥ ८४-८७ ॥

शंभोर्वीजंसटकंवलिमरिचयुतंशृंगवेरंचतुल्यं

योज्यंनैकुंभवीजंसमशिखिसहितंमर्दितंयाममेकम् ।

भुक्तंगुंजाद्विमात्रंशिशिरजलयुतंत्यक्ततत्त्वमुच्चै-

रिच्छामेदीरसोयंप्रवलमलहरःसर्वरोगैकहर्त्ता ॥ ८८ ॥

अर्थ-शुद्धमारा सुहागा गंधक काली मिरच यह सब
बराबरले और सोंठभी बराबर भागले तथा जमालगोटेके
बीज और चित्रक यह इनकी बराबर लेकर एक पहरतक खर
ल करे, यह एक रत्नी शीतल जलके साथ सेवन करे जयतक

उष्ण जलका सेवन न करे तबतक विरेचन होगा। यह इच्छा भेदीरस प्रबल मलका हरनेवाला तथा सब रोगोंका हरनेवाला है ॥ ८८ ॥

जैपालेनसमैःसूतव्योषटंकणगंधकैः ।

नाराचःस्याद्रसोमाषमात्रःसर्पिःसितायुतम् ॥ ८९ ॥

हन्तिसग्रहमानाहमामशूलंनवज्वरम् ।

वेलाज्वरंविरेकेणशीतलांबुनिपेवणात् ॥ ९० ॥

अर्थ-शोधे जमालगोटिकी बराबर पाराले और सोंठ मिरच पीपल सुहागा गन्धक यह सब बराबर लेकर खरल करे यह नाराचरस है, एक मासा घृत और मिश्रीके साथ सेवन करे तो संग्रहणी आनाह शूल नवीन ज्वरको दूर करता है। वेलाज्वरमें विरेचनके शीतल जलसे सेवन करे ॥ ८९ ॥ ९० ॥

अथ परिभाषा ।

नमानेनविनायुक्तिर्द्रव्याणांजायतेकचित् ।

अतःप्रयोगकार्यार्थमानमात्रोच्यतेमया ॥ ९१ ॥

मानंचद्विविधंप्रोक्तंकालिंगमागधंतथा ।

कालिंगान्मागधंश्रेष्ठमितिमानविदोविदुः ॥ ९२ ॥

अर्थ-परिमाणके विना औषधियोंकी युक्ति कहीं नहीं होती इस कारण औषधि बनानेके लिये तोल आदिकी विधि वर्णन करते हैं। एक कालिंग और एक मागध देशके भेदसे दो प्रकारकी तोल है। कालिंगसे मागध श्रेष्ठ है ऐसा मान जानेवाले कहते हैं ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

त्रसरेणुर्बुधैःप्रोक्तस्त्रिंशतापरमाणुभिः ।

त्रसरेणोस्तपर्यायेनात्रावंशीनिगद्यते ॥ ९३ ॥

जालान्तरगतैःसूर्यकरैर्वंशीविलोक्यते ।

षड्वंशीभिर्मरीचिःस्यात्ताभिःषड्भिश्चराजिका ९४

तिसृभीराजिकाभिश्चसर्पपःप्रोच्यतेबुधैः ।

यवोऽष्टसर्पपैःप्रोक्तोगुंजास्यात्तच्चतुष्टयम् ॥ ९५ ॥

षड्भिश्चगुंजिकाभिःस्यान्मापकोहेमधान्यकौ ।

मापैश्चतुर्भिःशाणःस्याद्भरणोनिष्कइत्यपि ॥ ९६ ॥

अर्थ-तीस परिमाणका एक त्रसरेण होताहै इसी त्रसरेणका पर्याय वंशी कहते हैं, झरोखोंमें सूर्यकी किरण पड़नेसे जो बड़े बारीक कण धूरिके दीखते हैं वह वंशी कहाते हैं. छः वंशीकी एक मरीची (जो रेतली जमीनमें धूरिके बारीक कण सूर्यकी किरणोंसे चमकते हैं) छः मरीचिकी राई और तीन राईकी एक सरसों होती है, आठ सरसोंका एक यव चार जौकी एक चोंटली (रत्ती) छःरत्तीका एक मासा उसको हेम और धान्यक कहते हैं, चार मासेका शाण उसको धरण और निष्क कहते हैं ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

टंकःसप्तवकथितस्तद्वयंकोलउच्यते ।

क्षुद्रभोवटकश्चैवद्रक्षणःसनिगद्यते ॥ ९७ ॥

कोलद्वयंचकर्पःस्यात्सप्तोक्तःपाणिमानिका ।

अक्षंपिचुःपाणितलंकिंचित्पाणिश्चतिन्दुकम् ॥ ९८ ॥

विडालपदकंचैवतथापोडशिकामता ।

करमध्येहंसपदंसुवर्णकवलग्रहः ॥ ९९ ॥

उदुंबरंचपर्यायैःकर्पण्वनिगद्यते ।

स्यात्कर्पाभ्यामर्धपलंशक्तिरष्टमिकामता ॥ १०० ॥

शुक्तिभ्यांचपलंज्ञेयंमुष्टिराम्रंचतुर्थिकाम् ॥

प्रकुंचःपोडशीविल्वंपलमेवप्रकीर्त्यते ॥ १ ॥

पलाभ्यांप्रसृतिर्ज्ञेयाप्रसृतंचनिगद्यते ।

प्रसृतिभ्यामंजलिःस्यात्कुडवोर्द्धशरावकम् ॥ २ ॥

अर्थ—उसीको टंकभी कहते हैं. दो टंकका एक कोल होता है इसको क्षुद्रभ वटक और द्रक्ष्णभी कहते हैं (बैरकी बराबर होनेसे इस तोलकी कोल संज्ञा रखी है) दो कोलका एक कर्ष होता है उसको पाणिमानिका अक्ष पित्तु पाणितल किंचित्पाणि तिन्दुक विडालपदक पोडशिका करमध्य हंस-पदक सुवर्ण कवलग्रह उदुम्बर यह सब कर्षके पर्याय हैं, कर्षका एक अर्द्धपल उसीको शुक्ति और अष्टमिका कहते हैं दो शुक्तिका एकपल उसीको मुष्टि आम्र और चतुर्थिका प्रकुंच पोडशी और विल्व (बेलका फल) यह पलके पर्याय हैं दो पलकी एक प्रसृति (फैली हुई उंगलियोंवाली) हथेली और प्रसृत होती है दो प्रसृतिकी एक अंजली और उसीको कुडव(पावसेर) और अर्धशराव कहते हैं ॥९७—१०२॥

अष्टमानंचसंज्ञेयंकुडवाभ्यांचमानिका ।

शरावोष्टपलंतद्रज्ज्ञेयमत्रविचक्षणैः ॥ ३ ॥

शरावाभ्यांभवेत्प्रस्थश्चतुःप्रस्थैस्तथाढकम् ।

भाजनंकांसपात्रंचचतुःपष्टिपलंचतत् ॥ ४ ॥

चतुर्भिराढकैर्द्रोणःकलशोनल्वणोन्मनौ ।

उन्मानश्चघटोराशिर्द्रोणपर्यायसंज्ञकः ॥ ५ ॥

द्रोणाभ्यांशूर्पकुंभौचचतुःपष्टिशरावकाः ।

शूर्पाभ्यांचभवेद्दोणीवाहोगोणीचसास्मृता ॥ ६ ॥

अर्थ-और अष्टमानभी कहते हैं. दो कुडवकी एक मानिका होती है उसको शराव और अष्टपलभी कहते हैं एक शरावके १२८ टंक होते हैं दो शरावका १ प्रस्थ (सेर) होता है चार प्रस्थका एक आठक होता है उसको भाजन कांसपात्रभी कहते हैं, यह ६४ पलका होता है चार आठकका एक द्रोण होता है उसको कलश नल्वण उन्मान घट (घडा) और राशिभी कहते हैं दो द्रोणका शूर्प होता है उसको कुंभ कहते हैं शूर्पके ६४ शराव होते हैं दो शूर्पकी द्रोणी होती है उसको वाह और गोणीभी कहते हैं ॥ ३ ॥
॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

खारीपरिमाणम् ।

द्रोणीचतुष्टयंखारीकथितासूक्ष्मबुद्धिभिः ।

चतुःसहस्रपलिकापणवत्यधिकाचसा ॥ ७ ॥

अर्थ-चार द्रोणीकी एक खारी होती है उसके ४०९६ पल होते हैं ॥ ७ ॥

भारतुलापरिमाणम् ।

पलानांद्विसहस्रंचभारएकःप्रकीर्तितः ।

तुलापलशतंज्ञेयासर्वत्रैवैपनिश्चयः ॥ ८ ॥

मापटंकाक्षविल्वानिकुडवःप्रस्थमाठकम् ।

राशिगोणीखारिकेतियथोत्तरचतुर्गुणाः ॥ ९ ॥

अर्थ-२००० पलका एक भार होता है १०० पलकी एक तुला यह केवल मगध देशमें नहीं किन्तु सब देशमें इसी तोलका निश्चय जानना मासेसे लेकर खारी पर्यन्त दूसरी तोल चौगुनी जाननी जैसे चार मासेका १ शाण्ड शाणका एक कर्ष चार कर्षका एक विल्व चार विल्वकी एक अंजली चार अंजलीका एक प्रस्थ चार प्रस्थका एक आठक चार आठककी एक राशि चार राशिकी एक गोणी चार गोणीकी एक खारी इसप्रकार एकसे दूसरी चौगुनी जानै ॥ ९ ॥

कलिंगपरिभाषाकेतोल ।

यवोद्वादशभिर्गौरसर्पपैः प्रोच्यते बुधैः ।

यवद्वयेन गुञ्जा स्यात्त्रिगुंजो बल्ल उच्यते ॥ ११० ॥

मापो गुंजाभिरष्टाभिः सप्तभिर्वा भवेत्कचित् ।

स्याच्चतुर्मापकैः शाणः सनिष्कपटंक एव च ॥ ११ ॥

गद्याणो मापकैः पट्टभिः कर्पः स्याद्दशमापकः ।

चतुष्कर्पैः पलं प्रोक्तं दशशाणमितं बुधैः ।

चतुष्पलैश्च कुडवं प्रस्थाद्याः पूर्ववन्मताः ॥ १२ ॥

अर्थ—चारह सफेद सरसोंका एक यव दो यवकी एक रत्ती (गुंजा) तीन रत्तीका एक बल्ल (कहीं दो रत्तीका होता है) आठ रत्तीका १ मासा (कहीं सात रत्तीका भी होता है) चार मासेका १ शाण उसको निष्क और टंकभी कहते हैं, छमासेका एक गद्याणक दश मासेका एक कर्प होता है चार कर्पका एक पल उस पलके दश शाण होते हैं चार पलका एक कुडव होता है और प्रस्थादिकी तोल मागधपरिभाषाके समान जाननी ११०-११२॥

अजीर्णलक्षणम् ।

अजीर्णप्रभवारोगास्तदजीर्णचतुर्विधम् ।

आमं विदग्धं विष्टब्धं रसाजीर्णं चतुर्थकम् ॥ १३ ॥

अर्थ—मनुष्योंको अजीर्ण होनेसे रोग उत्पन्न होते हैं यह चार प्रकारका है आम विदग्ध विष्टब्ध और रसाजीर्ण १३

आमे चोष्णोदकं पेयं दग्धे चोदरस्वेदनम् ।

विष्टब्धे रेचनं चैव शयनं रसशेषके ॥ १४ ॥

अर्थ—आमाजीर्णमें तत्ता जल पिये विदग्धाजीर्णमें स्वेदन रेचनं दस्त और रसशेष अजीर्णमें शयन करे १४ ॥

घृताजीर्णेदिनेपंचतैलेद्वादशकस्तथा ।

तिथिसंख्यापयस्युक्तादधिजोवशतिस्तथा ॥ १५

अर्थ-घीका अजीर्ण पांचदिनमें पचताहै तेलका बारह दि-
नमें दूधका पन्द्रह दिनमें और दहीका बीस दिनमें पकताहै॥

पिष्टान्नेसलिलंप्रियालुफलजेपथ्याहितामांसजे

खण्डक्षीरभवेतुतक्रमुचितंकोष्णाम्बुकालिंगजे ॥

मास्येचूतफलंत्वजीर्णशमनंमध्वम्बुपानात्यये

तैलेपुष्करजेकटुप्रशमनंशेषांस्तुबुद्ध्याजयेत् १६ ॥

अर्थ-रोटी पूरीके अजीर्णमें जलका पीना हित है खिर-
नीके अजीर्णमें हरड खाय मांसके अजीर्णमें खांड दूधके
अजीर्णमें छाछ तरबूजके अजीर्णमें तत्ताजल मछलीके
अजीर्णमें आम चूसना, मद्यके अजीर्णमें शहद मिलाजल
हमलगट्टेके खानेमें सरसोंका तेल पिये शेष अजीर्णको वैद्य
अपनी बुद्धिसे दूर करे ॥ १६ ॥

उष्णोदकंघृताजीर्णेतैलाजीर्णंचकांजिकम् ॥

गोधूमेकर्कटीश्रेष्ठाकदल्याम्रफलेघृतम् ॥ १७ ॥

अर्थ-घीके अजीर्णमें गरम जल तेलके अजीर्णमें कांजी
गेहूंके अजीर्णमें ककड़ी कदलीके आम्रफलके अजीर्णमें घृतखाय
दाडिमामलकतालतिन्दुकीबीजपूरलवलीफलानिच ॥
बाकुलफलमतीवपाचयत्पाकमेतिवकुलंस्वमूलतः १८ ॥

अर्थ-अनार आंबला तालफल तिन्दुकी धिजौरा लवली
इनके अजीर्णमें मौलसिरिके फल खाने चाहिये मौलसि-
रिके अजीर्णमें मौलसिरिके मूल खानेसे पाचन होताहै १८
आम्रातकोदुम्बरिपिप्पलीनांफलानिचप्लक्षवटादिकानां
विश्वोषधंपर्युपितोदकेनसौवर्चलेताम्रफलस्यपाकम् १९.

अर्थ-आम्रातक, गूलर, पीपल, पाकर, बड़ इनके फल खानेसे अजीर्णमें सोंठको पीसकर पीना योग्य है आमके अजीर्णमें सेंधानोंन खाय ॥ १९ ॥

गोधूममापौहरिमंथमुद्रौयवासतीनांकितवोनिहन्ति ॥
यन्मातुलुंगीफलमेतिपाकंक्षणेनसोयलवणानुभावः २०

अर्थ-गेहूं उड़द चना मूंग जो मटर इनका अजीर्ण हो तो धतूरेके रससे और विजोरेका रस सेंधेनोंनसे दूर होताहै ॥ २० ॥

नागरंहरतिविल्वजांवंपाचयेन्मधुरिकाकपित्थजम् ।
सर्वथैवसकलामनिहंत्रीप्रीतयेग्निरननीगदितासा २१ ॥

अर्थ-वेलफल तथा जामुनके अजीर्णको सोंठ पचाती है कैथके अजीर्णको सोंफ पचाती है यह विशेषकर सब औषधियोंको पचाती है व्याधिनाशक और अग्निवद्धेकहै ॥ २१ ॥

पिशितपनसयोःस्यादाम्रबीजेनपाकः

कृशरमहिपयोपित्क्षीरयोः संधवेन ॥

चिपटपरिणतिःस्यात्पिप्पलीदीप्यकाभ्या-

मपहरतितुषाम्बुद्वेदलानामजीर्णम् ॥ २२ ॥

अर्थ-मांस और कटहरका अजीर्ण आमकी गुठलीसे नष्ट होताहै उड़द तिल चावलके मिलानेसे खिचड़ी होतीहै भेंसका दूध इनका परिपाक सेंधेनमकसे होताहै चिरवाका अजीर्ण पीपल और अजवायनसे नष्ट होताहै और दोदलका अन्न मूंग उड़द आदिका अजीर्ण कांजीसे नष्ट होताहै ॥ २२ ॥

कर्पूरपूगीफलनागवल्लीकाश्मीरजातीफलजातिकोपे ॥
कस्तूरिकाशेलुकनालिकेरफलंपचत्याशुसमुद्रफेनः २३

अर्थ-कर्पूर पूगीफल (सुपारी) ताम्बूल केशर जायफल जावित्री कस्तूरी बहेडा नारियल इनका अजीर्ण समुद्र फेनसे दूर होता है ॥ २३ ॥

श्यामाकनीवारकुलत्थपट्टि-

निष्पावकंगुर्दधिमण्डकस्तु ॥

चिंचाकुलत्थौतिलतैलयोगो

जटाव्दनादस्यनिहन्त्यथाभ्रम् ॥ २४ ॥

अर्थ-सनाखिया तिन्ती कुलथी सांठीचावल वनमृंग कंगनी इनका अजीर्ण दहीके मट्टेसे दूर होता है इमली कुलथीका अजीर्ण तिलके तेलसे आमकां अजीर्ण चोंलाई की जड़से नष्ट होता है ॥ २४ ॥

कशेरुशृंगाटमृणालमृद्वीखर्जूरखंडाह्यपिनागरेण ॥

पलाशभस्मांबुतथारजोवारसोनिहन्याद्रसमिक्षुजातम् ॥

अर्थ-कसेरू सिंघाडे कमलका कन्द दाख खजूर खांड इनका अजीर्ण सोंठसे नष्ट होता है गन्नेका अजीर्ण ढाककी राखको पानीमें मिलाकर पीनेसे नष्ट होता है ॥ २५ ॥

किमत्रचित्रंबहुमांसमत्स्यभोजीसुखीस्यात्परिपीतसूक्तः
इत्यद्भुतंकेवलवह्निपक्वमांसेनमत्स्यःपरिपाकमेति २६ ॥

अर्थ-बहुतमांस और मच्छी खानेवाला पुरुष मद्यपान करनेसे सुखी रहता है यह आश्चर्य नहीं है परन्तु केवल आंचसे भुनेमांससे मच्छीका अजीर्ण पचता है यह बड़ा आश्चर्य है ॥ २६ ॥

शाकानिसर्वाण्यपियान्तिपाकंक्षारेणसद्यस्तिलनालजेन
चंचूकसिद्धार्थकवास्तुकानांगायत्रिसारकथितेनपाकः ॥

अर्थ-सब सागमात्रका अजीर्ण तिलके खारसे नाश हो

त्ताहै और चुका सरसों बथुआ इनके खानेसे प्रगट अजीर्ण
खैरसारके कोठेसे परिपाक होय ॥ २७ ॥

पटोलवंशांकुरकारवेल्लीफलान्यलावूनिबहूनिजग्ध्वा ॥
क्षारोदकं ब्रह्मतरोर्निपीयनोक्तः पुनवाच्छतितावदेव ॥ २८ ॥

अर्थ-परवल वांसकी कौंपल मीठी तूंची इनके अजीर्णमें
पालाश ढाकके खारको जलमें पीनेसे तत्काल परिपाक हो
और उसी समय उतनेही भोजन करनेकी फिर इच्छा
होती है ॥ २८ ॥

विपच्यतेसूरणकोगुडेनतथालुकंतंदुलतोयपानात् ।
जम्बीरनीरेणनिशारसेनमुस्तेनचूर्णपरिपाकमेति ॥ २९ ॥

अर्थ-जिमीकंदका अजीर्ण गुडसे आलूका चावलोंके धोवनसे
हलदीका जंभीरीके रससे लहसनका मोथेके चूर्णसे पचे ॥ २९ ॥
लवणंतंदुलपेयात्सर्पिर्जवीरवारिणाचपचेत् ॥

मरिचादपितत्पाकंशीघ्रंयात्येवकांजिकात्तैलम् ॥ ३० ॥

अर्थ-लवण तंदुलके पीनेसे घृतका अजीर्ण जम्बीरीके
जलसे और कालीमिर्चसेभी इसका पाक होजाताहै कां-
जीसे तेल पच जाता है ॥ ३० ॥

रसान्नंजीर्यतिव्योपखंडं नागरभक्षणात् ।

फलानिसकलान्याशुयवक्षारात्पचन्तिहि ॥

मद्यंरसान्नवासाचहरिमंथेनजीर्यति ॥ ३१ ॥

अर्थ-रसान्न त्रिकुट्टेसे, खांडका अजीर्ण सोंठ भक्षणसे
तथा सब प्रकारके फलोंका अजीर्ण जवाखारसे नष्ट होता
है मद्यरसान्नका अजीर्ण अड़ूसा और हारिमन्थ चनेसे दूर
होता है ॥ ३१ ॥

उष्णेनशीतंशिशिरेणचोष्ण-

मम्लेनचक्षारग

स्नेहेनतीक्ष्णं वमनातियोगे
सिताहितास्यादितिकाश्यपोक्तिः ॥
स्निग्धेषु रूक्षं च तदप्यनेन
स्निग्धं च रूक्षेण च पाकमेति ॥ ३२ ॥

अर्थ—सरदीके रोग गरम औषधीसे नष्ट होते हैं और गरमीके शीतल औषधीसे नष्ट होते हैं सब खार खट्टी वस्तुसे गुणकारक होती है तीखी मिर्च आदि वस्तु घी तेल आदिसे गुणकारक होय और वमन करता वस्तुका अवगुण मिश्रीसे शान्त होता है. स्निग्ध पदार्थोंके अजीर्णमें रूखे और रूखोंके अजीर्णमें स्निग्ध प्रयोगकरे ॥ ३२ ॥

तप्तं तप्तं हेमवातारमग्नौ तोये क्षिप्तं क्षिप्तं मभस्मुतच्च ।
पीत्वा जीर्णतोयपानं निहन्त्यात्
चित्राक्षौद्रं भद्रमुस्तं विशेषात् ॥ ३३ ॥

अर्थ—सुवर्ण अथवा चांदीको बारंवार तपाकर जलमें बुझावे उस जलके पीनेसे बहुत दिनका अजीर्ण जाय अथवा चीता शहद और भद्रमोथा सेवनकरे तो अजीर्ण जाय ३३ ताम्बूलजग्घास्थितचूर्णकेन संदह्यते यस्य मुखं नरस्य । तैलेन वा केवलकांजिकेन सुखाय गंडूपमसौ विदध्यात् ३४

अर्थ—जिस मनुष्यका मुख पान खातेही जलने लगे अथवा चूने और कत्थेसे फटजाय वह तेल अथवा सिरकेसे कुल्ला करे तो आराम हो ॥ ३४ ॥

इत्यजीर्णकुलकंडनोगणोनूनमाहमुनिरत्रिसंभवः ।
सम्यगेन मधिगम्य योजयेन्न क्वचित्स्खलति जातु तत्त्ववित्

इति श्रीगोस्वामिशिवानंदभट्टाविरचिते वैद्यरत्ने

समाप्तोऽयं सप्तमः प्रकाशः ॥ ७ ॥

अर्थ—इस प्रकार यह अजीर्णकुलका नाशक गण वर्णन किया यह आत्रेयने कहा है जो इसको अच्छी प्रकार जान कर प्रयोग करता है वह तत्त्वावित्त किसप्रकार धोखा नहीं खा सकता है और रोगोंको जितता है ॥ ३५ ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानन्दभिरचिते वैद्यरत्ने भाषाटीकाया सप्तम प्रकाश ॥ ७ ॥

दोहा ।

संवद्गुणशरअंकविधु, ज्येष्ठशुक्लगुरुवार ।
 तिथिअष्टमीपुनीतअति, पूज्योतिलकविचार ॥ १ ॥
 धन्वन्तरिआदिकमहा, सिद्धनकोशिरनाथ ।
 वैद्यरत्नटीकासकल, भापालिख्योवनाथ ॥ २ ॥
 सरितरामगंगानिकट, नगरमुरादावाद ।
 तहारहतहरिभजनरत, द्विजज्वालापरसाद ॥ ३ ॥
 सेठशिरोमणिजगविदित, खेमराजगुणखान ।
 तिनकेद्वितटीकाकियो, सारभूतसुखदान ॥ ४ ॥
 नारायणकोसुमारिये, भजियेसीताराम ।
 दूरकरहिंभवरोगजो, सिद्धकरहिंसवकाम ॥ ५ ॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रंथः ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीविकटेश्वर” स्टीम् प्रेस—बम्बई